मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, बम्बई.

भूमिका ।

निगम जो बृहदारण्यक आदि उपनिषद् भागहैं और शास्त्र जो वेदांत योग दर्शनादिक हैं तथा पुराण जो महाभारत भागवत आदिक हैं तिनमें जो व्यासादिक मुनियोंने गुह्य रहस्य कथन किया है तहांसे जैसे भ्रमर पुष्पोंसे सुगंधका ग्रहण करते हैं तैसेही मैंने सार अर्थको चुनकर निजमतिके अनुसार कवित्त, भजन इत्यादिकमें कथन करके प्रगट किया है जो शेर, मिस्रा, तुरट, ठेक, प्राचीन कवियोंकी वाणीसे लेकर लिखे हैं वो चोरीकी नियतसे नहीं बल्कि अपनी जड कवितामें जान डाली है ।

परमात्मदेव कृष्णचन्द्रके मुखारविन्दसे उदय हुई श्रीभगवद्गीता साक्षात् अध्यात्मविद्याकी मूर्ति है। दुर्गमसंसाररूप वनमें भूले हुओंको सीधा सच्चा पंथ तथा मोहरूप कठिन जालविषे कसे हुओं और तृष्णारूप प्रबलपाशकरके बंधे हुओंके बंधनका छेदन करनेहारा दृढ शस्त्र वही ब्रह्मवल्ली है। विद्याओंमें शिरोमणि गोप्य पदार्थोंमें शिरोमणि वही अद्भुत गुटिका है जो हरिजनोंको उस उत्कृष्ट स्थानविषे पहुँचा देता है जहां पदार्थोंका त्याग हो नहीं किंतु वासना निर्बीज होवे है। जहां विश्रामको प्राप्त हुए योगी मनवाणीशरीरसे कार्यकर्मोंको यथायोग्य करते हुए तत्त्वसे चलायमान नहीं होते। सरस्वतीभी वही है हृदयकमलमें विराजमान हुई जो समस्त अविद्याको हर लेवे है ।

ऐसी मोक्षगेहिनी तथा भयनाशिनी देववाणीका आश्रय करना हम सर्वका परमधर्म है। महान् गूढ और अलौकिक होनेसे उसका भाषा छंद प्रबंध विषय लाना यातें बडा कठिन है तातें हमने केवल सिद्धांत मूलपर इस ग्रंथके तृतीय भागमें निज मतिके अनुसार प्रश्नोत्तरकी रीतिसे विचार किया है ।

यद्यपि बडे २ विद्वान् महात्माओंकरके उसपर अनेक दिव्य तिलक हुए हैं हमारे प्रयत्नकी कोई आवश्यकता नहीं तथापि यह हमारा अल्प पुरुषार्थ है उन पुरुषोंके अर्थ निष्फलभी नहीं जो अक्षय सुखकी कामनावाले हैं परंतु किसी न किसी हेतु करके उसको आद्योपांत विचारनेका यथायोग्य उद्योग नहीं कर सकते ।

हरिः ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।

विद्वज्जन सज्जन कृपाभिलाषी–

खेमराज श्रीकृष्णदास.

प्रार्थना ।

ॐ नमो नारायणाय ।

हे सच्चिदानन्दपरमात्मा,हे जगदीश्वरजगदात्म,हे अंतर्यामी मायापते,हे विश्वम्भर कल्याणमूर्ते ! आपकी महिमा अनन्तहै। शेष गणेशको गम्य नहीं, मेरी क्या सामर्थ्य है ? हां इतना जानता हूं जो कुछ यह सर्व है सर्व आपका विलास है,देशकाल शब्द अर्थको चैतन्य करनेहारा आपहीका प्रकाश है, आपके गुणानुवाद और मेरा लौकिक जीवन दोनों आश्चर्यरूपहैं उनका पार नहीं और इनका एतबार नहीं,हे गोविंद! मैं जैसातैसा हूँ सब प्रकार आपका हूँ, वो बावले हैं जो अन्यथा अभिमान करतेहैं, नाम रूपपर मरते हैं, निर्भयपदको छोड भूलकर डरते हैं ।

हरिः ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।

विज्ञापना ।

हम अपने प्यारे भारतवर्षी भ्रातृगणोंको बहुत बहुत धन्यवाद देते हैं कि हमारे रचेहुए आधुनिक ग्रंथविषय उनकी विशेष रुचि हो रही है, उनकी अद्भुत प्रेम प्रीतिको देख देखकर अपने दिलमेंभी उत्साह तो बहुत कुछ होता रहा, परंतु सेवा इसमें अधिक और न हो सकी । ग्रंथमें जहां कहीं अयोग्य शब्द तथा पिंगलकी रीतिसे बल था उनको निकाल दिया । जो लेख अशुद्ध अथवा आशय कहीं बिगडा था वो संभाल दिया । तृतीय भाग जो अब और निवेदन किया जाता है वह कुछ तो पद्य और कुछ वार्तिक है । पदार्थ जैसा तैसा अवलोकनसे आपही प्रगट हो जायगा ।

विद्वज्जन सज्जन कृपाभिलाषी-

निर्भयराम-

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

निर्भयविलास।

अर्थात्

गीतगोविन्द प्रथम भाग।

हरिः ॐ तत्सत्।

॥ पद ॥

गणपति राख लो प्रण मेरा।
थोडा जीवन भूल घनेरे, कैसे होय निबेरा ॥
गणपति राख लो प्रण मेरा।
हटधर्मी मन मानत नाहीं, समझाया सौ बेरा ॥
गणपति राख लो प्रण मेरा।
महिमा अमित मोरि मति थोरी, प्रभू भरोसा तेरा ॥
गणपति राख लो प्रण मोरा।
मंगल हो निर्भय बल बाढे, दो वरदान सबेरा ॥
गणपति राख लो प्रण मेरा।

॥ कवित्त ॥

पूजनमें आदि औ स्वरूपसों अनादि हो बलमें अगाधबल प्रत्यक्ष हो परेशको। भक्तको वरदान दो सन्तको कल्याण दो पौरुष और मान दो शेषको सुरेशको॥ संशयको दूर करो वि-द्या भरपूर करो ज्ञानमें चूर करो हरो रागद्वेषको। विघ्नको नाश करो अंतरमें वास करो निर्भय प्रकाश करो लाडलो महेशको॥

॥ पद ॥

राखो पत सरस्वती भवानी ॥
बुद्धीबल अनुभवबल नाहीं, अगम अपार बखानी ॥
राखो पत सरस्वती भवानी ॥
चुप होरहूं रहा नहीं जाता, कथन योग्य नहीं बानी ॥
राखो पति सरस्वती भवानी ॥
निकसत नाहीं चुभी कसकत है, गहरी फांस फँसानी ॥
राखो पत सरस्वती भवानी ॥
निर्भय ध्यान टरै नहिं टारे, दर्शन दो महरानी ॥
राखो पत सरस्वती भवानी ॥

॥ कवित्त ॥

रूपमें लुभानी हो विद्यामें सयानी हो त्रिभुवनसमानी अखिल विश्व अभिमानी हो।सर्गमें जानी हो प्रलयमें छिपानीहो बृद्धी हो न हानी हो स्वयं प्रमानी हो ॥ अनुभवकी खानी हो सुखकी निशानी हो मनसाकी दानी ज्योति जगमग जगानी हो। हरि हर विधि मानी हो वेदन बखानी हो शुद्ध करो बानी मेरी सरस्वती भवानी हो ॥

॥ पद ॥

कृपासिंधु गुरुदेव दया करो शरण तुम्हारी आयो मैं॥ आगम

निगम सभी पढ हारो पद पदार्थ बहु भांति विचारो मैं ॥ संशय टारो नाथ उभारो अजहूं सार पायो मैं ॥ कृपासिन्धु गुरुदेवदया करो शरण तुम्हारी आयो मैं ॥ निर्भयराम झूंठ मत मानो रूप कल्पित ही जानो मैं ॥ कल्पित काहे कौन ठिकानो तासों भेंट न लायोमैं ॥ कृपासिन्धुगुरुदेवदयाकरो शरणतुम्हारीआयो मैं ॥

॥ कवित्त ॥

आपहूको ब्रह्म और विश्वहूको ब्रह्मलख्यो सच्चित् आनन्दघन ब्रह्मको विचारके । द्वैतभ्रम ज्ञान नशाय दियो मूलतें मिथ्या नामरूपकी कल्पना बिडारके ॥ वाद और विवाद जारो मान अपमान टारो काम क्रोध लोभ मोह भागे जासों हारके । साक्षी हैकैसेनाहिंहियेसेप्रणामकरूं निर्भयगुरुदेवकोदृगनसेनिहारके ॥

॥ कवित्त ॥

बूडत भवसागरतें काढ लियो बांह थांभ दीनबन्धु दीनानाथ धीरज बँधायो है । संशय बिसरानो पद ज्योंका त्यों जानो चहूओर दरसानो क्या अर्थ समझायोहै ॥ निश्चयविश्वास दियो जीवते ब्रह्म कियो बन्ध और मोक्षका झगडा चुकायोहै । अहो गुरुदेव जबत निर्भय स्वरूपते ज्ञानके पियालेमें हरिरस पिलायो है ॥

॥ पद ॥

मोहिं नीको लागो पावन ज्ञान तुम्हारो ॥

अगम अपार भवसागर थाह न आवे हाथ, छोरहू न सूझे महा अँधियारी घोर रात, निरखि तरंग चहुँ ओर जीया घबरात, नैया ना खिवैया धीरहूने छोड दियो साथ, निर्भय बूडततें उभारो ॥ मोहिं नीको लागो पावन ज्ञान तुम्हारो ॥

॥ कवित्त ॥

ईशनके ईश हो देवनके देव हो कारणके कारण और पतिनके

पती हो। रूप है न रेख है नाम है न धाम है सूझता न काम है स्वयं परमगती हो॥ अचल हो अखंड हो सच्चित्आनन्द हो साक्षी हो ब्रह्म हो अचिन्त्य अमितमती हो। नेरे हो न दूर हो सबमें भरपूर हो रूपसों भोग करों स्वरूपसों जती हो॥

॥ कवित्त ॥

आदि हो न अन्त हो अगम अपार अनन्त हो पावनअसंग हो अलख अप्रमाण हो। एक हो प्रकाश हो पूर्ण चिदाकाश हो निर्गुण हो निरंजन हो ज्ञान विज्ञान हो॥ अक्षर निराकार हो अव्यय निर्विकार हो निर्मल निराधार हो पुरुष पुराण हो। नित्य हो अजर हो अविनाशी हो अमर हो दुर्गम हो अनादि हो वाच्यनिर्वाण हो॥सूक्ष्म स्थूल हो मूलफलफूलहो आत्मा हो देह इंद्रियां मनप्राण हो। विश्व हो कर्तार हो शब्दॐकारहो वेद हो अर्थ हो ऐश्वर्य हो भगवान हो॥रूपकी खानि हो सर्वगुणनिधान हो अणुसे अणू हो महानसे महान हो। देश हो काल हो सुन्दर विकाल हो शान्त क्षोभवान हो निर्भय बलवान हो॥

॥ पद ॥

गोविन्दा तेरी करुणाके बल जाऊं॥

सेवाते कछु बन नहिं आवे, और हरिदास कहाऊं॥ गोविन्दा तेरी०॥ मानुष तन उत्तमकुल दीनो, तापर नाहिं लजाऊं॥ गोविन्दा तेरी०॥ दीनानाथ मोहिं यह बर दीजो, तेराही गुण गाऊं॥ गोविन्दा तेरी०॥ जीवतही निर्भय सुख होवै, अन्त परमपद पाऊं॥ गोविन्दा तेरी०॥

॥ पद ॥

अहो नाथ विनती सुनो मोरी हाहा करूं कहत कर जोरी॥ अब तो यही ज्ञान विचारा, निशिदिन होवे ध्यान तुम्हारा,

मिटजाये अभिमान हमारा,ऐसी बुद्धि करो प्रभु मोरी ॥ अहो नाथ विनती० ॥ भाव तिहारा अचल अखंडा, अगम अपार सत्‌चित् आनंदा, कैसे जाना जाय गोविंदा, महिमा असित मोरिमतिभोरी ॥ अहो नाथ विनती सुन मोरी०॥ निर्बल परवश निपट भिखारी,अल्पतुच्छ है शक्ति हमारी, तुम्हरी कृपासों लखूं मुरारी, अलख अरूप परम गति तोरी ॥ अहो नाथ विनती सुनमोरी०॥ तुम्हरी गति हो धाम तुम्हारा,निर्भय कछु मांगत नहिं न्यारा, पूर्ण करो यह काज हमारा, अन्तर्जामी नवल किशोरी ॥ अहो नाथ विनती सुन मोरी० ॥

॥ पद ॥

मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ॥
बित्तीभर जमीन नाहीं, वस्त्रमें कोपीन नाहीं ।
महा कंगाल नाहीं, कौडीको सहारो ॥
मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ।
मित्र कलत्र तात मात, दारा सुत भगिनी भ्रात ॥
सबने छोड दियो साथ, कोई ना हमारो ॥
मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ।
बलकर गती नाहीं, विद्याहीन मती नाहीं ॥
होनहार प्रबल योंही, होत है गुजारो ॥
मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ।
धर्म कर्म बनत नाहीं, भक्ति भाव सधत नाहीं ।
निश्चय कछु धरत नाहीं, सोच सोच हारो ॥
मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ।
अक्षरका ज्ञान हो, अर्थका ध्यान हो ।

निर्भय निर्वाण हो, भेद बुद्धि टारो ॥
मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ॥

॥ पद ॥

निश्चय एक राम जान दूसरा न कोई ।
आपी आप बाग बाना, आपी आप बेल हुआ ॥
आप बेल सींचत है, आपी बेल बोई ॥
निश्चय एक राम जान दूसरा न कोई ।
लागत फल फूल पात, खिल खिल कुमलात जात ।
निर्भय राम इच्छासों होनी हो सो होई ॥
निश्चय एक राम जान दूसरा न कोई ॥

॥ पद ॥

साईं तन ढूँढा नाहीं काहेका फकीर ।
जटाजूट करे तिलक लगावे, भस्मी रमावे है शरीर ॥
साईं तन ढूँढा नाहीं काहेका फकीर ।
पढें नमाज और रोजें राखें, हो मुरीद चाहे पीर ॥
साईं तन ढूँढा नाहीं काहेका फकीर ।
निर्भयराम सांचही मानो, कहगये योंही कवीर ॥
साईं तन ढूँढा नाहीं काहेका फकीर ।

॥ पद ॥

करो रे मन वा दिनकी तदवीर ।
भूपण वसन द्रव्य वरवारा, यहीं रहे सब ठाठ गँवारा ।
खाली लाद चले वनजारा, नेक धरे नहिं धीर ॥
करो रे मन वा दिनकी तदवीर ।

सुत वनितादि सकल परिवारा, किसका तू और कौन तिहारा।
जा दिन बिछुरत हंस बिचारा, नैनन भरलाये नीर ॥
करो रे मन वा दिनकी तदबीर ।
इन्द्रिनग्राम स्थल हो जावे, बारम्बार जिया घबरावे ।
कोई नहीं जो प्राण बचावे, जब हो मृतक शरीर ॥
करो रे मन वा दिनकी तदबीर ।
निर्भय राम भूल मत जाना, मोह जाल लोभ है दाना ।
यामें आकर जान फँसाना, यमपुर जात अखीर ॥
करो रे मन वा दिनकी तदबीर ।

॥ पद ॥

गोविंदा न गाया तूने, खाया क्या रे बावरे ॥
भोगोंमें लुभाना रहे, कैसे है सयाना अरे ।
रामरस न खाया तूने, खाया क्या रे बावरे ॥
गोविंदा न गाया० ।
मायामें भुलाना फिरे, बडो है दिवाना भला ।
निर्भय पद न पायो तूने, पाया क्या रे बावरे ॥
गोविंदा न गाया० ।

॥ पद ॥

बतादे तोमें बोलत है सो को है ।
ब्रह्मा हरी महेश भवानी, पण्डित वैद्य ज्योतिषी ज्ञानी ।
योगी यती ऋषी मुनि नाहीं, कौन सृष्टिमें वो है ॥
बतादे तोमें बोलत है सो को है ।
अग्नि पवन जल आकाश माटी, तारागण रवि शशि दिन राती ।
इंद्रिन देह प्राण मन नाहीं, अचरज यही बडो है ॥
बतादे तोमें बोलत है सो को है ।

वैश्य बिरह्मन कायथ क्षत्री, तगा शूद्र विशनोई खत्री ।
सैयद शैख मुगल ईसाई, पठान ना कम्बो है ॥
बतादे तोमें बोलत है सो को है ।
संन्यासी ब्रह्मचारी हाजी, सूफी पादरी मुल्लां काजी ।
शत्रु मित्र सेवक ना स्वामी, खोटा नाहिं खरो है ॥
बतादे तोमें बोलत है सो को है ।
कडवा चपरा खारी सीठा, निमका अलोना खट्टा मीठा ।
लम्बा चौडा ऊँचा नीचा, मोटा नाहिं लटो है ॥
बतादे तोमें बोलत है सो को है ।
रक्त श्वेत नारंजी पीला, काला हरा बैंजनी नीला ।
करों नरम कुरूप रूप नहिं, तातोही ना सीरो है ॥
बतादे तोमें बोलत है सो को है ।
आपही भूला पूछत डोले, आपही मांह आपही बोले ।
रहे अचेत न चत तौलों, निर्भय ज्ञान न हो है ॥
बतादे तोमें बोलत है सो को है ।

॥ पद ॥

अनुभव स्वरूप निज रूप लखा, जिन सोहं शिवोहं रटा रटा ।
अक्षय धन निर्भय मिलजावे, तृष्णा कबहुं निकट न आवे ।
कर सन्तोष बैठ रह घरमें, मत बाहर फिर उठा उठा ॥
अनुभव स्वरूप निज रूप लखा, जिन सोहं शिवोहं रटारटा ।
जीवनमुक्त सुख जो तू चाहे, निर्भय और क्या यत्न बताये ।
ब्रह्मानन्दसे पूरण हो जा, विषय आनन्दको घटाघटा ॥
अनुभव स्वरूप निज रूप लखा, जिन सोहं शिवोहं रटारटा ।
शीतल हृदय शांत चित होई, वृथा कल्पना उठे न कोई ।
निर्भय अन्तर निर्मल करलो, मल जितने हैं छुटाछुटा ॥

अनुभव स्वरूप निज रूप लखा, जिन सोहं शिवोहं रटारटा।
राग और द्वेष नष्ट हो जावे, चहुँ दिश एकहि भाव दिखावे।
निर्भय हो निश्चय यहि राखो, दृष्टि दृश्यसे हटाहटा॥
अनुभव स्वरूप निज रूप लखा, जिन सोहं शिवोहं रटारटा।
नाम रूप गुणतें है न्यारो, सत्‌चित् आनन्द भाव हमारो।
माखन माखन खालो निर्भय, छांड चलो यहीं मठामठा॥
अनुभव स्वरूप निज रूप लखा, जिन सोहं शिवोहं रटारटा।

॥ पद ॥

मनवाँ छोडो साथ हमारा।
ना चहिये तेरा माल खजाना ना नौबत नक्कारा।
ना चहिये तेरी गद्दी तकिया ना तेरा घरबारा॥
मनवां छाडो साथ हमारा।
ना चाहिये तेरी मान बडाई ना तेरा परिवारा।
भ्राता मात पिता ना चहिये ना भगिनी सुत दारा॥
मनवाँ छाडो साथ हमारा।
भवसागरके पार बसत थे सुखसों गहे किनारा।
बांह पकड व्हांसे ले आयो छांड दियो मझधारा॥
मनवाँ छाडो साथ हमारा।
आदि जन्मसे आजितलकलौं कबहूँ वचन न टारा।
मैं नित रहा तुम्हारा होकर तूं नहीं हुआ हमारा॥
मनवाँ छाडो साथ हमारा।
तेरा तो नाहीं कछु बिगडा बना फिरे मतवारा।
राग द्वेषका मिथ्या फाँसा मेरे गले बिच डारा॥
मनवाँ छाडो साथ हमारा।

अपना रंग लाया पर लाया भूला कौल करारा ।
ना तुम्हरी परतीत रही कछु ना तुम्हरी कछु सारा ॥
मनवाँ छाडो साथ हमारा ।
आवागमनमें दुख नहिं माने पूरा ढीठ गँवारा ।
स्वर्ग नर्कको भोग चुका है मूरख लाखन बारा ॥
मनवाँ छाडो साथ हमारा ।
इंद्रिन बस होना नहिं अच्छा बरज बरज मैं हारा ।
जो कुछ पूँजी थी खो बैठा अब नहीं नेक सहारा ॥
मनवाँ छाडो साथ हमारा ।
लोभ मोहकी झोली बांधी घर घर हाथ पसारा ।
गांठमें लाल खोल नहीं जाने मांगत फिरे उधारा ॥
मनवां छाडो साथ हमारा ।
जा प्रपञ्चमें सार नेक नहिं ताको सत्य विचारा ।
सत्य वस्तुको चीन्हा नाहीं वृथा जन्म गुजारा ॥
मनवां छाडो साथ हमारा ।
परमारथ जबलगि नहिं बनि है दुर्लभ है निस्तारा ।
तुझको तो स्वारथसे निशिदिन होत नहीं छुटकारा ॥
मनवां छाडो साथ हमारा ।
जहांलगि नाम रूप गुण निर्भय तहां लगि समझ विकारा ।
आत्मादेव अनुभव स्वरूप है पञ्चकोश तैं न्यारा ॥
मनवां छाडो साथ हमारा ।

॥ पद ॥

यह कैसी यारी कीनी हो सांवरे विहारी ।
घर छोडे बन छोडे डोलूं, मौन बुरा लागत क्या बोलूं ।

प्रेम गांठ लगी कैसे खोलूं,प्रबल मोहिनी डारी ॥
यह कैसी यारी कीनी हो सांवरे विहारी।
खान पानके रस सब त्यागे,भूषण वसन लगें विष पागे।
सूनी सेज निरख डर लागे, विरहअग्निकी मारी ॥
यह कैसी यारी कीनी हो सांवरे विहारी।
नैननसे निश दिन जलवरषे, देखनको जियरा अतितरसे।
ऊधो जाय कहो तुम हरिसे, सुध क्यों न लेत हमारी ॥
यह कैसी यारी कीनी हो सांवरे विहारी।
ज्ञानका रंग ध्यानसे घोलो, अनुभवकी पिचकारी लेलो।
निर्भय श्यामसे होरी खेलो, सन्मुख दे दे तारी ॥
यह कैसी यारी कीनी सांवरे विहारी।

॥ दोहा ॥

तीन अवस्था तीन गुण, पञ्चकोश त्रै देह।
निर्भय इनतें भिन्न तू, घट घट द्रष्टा जेह ॥
बहिरन्तर घन प्राज्ञको,समष्टि व्यष्टि अभिमान।
निर्भय साक्षी भावमें, रञ्चक मात्र न जान ॥
अन्य दृष्टिसों भाव जो, परमारथसे नाहिं।
सो स्वरूप ताको नहीं, निर्भय कहे दृढाय ॥
नाम रूप अज्ञानमें, जिमि असंग आकाश।
जहां देखो निर्लेप है, निर्भय शुद्ध प्रकाश ॥
मायाकी चिंता बुरी, निर्भय कर सन्तोष।
जा मारग चलना नहीं,क्यों गिनता है कोस ॥
श्रुति जाको आतम कहे, जीव कहे तेहि ब्रह्म।
निर्भय सो ब्रह्मात्मा, तुम्ही छाँड दे भ्रम्म ॥

उदासीन नित वर्तना, स्वप्नेहु लाभ न हान ।
स्थिर चित्तको अर्थ है, निर्भय पद निर्वान ॥
ब्रह्मानन्द प्रगटै नहीं, या विधि करत विचार ।
उत्तम अधिकारी नहीं, निर्भय कहै पुकार ॥

॥ सोरठा ॥

ऐसे शांति न होय, मध्यम अधिकारी गिनो ।
करे उपासन सोय, शब्दब्रह्मनिज इष्टकर ॥
अस दृढ लावे ध्यान, ज्यों चकोर चन्दा चितै ।
कर्म करत नहिं हान, धुन अन्तर छूटे नहीं ॥
रहे न कोऊ ताप, रूप अरूप दोउ भाव तव ।
सूझे आपहि आप, भरम नसै निर्भय सकल ॥
याविधि चित न दृढाय, अन्तरमल पहिंचानियो ।
ताको कर्म उपाय, पुनि उपासना ज्ञान है ॥
चित्त शान्त हो जाय, अंतर कछु भासे नहीं ।
त्रिपुटी भरम नसाय, आपहि आप निर्भय रहै ॥

॥ दोहा ॥

जब यह ध्याता ध्यानमें, ध्येय रूप होजाहि ।
पूरा जानो ध्यान तब, यामें संशय नाहिं ॥
ध्येय रूप होना यही, भिन्न ज्ञान नहिं होय ।
ध्येय रूप होना यही, भिन्न ज्ञान नहिं होय ॥
क्षीर नीर जब मिलत है, सूझत नाहीं दोय ॥
कल जो करना आज कर, आज अभी यह सार ।
सारा दमभरकी नहीं, निर्भय कहै पुकार ॥

॥ कवित्त ॥

जीव ब्रह्म ईश कौन बंध और मोक्ष कहा ऐसा विचार तू काहे नहीं करता है । क्यों तो तू आया फिर काहेको जात है कौन काम

करना था चित्त नहीं धरता है॥ संतनकी माने नहीं ग्रंथनको जाने नहीं अज्ञानी अभिमानी कामी अंतको न डराता है। परमारथ कर हीन निर्भय स्वारथमें प्रवीन कैसा खालकी खलीतीमें मवाशी बना फिरता है॥

कोई कहता है जप तप दान करो, कोई तीरथ व्रत सुकृति बतावे। कोई कहता है विद्या पढे अघ दूर हो,मुख्य कोई भक्ती ही दृढावे॥ वैराग्य विवेक दिखात कोई बलिवैश्य कोई हठ जोग करावे। तू सच्चिदानंद है ब्रह्मरूप ये निर्भय ज्ञान कोई न सुनावे॥

॥ कवित्त ॥

धन संपति पाये कहा सुत वनितादि चाहे कहा मित्रन रिझाये कहा उत्तमकुल जायेतैं। बागहू लगाये कहा महलचिन-वाये कहा चवर ढुलवाये कहा छत्रहू धरायेतैं॥सेना बढायेकहा शस्त्रमंगवाये कहा बलमें भुलाये कहा ऊधम उठायेतैं। तनको मंजायेकहा स्तुतिकरायेकहा भांड बुलवायेकहाअप्सरा नचायेतैं। भूषण गढ़ाये कहा हस्ती बंधाये कहा नौबत झडाये कहा कीर्ति फैलायेतैं। नानारस खाये कहा वस्त्रनसजाये कहा सुगन्धीबसाये कहा पानके चबायेतैं॥ रागहू गाये कहा साजहु बजाये कहा गुणी कहलाये कहा जोबन दिखलायेतैं। किमिया बनाये कहा देशन मँझारे कहा वैद्य बन पुजाय कहा रत्न परखायेतैं॥ शिरहू मुडाये कहा केशहू रखाये कहा तिलकहू चढाये कहा भस्मी रमायेतैं। बनी बन छाय कहा गुफामें समाये कहा आसन जमाये कहा देहको सुखायेतैं॥ कानहू फडाये कहा चीरको रंगाये कहा पन्थहू चलाये कहा साधू कहलायेतैं। मौन हठ लाये कहा आखें झपकाये कहा कमण्डलु हथियाये कहा दण्डहू दबायेतैं॥ कपट मन माना है सत्य बिसराना है

आपे को न जाना है अहं मन मचायेतें। बडोही दिवाना है दुःखमें फसाना है कैसा लुभाना है अज्ञानमें भुलायेतें॥ निर्भय-राम दानाहै परमसयानाहै केवल सुख जानाहै हरीशरणआयेतें॥

॥ सवैया ॥

होत है श्वासहु श्वास निरन्तर अजपा जाप टरे नहीं टारो। बाहर भीतर पूररहा है आपहि आप नहीं कछु न्यारो॥ साक्षी राम है रामकी सौगंद भ्रम मिटो प्रगटो उजियारो। दृष्ट अदृष्टहुं देखत रामको निर्भय रामही देखन हारो॥

॥ लावनी ॥

वेदोंको पढा संतोंकी सुना जबानी।
प्रभुकी सेवा चतुर पदारथ दानी॥
वृद्धि हो धर्मकी विघ्न न होने पावे।
ज्यूंका त्यूं भासे अर्थ काम बन जावे॥
मानुष शरीर हो सुफल तत्त्व दरसावे।
ब्रह्मानन्द प्रगटे आवागमन नसावे॥
हो लाभ सदा कबहूँ नहिं होती हानी।
प्रभुकी सेवा चतुर पदारथ दानी॥
निकसे विवेक वैराग्यकी निर्मल धारा।
मल दूर होय सब नेक न लागे बारा॥
सन्तोषका पूरा २ होय सहारा।
बाढे प्रेमबल उपजे शुद्ध विचारा॥
हृदय हो जाये दयाशील की खानी।
प्रभुकी सेवा चतुर पदारथ दानी॥
मिट जाय शोक दुख नासै संशय जाये।
मंगल होवे प्रकाश चहूँ दिश छाये॥

स्थित हो शांति क्षमा नम्रता आये ।
शत्रुमें मित्रमें भेद नहीं दिखलाये ॥
पण्डित बन जाये ज्ञानी हो विज्ञानी ।
प्रभुकी सेवा चतुर पदारथ दानी ॥
मिलजाय खजाना रहे न इच्छा धनकी ।
टॅल जायँ रोग चिंता छुट जाये तनकी ॥
भय रहे न कोऊ निर्भय दशा हो मनकी ।
धीरज ना टूटे चोट पडे सौ घनकी ॥
बुद्धी निश्चय हो जाय सत्य हो वानी ।
प्रभुकी सेवा चतुर पदारथ दानी ॥

॥ लावनी ॥

सुबे शाम होता है फेरा यार तुम्हारे कूचेमें ॥
पूरा दिलको लगा आजार तुम्हारे कूचेमें ॥
गर्म खूबिये हुश्नका है बाजार तुम्हारे कूचेमें ॥
दुनियाका नहीं कोई खरीदार तुम्हारे कूचेमें ॥
नक्देजानौ दिल देकर भी नहिंहार तुम्हारे कूचेमें॥
जिन्से बेवफाका है व्यौपार तुम्हारे कूचेमें ॥
इमांका सौदा है नहीं तकरार तुम्हारे कूचेमें ॥
पूरा दिलको० ॥ १ ॥
लाखों यूसुफ फिरे जुलेखा वार तुम्हारे कूचेमें ॥
लाखों मजनूं लैलासी नार तुम्हारे कूचेमें ॥
लाखों शीरीं फरहाद सिफद बीमार तुम्हारे कूचेमें ॥
लाखों दमन है जाँसे बेजार तुम्हारे कूचेमें ॥
लाखों हीर राँझेसी फिरे है ख्वार तुम्हारे कूचेमें ॥
पूरा दिलको० ॥ २ ॥

सानपे लाखों जगह चढे तलवार तुम्हारे कूचेमें ॥
लाखों जगह पर गढी हैं दार तुम्हारे कूचेमें ॥
कभी होवे इकरार कभी इंकार तुम्हारे कूचेमें
बडा मजा है गजब है मार तुम्हारे कूचेमें ॥
खबरदार निकले है सदा हरबार तुम्हारे कूचेमें ॥

पूरा दिलको० ॥ ३ ॥

हरएक किसीका काम नहीं जिनहार तुम्हारे कूचेमें ॥
सिवाय उसके जो हो बेकार तुम्हारे कूचेमें ॥
खफकानी बन जाताहै हुशियार तुम्हारे कूचेमें ॥
पार हो कैसे नहीं है वार तुम्हारे कूचेमें ॥
निर्भयको भय नहीं रहा सरकार तुम्हारे कूचेमें ॥

पूरा दिलको० ॥ ४ ॥

॥ होली ॥

होरी खेल न जानी खिलारी उमर योंहि बीती सारी । फीको गुलाल रंग अतिफीको मैलभरी पिचकारी, रंग रंगीली मोरी पचरंग चूनर खेलत फाग बिगारी । ऐसो महा मूढ अनारी॥

होरी खेल न जानी खिलारी उमर योंहि बीती सारी । बाजत बीन मृदंग मुरलिया शंख झांझ डफ भारी, मतिको हीन सुनत कछु नाहीं होत शब्दधुन प्यारी । सुरत नहिं जात सँवारी ॥

होरी खेल न जानी खिलारी उमर योंहि बीती सारी । नाचत नाच भाव बतलावत गावत तानदे तारी, अन्तर छबि निरखे नहिं मूरख चेतन तत्त्वविचारी, फूली अद्भुत फुलवारी ॥

होरी खेल न जानी खिलारी उमर योंहि बीती सारी । विषय

भोगही सेवत सेवत निर्मल बुद्धि बिसारी, नाम अमीरस चाखत नाहीं देत नई नित गारी । कठिन निर्भय संसारी ॥
होरी खेल न जानी लिखारी उमर योंहि बीती सारी ॥

॥ होली ॥

पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।
सास ननद द्योरनियां जिठनियां केतेही नाम धरोरी, समझाये बरजे नहिं मानूं होनी होय सो होरी । मेरा मन हरिसे लगोरी॥
पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।
बगर परौसन संगकी सहेली कहो अब कैसे करूँरी, बिन हरि फाग आगसो लगत है तन मन जात जरो री । प्राण नहिं मानत मोरी ॥
पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।
चलो सब मिलिजुल चलें विनती करें शीश नाय कर जोरी, मानें तो मानें नहीं कर बरजोरी पकडें नवल किशोरी ॥ ऐसो कहा सबसे बडो री ॥
पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।
भक्तीकी मांग प्रेमका सिंदूरा सकी मेंहदी रचो री, मन मनके कर माला कर लो ज्ञानकी गाती कसो री ध्यानकी ओट मिलो री ॥
पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।
नथ बेसर चूनर पहनाओ केसर रंग कर बोरी, मलके गुलाल श्यामके मुखसों निर्भय कहो होरी होरी । तबही जीवन है भलो री ॥
पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।

॥ पद ॥

मोसम कौन अधम अज्ञानी ।
हम हमके बस प्रभु नहिं हेरो, भयो देह अभिमानी॥
मोसम कौन अधम अज्ञानी ।
सेवत विषय जोग विष लागत, उलटी फांस फँसानी ॥
मोसम कौन अधम अज्ञानी ।
धनधन करत उमर सब बीती, तृष्णा नाहिं अघानी॥
मोसम कौन अधम अज्ञानी ।
लाख सुनी मानी नहिं एकहु, साधुसन्तकी वानी ॥
मोसम कौन अधम अज्ञानी ।
आपेकी कछु सुधि नहिं राखी, तकतक आस बिरानी॥
मोसम कौन अधम अज्ञानी ।
निर्भयराम या पचरंग चादर, दिन २ होत पुरानी ॥
मोसम कौन अधम अज्ञानी ।

॥ पद ॥

वा दिनकी कछु सुधि करो मनमें ।
जा दिन लेचलो लेचलो होय है ॥
मैं मम तजि हरिनाम सुमरलो, वृथा श्वास काहेको खोयहै ॥
वा दिनकी कछु सुध करो मनमें ।
जा दिन लेचलो लेचलो होय है ॥
रिपुसंग प्रीति मित्रसों चोरी, मूरख बेल विपर्यय बोय है ॥
वा दिनकी कछु सुध करो मनमें ।
जा दिन लेचलो लेचलो होय है ॥

दुर्लभ है मानुष तन मिलनो, जाग जाग जाग क्या सोय है ॥
वा दिनकी कछु सुध करो मनमें ।
जा दिन लेचलो लेचलो होय है ॥
निर्भय कही अब मानत नाहीं, अवसर बीतचलो फिर रोयहै ॥
वा दिनकी कछु सुध करो मनमें ।
जा दिन लेचलो लेचलो होय है ॥

॥ पद ॥

ज्ञानकी बात बताऊँ सजनी कहां गई चतुराई तोरी ।
तार तार भई नई चुनरिया अंग अंग कसकत है बोरी ।
इतना ऊधम कौन करत है साच कह्यो साजनकी चोरी ॥
ज्ञानकी बात बताऊँ सजनी कहाँ गई चतुराई तोरी ।
कहाँसे आई कहा जायगी कौन है तू क्यों जन्म लियो री ।
क्या करना था क्या कर बैठी सोच नहीं यही सोच बडो री ॥
ज्ञानकी बात बताऊँ सजनी कहाँ गई चतुराई तोरी ।
प्राननकी परतीत कहां है जाते बार न लागत गोरी ।
जबलग हंसा बोलत चालत तार न टूटे सोहं कोरी ॥
ज्ञानकी बात बताऊँ सजनी कहां गई चतुराई तोरी ।
चाहे भली बुरी चाहे लागे मायाका नहीं संग भलो री ।
निर्भय राम मायावश होकर पूरण ब्रह्मते जीव भयोरी ॥
ज्ञानकी बात बताऊँ सजनी कहां गई चतुराई तोरी ।

॥ पद ॥

ऐसेही जन्मसमूह सिराए ।
हम हम अरु मम मम मम भजते, आतम रूप भुलाए ॥
ऐसेही जन्मसमूह सिराए ।

हानि लाभ मानत दुख खेवत, सत्सङ्गत बिसराए ॥
ऐसेही जन्मसमूह सिराए ।
बृथाही हठ करते करते, सहज स्वभाव गँवाए ॥
ऐसेही जन्मसमूह सिराए ।
निर्भयराम आपा नहीं चीन्हो, मरनेके दिन आये ॥
ऐसेही जन्मसमूह सिराए ।

॥ पद ॥

या नैना वा रूप लुभाने ।
धीरज लाज सनेह ज्ञान बल आंखें लगे चुराने ।
ए सखी श्यामसुन्दर स्वपनेमें जबते मोहि दिखाने ॥
या नैना वा रूप लुभाने ।
तन मन धन नौछावर कीनो और कहां रहो जाने ।
ए सखी काहू विधि नहिं रीझे ऐसे श्याम सयाने ॥
या नैना वा रूप लुभाने ।
अष्ट प्रहर रैन दिन क्षण पल निरखत नाहिं अघाने
समझाये बरजे नहिं माने ऐसे भये दिवाने ॥
या नैना वा रूप लुभाने ।
तुम्हरे करे कछु नहिं होय है निभय कहा भुलाने ।
नंदनँदन करि है सोई होगा जिनके हाथ बिकाने ॥
या नैना वा रूप लुभाने ।

॥ पद ॥

भरोसा जाको दूसरा हो सो करो ।
कोई धनमें कोई बलमें भूला फिरत बडो ।
मेरा बल धन है रामनाम है छीजत नाहिं जरो ॥

भरोसा जाको दूसरा हो सो करो ।
कोई संयम साधे साधो कोई वेद पढो ।
मोको तो एक रामनाममें सब कुछ सूझपडो ॥
भरोसा जाको दूसरा हो सो करो ।
कोई नाममें कोई रूपमें मान अपमान करो ।
मेरा तो कोई नाम रूप नहीं याही ज्ञान फरो ॥
भरोसा जाको दूसरा हो सो करो ।
वर्णाश्रम कुलका अभिमानी कोई बना फिरो ।
निर्भय राम राम लौलाओ माया मोह तरो ॥
भरोसा जाको दूसरा हो सो करो ॥

॥ गजल ॥

मरजाउ तमन्ना सुबहो श्याम यही है ॥
इस जीस्तके आगाजका अंजाम यही है ॥
सर काटके रख पेशेनजर साकिय आलम ॥
पीनेको मए वस्ल फकत जाम यही है ॥
तकदीरपे शाकिरहो बखेडोंसे अलग हो ॥
दुनियांमें अगर है तो बस आराम यही है ॥
सब इस्मोंका मौसूम हूँ सब सिफ्तोंका मौसूफ ॥
मेरा तो हकीकतमें बडा नाम यही है ॥
कुछ काम न हो जीस्तके दिन योंही गुजर जायँ ॥
निर्भय तुझे करनेको बडा काम यही है ॥

॥ गजल ॥

चले हैं ठहरों नहीं जाहिदा वजूबा की ॥
शराबेशौकका पीना है यक सबू बाकी ॥

हिसाब पाक हो झगडा न फिरको रख साकी ॥
पिला दे आजही जो कुछ रही है तू बाकी ॥
मैं उनसे वस्लमें कह देता साफ साफ अगर ॥
जराभी होती अगर जाय गुफ्तगू बाकी ॥
हजारों गिर गये मुझीके गुन्चे खिलखिल कर ॥
न उनका रूप है ना रंग है न बू बाकी ॥
वो जिबह करते थे मैं उनके मुँहको तकता था ॥
यह आरजू थी न रह जाय आरजू बाकी ॥
दिखावे जलवा अगर मुह छिपालिया तो क्या ॥
है उनका अक्स मेरे दिलमें हूबहू बाकी ॥
उन्हें मिले मुद्दत हुई किधर है ध्यान ॥
है निर्भय आजतक जिनकी जुस्तजू बाकी ॥

॥ लावनी ॥

पहिला जो अपना नामो निशां मिटावे ।
फिर उसको पूरणब्रह्म साफ दिखलावे ॥
देहोंसे देह है भिन्न भ्रम क्यों आने ।
दोनोंके लक्षण ठीक ठीक तू जाने ॥
अग्नी जलका संयोग जो कोई माने ।
बाधक साधकके अर्थ नहीं तू जाने ॥
जानसे ग्रन्थि जड चेतनकी खुल जावे ।
फिर उसको पूरणब्रह्म साफ दिखलावे ॥
नित बोलचालमें बखरी वानी जानो ।
स्वररूप मध्यमा शब्दोंको पहिचानो ॥
प्रथम दोनोंसे पश्यन्ती उर आनो ।
ध्वनि रूप अवस्था परा शब्दकी मानो ॥

नभसे हो पार यहीं ध्वनि अशब्द हो जावे ।
फिर उसको पूरणब्रह्म साफ दिखलावे ॥
वोही प्रणव वोही ॐसार मत अटके ।
वोही अनहद वोही शब्दब्रह्म बेखटके ॥
ब्रह्माण्ड अखिल वाहीमें चातुर लटके ।
सूक्ष्मसे कारण वोही होय है घटके ॥
कारण आधि तज वोही शुद्ध रहजावे।
फिर उसको पूरणब्रह्म साफ दिखलावे ॥
वदोंकाभी है यही शब्द आधारा ।
यही ब्रह्मा विष्णू शिवको मन्त्र पियारा ॥
श्रुति प्रमाण सब कहा तोसे विस्तारा ।
कहे ऐसे ही मांडूक उपनिषद सारा ॥
मुक्तीका द्वार गीताभी यही बतावे ।
फिर उसको पूरणब्रह्म साफ दिखलावे ॥
धुर अगम देशतक शब्दका है जीना ।
दश मंजिल है जाने कोई चतुर प्रवीना ॥
कही मधुर बांसुरी बजे बजे कहिं बीना ।
घनघोर शब्द हो कभी कभी हो झीना ॥
यह गुप्त भेद किसी बिरलेपर खुल जावे ॥
फिर उसको पूरणब्रह्म साफ दिखलावे ॥
जो शब्दब्रह्मको सुरत लगाय टटोले ।
वो सोहं सोहं सोहं सोहं बोले ॥
चढ पवनपे तीनों लोकमें हंसा डोले ।
छहों चक्रन वेध दशम द्वारको खोले ॥

इस देशमें हंसा परमहंस बनजावे।
फिर उसको पूरणब्रह्म साफ दिखलावे॥
है गगनमंडलमें रुचिर एक चौबारा।
हीरे मोती नीलमका जडाव सारा॥
जो अगम देशको जाते जाते हारा।
ठहरे वहां पल भर मिटे हारपन सारा॥
त्रिवेणी पार हो मानसरोवर न्हावे।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ दिखलावे॥
जब गगनमंडलकी सैर करे कछु काला।
तब अन्धकार मिटजाय होय उजियाला॥
प्रकाश तैं बढकर आवै देश निराला।
निष्किंचन रक्त न श्वेत न पीत काला॥
वो अद्भुत भाव लखे तब निश्चय आवे।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ दिखलावे॥
स्थूल देहको त्याग अकेला हो तू।
और इन्द्रिनकाभी सर्व झमला खो तू॥
ला ज्ञानका साबन अन्तर्का मल धो तू।
लख असंग आपको अलग सबोंसे हो तू॥
यूँ अगम देशकी राह सुगम होजावे।
फिर उसको पूरणब्रह्म साफ दिखलावे॥
बिन मुख बोले बिन जिह्वा स्वादहु आने।
न्यारी न्यारी बिन नाक गंध पहचाने॥
बिन चित चितवन करे बिन मन बहु हर्षाने।
बिन बुद्धी अथ चारों बेदोंका जाने॥

विन अहंकार निर्भय स्वरूप दर्शावे ।
फिर उसको पूरणब्रह्म साफ दिखलावे ॥

॥ लावनी ॥

अधर सिंहासन डोले आसन जमाके बैठे जतीजी ।
दहिने अंग बिराजे शंकर बाएँ बिराजे सतीजी ॥
महादेव देवनके स्वामी, रूप अरूप है नाम अनामी ।
अविनाशी उर अन्तर्यामी, अखिल विश्वके पतीजी ॥
अधर सिंहासन डोले आसन जमाके बैठे जतीजी ।
अचल अखंड अपार कहावें,बाहर भीतर खेलमचावें ॥
दृष्टीमें कबहू नहिं आवे, अचिन्त्य अद्भुत गतीजी ।
अधर सिंहासन डोले आसन जमाके बैठे जतीजी ॥
सूँघ सुनें छुवें और चाखें, सोवें लेन देन करें भाषें ।
जितने विषय सभी प्रकाशें, काहूमें नहीं रती जी ॥
अधर सिंहासन डोले आसन जमाके बैठे जतीजी ।
नेतिनेति कहें वेद पुराणा, कैसे कोई करे अनुमाना ॥
निर्भयराम अनुभवसे जाना, अकथ कहानी कथीजी ।
अधर सिंहासन डोले आसन जमाके बैठे जतीजी ॥

॥ कवित्त ॥

ब्रह्म तो वही है जो सच्चित आनन्दघन निर्विकल्प निर्विकार स्वयं नित प्रकाशे है। माया तो वही है जो रज तम सतगुण को धार नाना रूप नामोंमें उपजे और विनाशे है ॥ ईश्वर तो वही है निज रूपको न भूल कभी माया गहे मायासे पृथक्ही भासे है। जीव तो वही है जो अविद्या संयोग पाय भूला निज रूप भ्रम फाँस ना निकासे है ॥

॥ कवित्त ॥

अक्षर तो वही है जो ब्रह्मको जनावे रूप यही चारों वेदोंका अर्थ मथ पाया है। रूप तो वही है जो नामसे न्यारा होत जैसे आकाश रूप नाममें छिपाया है॥ नाम तो वही है जिसे कहते सब राम राम रामसे पृथक् बकवाद मन लाया है। राम तो वही है जो उपाधिसे भिन्न हो पूरण ब्रह्माण्डमें सम रस समाया है॥

॥ कवित्त ॥

कर्म तो वही है जामें संगका न लेशहो शुभ अशुभ कर्त्ताको अर्पण करडारो है। भक्ति तो वहीहै जिन एक रामनाम पर तन मन धन दारा सुत सर्वहीके वारो है॥ योगतो वहीहै जो युक्तिसे आनन्द होय सो हमने निश्चय कर हृदयबीच धारो है। ज्ञान तो वही है जो ज्ञान आरूढ होय आपतें अभिन्न ब्रह्म ईश्वर विचारो है॥

॥ कवित्त ॥

मन्दिर तो वही है जा देहमें तू वास करे यासों न उत्तम और दूजा ठिकानो है। आसन तो वही है जो उखडे न तीनों काल सोवत जागत स्वप्नहूमें ज्यूंका त्यूं जमानो है॥ माला तो वही है जो गुप्त फिरे आपही आप काठ सूत फेरनको झगडा मन मानो है। देव तो वही है तू जाको कहे आत्मदेव श्रुतिनेभी परदेव याहीको बखनो है॥

॥ कवित्त ॥

तीर्थ तो वही है जो तीर अर्थ सिद्ध होय गुरुके सिवाय सो तो कितहू न पायो है। अर्थ तो वही है जामैं मायाका न लेश हो खोजत खोजत सो तो आत्माही हाथ आयो है॥ गुरु तो वही है जिन्ह मिथ्या भ्रम दूर कियो ऐसा सत् शब्द

टेरटेरके सुनायो है। शब्द तो वही है जो शब्दआदि वेदनकी सृष्टिका कारण स्वतः सिद्ध ठहरायो है ॥

॥ कवित्त ॥

व्रत तो वही है जो व्रतहीने अन्तरको सगरो मल धोय धोय निर्मल करदीनों है । मल तो वही है जो काम क्रोध लोभ मोह इनहींतें अनातममें आत्मभाव चीनों है ॥ अन्तस्तो वही है जामें देवको प्रतिबिंब पडे वाको जो न शुद्ध करे सो तो मतिहीनों है। प्रतिबिंब तो वही है जो बिंबसे न न्यारा कभू निर्भय ताको सूझे जिन उपाधि बाध कीनों है ॥

॥ दोहा ॥

जबतक होत स्वभावते, अहं बुद्धिका भान ।
स्वांसा जहां ठहरे तहां, चिदाकाश धर ध्यान ॥
चिदाकाश चहुँ दिश लखे, इत उत गिने न संत ।
यही ज्ञानकी स्थिती, यही जोगका अन्त ॥
या विधि आत्मा अर्चना, निर्भय तबही होय ।
द्वन्द्व सकल जाते रहें, दुबधा रहे न कोय ॥
सवमवॐकार इति, दृढ निश्चय मन लाय ।
मगन रहे आनन्दमें, जबलग पार बसाय ॥
बुद्धी जब विपरीत हो, तब हो यही विचार ।
नेह नानास्ति किंचन, श्रुति कहे पुकार ॥
नेम रहो या ना रहो, प्रेम रहो भरपूर ।
निर्भय सुखका पन्थ है, हठकी कहा जरूर ॥
ब्रह्म आत्मा दो नहीं, निर्भय क्यों सकुचाय ।
वोही एक बहुरूप है, द्वैत हुआ कछु नाय ॥

सब योगनका मूल है, सब ज्ञाननका सार।
चित चैतन्यको एक कर, निर्भय कहे पुकार॥
जाग्रत और सुषुप्तिकी, संधीसों लौ लाय।
निर्भय निर्भय हो रहो, कपट अमल बिसराय॥

॥ पद ॥

आला वो दर्वेश कहावे।

दृढ आसन सन्तोषका खप्पर सत्य लंगोट चढावे।
प्रेमकी सेली ध्यानकी आसा ज्ञान भमूत रमावे॥
आला वो दर्वेश कहावे।
दया धर्म दोउ जटा बांधके समता तिलक लगावे।
अजपा जाप सुरतसों लावे घटमें अलख जगावे॥
आला वो दर्वेश कहावे।
अन्तर धूनी लगा जतनसों प्राण पवन ठहरावे।
सहजही सहज नेम कर फूंके ब्रह्म अग्नि परचावे॥
आला वो दर्वेश कहावे।
तीन ग्रन्थि षट चक्रन वेधे दशम द्वारतक जावे।
उलट नैन निरखे छबि निर्भय सतगुरु भेद बतावे॥
आला वो दर्वेश कहावे।

॥ पद ॥

हमें ना सूझे अजपासा कोई जाप।

ना आसन चहिये ना माला हृदयकमलमें हो उजियाला।
स्वाँसामें मनवाँ रमजावे रमजाय आपही आप॥
हमें ना सूझे अजपासा कोई जाप।

महाकाशके बाहर भीतर अखण्ड एकही जाप ।
ध्यानकी ओट ज्ञानसे परखो अनहदध्वनिका आलाप ॥
हमें ना सूझे अजपासा कोई जाप ।
चाहे बन बन हेरत डोलो चाहे वेद पुरान टटोलो ।
नेम करो चाहे ब्रत राखो बढे पुन्य और पाप ॥
हमें ना सूझे अजपासा कोई जाप ।
निर्भय नानक, सुन्दर, दादू; कबीर, तुलसीदास ।
बाहर भीतर आते जाते अन्त हुए गरगाप ॥
हमें ना सूझे अजपासा कोई जाप ।

॥ पद ॥

हम सोहं नाम पद जाना है ।
अनुभव रूप स्वरूप देवको, ना रजनी ना भाना है ॥
हम सोहं नाम पद जाना है ।
इत शशि आवे उत रवि जावे, दोनोंके बीच समाना है ॥
हम सोहं नाम पद जाना है ।
पंचकोश और तीन गुननते, भिन्न २ कर छाना है ॥
हम सोहं नाम पद जाना है ।
निर्भय राम साक्षी तेरा, किसको और जताना है ॥
हम सोहं नाम पद जाना है ।

॥ पद ॥

कढे कोई बिरला जग है जाल ।
एक फंदसे पिंड छुडावे, दूजेमें पड है तत्काल ॥
कढे कोई बिरला जग है जाल ।
बाहर ध्यान ज्ञानकी बातें, अन्तर चले औरही चाल ॥

कढे कोई बिरला जग है जाल ।
कुछसुमार राखे नहिं दमका, हमहम करत बजावत गाल ॥
कढे कोई बिरला जग है जाल ।
वही निर्भय भवसागर तरे हैं, सतगुरु निजपर होंय दयाल॥
कढे कोई बिरला जग है जाल ।

॥ पद ॥

कृष्ण फिरे कुंजनमें क्या सोती है ब्रजनार ।
जा मोहनपर भई दिवानी, मोरी सुनी न मनकी मानी ।
वही आये सो हम जानी, टेररहे खडे द्वार ॥
कृष्ण फिरे कुंजनमें क्या सोती है ब्रजनार ।
सोहं सोहं धूम मचाई, बडा गजब नहिं देत सुनाई ।
श्याम सुँदर है रामदुहाई, हेरत भई बडी वार ॥
कृष्ण फिरे कुंजनमें क्या सोती है ब्रजनार ।
चाल अनोखी चितवन बांकी, रस भरे बोल मनोहर झांकी ॥
जगमग जोति जगे नैनाकी, खिलरहि अजब बहार ॥
कृष्ण फिरे कुंजनमें क्या सोती है ब्रजनार ।
सेज बिछी है शून्य अटारी, उठ शृङ्गार कर निर्भय प्यारी ।
परमानन्द हो खोल किवारी, क्यों बैठी मन मार ॥
कृष्ण फिरे कुंजनमें क्या सोती है ब्रजनार ।

॥ पद ॥

मोहे नीको लागे बाजे अनहद तूर ।
सोहं सोहं सोहं सोहं,धुन चहुँ दिशि रही पूर ॥
मोहे नीको लागे बाजे अनहद तूर ।
अन्तरिक्ष पाताल स्वर्गमें, शब्द रह्यो भरपूर ॥
मोहे नीको लागे बाजे अनहद तूर ।

रैन दिना अंतर और बाहर, नेरे सन्मुख दूर ॥
मोहे नीको लागे बाजे अनहद तूर ।
निर्भयराम यही ध्वनि गहलो, दर्श नूरही नूर ॥
मोहे नीको लागे बाजे अनहद तूर ।

॥ पद ॥

गोपाला मेरी सुध काहे बिसराई ।
आओ नैया मोरी बूडन लागी, केशव रामदुहाई ॥
गोपाला मेरी सुध काहे बिसराई ।
गजको ग्राहसे तुरत छुडायो, अब क्यों बार लगाई ॥
गोपाला मेरी सुध काहे बिसराई ।
समदर्शी तोय कहें सब कोई, दुखभंजन सुखदाई ॥
गोपाला मेरी सुध काहे बिसराई ।
निर्भय राम ध्वनि छूट न जाये, प्रण रहो या जाई ॥
गोपाला मेरी सुध काहे बिसराई ।

॥ पद ॥

साजन बिन नित नई होत पीर ।
उमड उमड जुबना चढ आयो, घुमड घुमड नैननमें छायो ।
गरज गरज पिया पिया रट लायो, वर्ष वर्ष बहो जात नीर॥
साजन बिन नित नई होत पीर ।
तडप तडप जियरा घबरानो, धडक धडक छतियांअकुलानो।
धमक धमक लगो सीस फिरानो,मसक मसक फटगयोचीर ।
साजन बिन नित नई होत पीर ।
घर काटे बन सूना लागे, भूषण बसन विषय रस त्यागे ।
सूनी सेज निरख डर लागे, लाज गई ना रहो धीर ॥
साजन बिन नित नई होत पीर ।

निर्भय सखी कहत कर जोरी, इतनी बात मानलो मोरी ॥
जीवनकी आशा तजदो री, सुखसागरको गहो तीर ॥
साजन बिन नित नई होत पीर ॥

॥ पद ॥

लो अपनेही संकल्पतें आपही सुखी दुखी होवे ।
अपने बेगानेकी मृत्यु जब एकही काल होवे ।
अपनेका शोक बेगानेका क्यों शोक नहीं होवे ॥
लो अपनेही संकल्पते आपही सुखी दुखी होवे ।
मनकी सब रचना है मनहीमें राग द्वेष होवे ।
क्यों अभिमानी बनकर कबहूं हँसे है कबहूँ रोवे ॥
लो अपनेही संकल्पतें आपही सुखी दुखी होवे ।
तू देह नहीं संदेहमें भूला वृथा काल खोवे ।
यह देह किसीकी रही नहीं क्यों मलमल कर धोवे ॥
लो अपनेही संकल्पतें आपही सुखी दुखी होवे ।
मिथ्या संकल्पकर आपही अपना नाम क्यों डबोवे ।
संकल्प मेट हो निर्भय निर्भय नाम तभी सोवे ॥
लो अपनेही संकल्पतें आपही सुखी दुखी होवे ।

॥ पद ॥

ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।
आलख अचिन्त्य अरूप अनामी, गुण अवगुणतें न्याराहै ॥
ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।
अगम अगाध अनंत अनादी, अचल अखंड अपारा है ॥
ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।
सत्चित् आनन्द परममनोहर, सब जीवनको प्यारा है ॥
ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।

मनसे परे बुद्धिसे बाहर, निर्भय रागबिचारा है ॥
ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।

॥ लावनी ॥

है एक एक स्वाँस अमोल वृथा मत खोवे ।
दिन चला जाग बेखबर पडा क्या सोवे ॥
तू किसीका नाहीं नाहीं कोऊ तिहारा ।
है इन्द्रजालवत झूठा सब संसारा ॥
नर शरीर लख चौरासी भोग कर धारा ।
जो अब चूका तू जीती बाजी फिर हारा ॥
आपेको देख विपरीत बेल मत बोवे ।
दिन चला जाग बेखबर पडा क्या सोवे ॥
एक परमहंस अपनी ध्वनिमें आते हैं ।
दम दममें अलख जगाकर रमजाते हैं ॥
जितने ज्ञानी या ध्यानी कहलाते हैं ॥
उनकी सेवा सब उत्तम बतलाते हैं ॥
मिल जाये जब दृढ करके कोई टटोवे ।
दिन चला जाग बेखबर पडा क्या सोवे ॥
दो बाग हैं जिससे ब्रह्म लोक शरमावे ।
एक बाहर दूजा भीतर साफ दिखावे ॥
पत्ते फल फूल निरख मन अती लुभावे ।
जो खावे फलको अजर अमर होजावे ॥
पर सूझे उसे जो अन्तसका मल धोवे ।
दिन चला जाग बेखबर पडा क्या सोवे ॥
एक बागमें कोटिन सूर्यका उजियारा ।
दूजेमें अनगिन शशिने प्रकाश धारा ॥

बागोंकी शोभा ऐसी अगम अपारा ।
निरखतही निरखत महाबली मनहारा ॥
करें शेष सुरेश गणेश कथन नहीं होवे ।
दिन चला जाग बेखबर पडा क्या सोवे ॥
वो परमहंसजी मुखसे कभू न बोलें ।
नित पवनके चढ दोनों बागमें डोलें ॥
कितनाही अंजन इन आंखोंमें घोलें ।
सूझे नहिं जबतक हियेकी आंखें खोलें ॥
बिन विंधा मोती कहो कैसे कोई पिरोवे ।
दिन चला जाग बेखबर पडा क्या सोवे ॥
वो परमहंस जिस मारग आवे जावे ।
वा मारगमें चित सावधान ठहरावे ॥
चलतेही चलते सन्मुख बाग दिखावे ।
और परमहंसका भाव समझमें आवे ॥
निर्भय घृत निकला अब मत छाछ विलोवे ।
दिन चला जाग बेखबर पडा क्या सोवे ॥

॥ लावनी ॥

आँखोंमें बँधा वाहे तार तेरी आँखोंका ।
देखूं हूं जलवा हरबार तेरी आँखोंका ॥
खुलगया आज इसरार तेरी आँखोंका ।
कुल आलम है इजहार तेरी आँखोंका ॥
एक तूरपे नहीं मदार तेरी आँखोंका ।
हर संगमें निहाँ शरार तेरी आँखोंका ॥
नक्शा हर दरो दीवार तेरी आँखोंका ।
देखूंहूं जलवा हरबार तेरी आँखोंका ॥

हर आँखमें भरा खुमार तेरीआँखोंका ।
हर जबानमें तकरार तेरी आँखोंका ॥
हर दिलमें नूर यकसार तेरी आँखोंका ।
हर अक्समें है इकरार तेरी आँखोंका ॥
वोह कौन नहीं बीमार तेरी आँखोंका ।
देखूँहूँ जलवा हरबार तेरी आँखोंका ॥
चक्कर रहे लैलोनहार तेरी आँखोंका ।
अब बदलना है दुशबार तेरी आँखोंका ॥
अय यार मैं ताबेदार तेरी आँखोंका ।
आँखोंसे हुक्म बरदार तेरी आँखोंका ॥
नहीं होवे वस्फ जिनहार तेरी आँखोंका ।
देखूँहूँ जलवा हरबार तेरी आँखोंका ॥
हुआ इशारा जब यकबार तेरी आँखोंका ।
लिया खाका तभी उतार तेरी आँखोंका ॥
अब और जियादह प्यार तेरी आँखोंका ।
हर शक्समें है दीदार तेरी आँखोंका ॥
निर्भय निर्भय सरशार तेरी आँखोंका ।
देखूँहूँ जलवा हरबार तेरी आँखोंका ॥

॥ गजल ॥

स्वाँसका ज्ञान है और ध्यान गगनमें अपना ।
आज कल हाल दिगरगूँ है वतनमें अपना ॥
लबपे जां आई है जीनेका भरोसा क्या है ।
हाय क्या हाल हुआ दिलकी लगनमें अपना ॥
न वो गुल है न वो गुन्चा न नसीमें सहरी ।
जाके क्या होगा रहा कौन चमनमें अपना ॥

जानको दिलको कलेजेको जिकरको दमको ।
किसको बतलाऊँ खुदा खानएतनमें अपना ॥
निर्भय दुनियामें रहो सबसे मिले सबसे अलग ।
कुछ बिगडनेका नहीं ऐसे चलनेमें अपना ॥

॥ गजल ॥

लज्जते वस्ल अगर ख्वाबमें पाई होती ।
वहम झूठा है दुईका यह गवाही होती ॥
अगर उस गुलपे तबीअत तेरी आई होती ।
बागे आलमकी न आँखोंमें न समाई होती ॥
काश आईनेसे उनकी न रसाई होती ।
मतलए दिलपे न जंगे खुदि छाई होती ॥
एकही दौरमें मिट जाता दुईका खदशा ।
रंग अपना मए वहदत कहीं लाई होती ॥
कुछ खुदाका कभू बिगडा है खुदीसे बतला ।
एक फिरऊन क्या फिरऊन खुदाई होती ॥
वो उठा लेते मुकाबिलसे अगर आई ना ।
फिर तो यकताईकी घर घरमें दुहाई होती ॥
नहीं धन्वन्तरी लुकमानो फलातूँ मरते ।
मौत आए नहीं ऐसी जो दवाई होती ॥
निर्भय दुनियासे गये और न उकबाके रहे ।
कभू जिनसे न भलाई न बुराई होती ॥

॥ पद ॥

छैल साँवरिया हो कहां लगादी बार ।
तुम बिन रस सारे भए फीके, जाने क्यों सरकार ॥
छैल साँवरिया हो कहां लगादी बार ।

श्रवण करत नहिं रूठ गये हो, टेर टेर रहो हार ॥
छैल साँवरिया हो कहां लगादी बार ।
मन रोके नहिं रुकत अनारी, बहा जात मँझधार ॥
छैल साँवरिया हो कहां लगादी बार ।
निर्भय राम है शरण तिहारी, बेडा लगाओ पार ॥
छैल साँवरिया हो कहां लगादी बार ।

॥ पद ॥

प्रीतिकी रीति आप नहिं जानत, हमरा दोष बतावत डोले ।
प्राणनतें हरि हरि रट लाऊँ, पटकी ओट समाधि लगाऊँ ।
तकतीकी तकती रहजाऊँ, आन अचानक घूंघट खोले ।
प्रीतिकी रीति आप नहिं जानत, हमरा दोष बतावत डोले ॥
हा हा करत करत मैं हारी, बिनती सुनत नहीं बनवारी ।
माँगत जोबन दान अनारी, आँख दिखावत कडवा बोले ॥
प्रीतिकी रीति आप नहिं जानत, हमरा दोष बतावत डोले ।
पहले तौ बैराग्य बतायो, आतम संयम योग सिखायो ।
अब दई मारो काम जगाओ, अंगियामें कर डार टटोले ॥
प्रीतिकी रीति आप नहिं जानत, हमरा दोष बतावत डोले ।
तन मन सुख संपति परिवारा, जानलियो कछु नाहिं हमारा ।
निर्भयराम या बंसीवारा, अमृतमें देखो विष घोले ॥
प्रीतिकी रीति आप नहिं जानत, हमरा दोष बतावत डोले ।

॥ कवित्त ॥

नित्य मुक्त नित्य शुद्ध निर्विकल्प निर्विकार निष्करीय निर्मल निसंग निराधारा है । अक्षर अलख अज अचल अखंड नित्य निर्गुण निरंजन अविनाशी निराकारा है ॥ पुरुष प्रकृति नाहीं ब्रह्मा और सृष्टि नाहीं श्रुति और स्मृति नाहीं एक ॐकारा है । बोध ना अबोध मानों तम ना प्रकाश

जानों भाव मात्र रूप मानों मिला है न न्यारा है ॥ आपही ब्रह्म आपही जीव आपही माया आपही ईश आपही बाहर आपही भीतर आपही पार अपारा है । ना तो कुछ हुआ था न अब है न होवे आगे वो तो आप ज्यूं का त्यूं है म्हारा है न थारा है ॥ आदि जोई अन्त जोई मध्य काल मानो सोई सुषुप्ति-जाग्रत स्वप्न वाहीका पसारा है । देश काल शब्द अर्थ कारज कारण व्यर्थ निर्भय एक सत्य ब्रह्म और भ्रम सारा है ॥

॥ पद ॥

बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
काहेकी कुंजी काहेका तारा, कौन जतनसों डारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
कैसा है घर दर्वाजा, काहेका लगा किवाँरा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
कौन वस्तु वहां रखकर भूली, कौनसा भूलनहारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
किस विधि खुले कौन खोलेगा, कौनसा काल बिचारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
बडी बार भई चेत अनारी, जीवनकी क्या सारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
निर्भय सीख मान मन माने, कहना काम हमारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।

पद

मनमोहन जादू डारा है ।
अपना बिगाना सूझत नाहीं, केवल ध्यान तुम्हारा है ॥
मनमोहन जादू डारा है ।

अष्टप्रहर रैन दिन क्षणपल, दमभरको नहिं न्यारा है ॥
मनमोहन जादू डारा है ।
सुख संपति तन मन परिवारा, सगरो तुमपर वारा है ॥
मनमोहन जादू डारा है ।
जो कुछ हो तुम हो हम नाहीं, अब तो यही विचारा है ॥
मनमोहन जादू डारा है ॥
निर्भय कौन सुनेको कहवे, जैसा हाल हमारा है ।

॥ पद ॥

कुछ अमर नहीं राम क्या माँगूँ ।
जा तनमें विशेष अनुरागा, सो तनखाये हैं चोंचन कागा ॥
कुछ अमर नहीं राम क्या माँगूँ ।
सुख संपति मांगत संसारा, ताको जात न लागत बारा ॥
कुछ अमर नहीं राम क्या माँगूँ ।
सखा सनेही सुत अलबेला, मोहनीनारि दो दिनका मेला ॥
कुछ अमर नहीं राम क्या माँगूँ ।
शीश महल रंगमहल तबेला, छत्रसिंहासन झूठ झमेला ॥
कुछ अमर नहीं राम क्या माँगूँ ।
बल विद्या गुण मान बडाई, स्वप्नेका धन राम दुहाई ॥
कुछ अमर नहीं राम क्या माँगूँ ।
तुम्हारी गतिहोधाम तुम्हारा, निर्भयकछु मांगत नहिं न्यारा ॥
कुछ अमर नहीं राम क्या माँगूँ ।

॥ पद ॥

मन तुम राम सनेही होना ।
बडे भाग मानुष तन पायो, वृथा स्वांस मत खोना ॥
मन तुम राम सनेही होना ।

ज्ञान रूप साबुनसे निसिदिन, अंतरके मल धोना ॥
मन तुम राम सनेही होना ।
या नगरीमें चोर बसत हैं, हरदम चौकस रहना ॥
मन तुम राम सनेही होना ।
निर्भय व्याहका रस चाखो तो, वेग करालो गौना ॥
मन तुम राम सनेही होना ।

क०–पढे छहों शास्त्र और अठारहों पुराण देखे वेदोंकोभी आदिसे अन्ततक छाना है। तीर्थ व्रत तप दान योग ध्यान ज्ञान स्नान संध्यावंदन तर्पणका भाव सब जाना है ॥ पढी शिल्प विद्या और ज्योतिषको भली भाँति रमलकाभी भेद विधिपूर्वक पहिचाना है। वैद्यकके न्यारेन्यारे जाने हरएक अंग नाडी पहिचानना और नश्तरका लगाना है ॥ जानी है बणिज और व्यवहारनकी रीति सब खोटे और खरेका ज्ञान उर आना है। चाकरीके जेते सभी जाने हैं दाँव घात जाना है खेती फुलवारीका जमानाहै ॥ जाना है ढोलक मृदंग झांझ सारंगी शहनाई सितार और तंबूरे का बजाना है। जाना है ध्रुपद मल्हार देश कालंगडा काफी बिहाग राग सोरठका गाना है ॥ जाना है बनाना रुपये और अशर्फीका जाना है अनेक भाँति कलोंका घुमाना है। इतना जिन जाना वा खाक नहीं जाना है जाना है वाही जिन रामनाम जाना है ॥

॥ कवित्त ॥

रामहीके नामको अनेक जन पुकार रहे मस्जिदमें मन्दिरमें गिरजामें टेर टेर। रामहीके रूपको अनेक जन निहार रहे दगनमें हृदयमें त्रिकुटीमें हेर हेर ॥ रामहीके भावको अनेक जन बिचार रहे वाणी या अंतःकरणबीच

घेर घेर । रामही हैं सर्व ठौर दूसरा न कोऊ और निश्चय कर मानों कुछ यामें नहीं हेर फेर ॥ जैसी जाकी भावना हो तैसे ताको देख पडें जभी हेरे तभी कभू नेक ना लगावे देर देर । निर्भयराम रामको एकबार हेरो तो रामको हेरत हैं आरत जन बेर बेर ॥

क०—नामरूप यदि अनेक सभमें परतत्त्व एक वाही तत्त्व तेरा स्वरूप वाही राम है । रात दिन आठ प्रहर चोंसठ घडी साठ पल स्वाँसों स्वाँस रट रामनामसों न नाम है ॥ बद्री केदार दूर दूर अवध द्वारिका है पुष्कर कैलाश दूर दूर गोकुल ग्राम है । अपनेही हृदयमें निहार रूप रामको यासों न नेरे दूजा और कोई धाम है ॥ झूठे दारा सुत धन झूठा सगरो तन मन मिथ्या इन्द्र ब्रह्मलोकमायाको परिणामहै । चिंतामणि कामधेनु कल्पवृक्ष सर्व झूठे सांचो राम नाम सुख जामें आठों याम है ॥ झूठे तप व्रत दान हठयोग मिथ्या जान पंच अग्नि जलधारा सहनो शीत घाम है । रामहीको ध्यान कर निर्भय सब काम छोड यासें न उत्तम और प्राणीको काम है ॥

क०—कोटि २ उपायनसे छूटे न जन्म मरण एक रामनाम सुमर बंधन नर टारे है । कोटि कोटि मंत्रनसे अंतस न शुद्ध होत रामहीको नाम एक सगरे मल जारे है ॥ कोटि कोटि वस्तु पाय तृष्णा न दूर होय केवल रामनामही तृष्णा बिडारे है। कोटि कोटि देव धाय राम नहीं दरसत हैं रामहीके धाये निर्भय रामको निहारे है ॥

क०—लोकमें अविद्याके अनेक बकवाद भरे राम सुमर खींच मन सबहीकी ओर सों । वेदमें भांति भांति विद्याके विवाद हैं रामनाम पकड भाग वृथा और शोरसों॥ नाना पंथ

नाना वेष नाना ग्रंथ नाना लेख राम नहीं दर्शत है काहूके जोरसों। निर्भय राम रामकी सौगन्द राम दर्शत हैं राम ध्वनि लागे जब अनुभव झकोरसों॥

॥ कवित्त ॥

रामहीको नाम जारें काम क्रोध लोभ मोह रामहीको नाम जो निकारे नर्कवासते। रामहीको नाम नाना जगतकी त्रास हरे रामहीको नाम जो बचावे यमत्रासतें॥ रामहीको नाम दे उभार भवसागरतें रामहीको नाम जो छुड़ावे मिथ्या आसतें। निर्भय राम रामको नाम जानें पकड लिया वाको डर नाहीं अविद्यारूपी फांसते॥

क०–रामहीको नाम रटे बुद्धि बल प्रबल होय रामहीको नाम रटे उत्तम कुल पावे है। रामही राम रटे चक्रवर्ती राज्यमिले रामहीका नाम वैकुंठ दिखलावे है॥ रामहीके नाम रटे ऋद्धि और सिद्धि होय रामही को नाम इन्द्रासन पर बिठावे है। रामहीको नाम रटे निर्भय नरदेह मिले राम राम रटत निर्वाण हो जावे है॥

क०–ब्रह्माजी रामहीकी शक्तिपाय सृष्टिरचें रामहीका ध्यान करें रामही सत माने हैं। विष्णुभी रामहीकी मायातें पालन करे रामहीको रूप निज रूप पहिचाने हैं॥ सदाशिव रामहीके बलसों संहार करें रामहीके भावको परम आनन्द जाने हैं। निर्भय राम वेदभी रामहीको गायन करे वेद बिन रामहीको आत्मा बखाने हैं॥

क०–उठतेहू तू रामभज और बैठेहू तू राम भज खडे हू तू राम भज और पडेहू भज रामको। चलतेहू तू राम भज और फिरतेहूतू राम भज खातेहू तू राम भज औरपीतेहू भज रामको॥

बोलतहू तू राम भज और चुपकेहू तू राम भज देतेहू राम भज और लेतेहू भज रामको । सूंघतहू तू राम भज और सुनतहू तू राम भज निर्भय आठों यामहू तू राम भज भज रामको ॥

॥ कवित्त ॥

द्रौपदीने हृदयमें सँभारा जब रामनाम उघरो न अंग चीर बढता गया तानेसे । ध्रुवने कैसी उत्तम पदवी पाई देखलो रामहीको नाम सत आसरा पहचानेसे ॥ हिर्नाकुश मारो की रक्षा प्रह्लादकी केवलरामनामपे विश्वास ठहरानेसे। बिभीषणकीमोक्ष हुई लंकाको राज मिलो निर्भयराम रामकी शरणमें आनेसे॥

॥ कवित्त

ग्राहतें छूट गयो फंद गजराजको एकही वार रामनाम उर आनेसे । शिशुपालको मारो प्रतिज्ञा राखी वचनकी प्रेमसों रुक्मणिके राम ओर धानेसे॥पत्थरसे उत्तम तन पायो अहिल्याने केवल दृढ निश्चय रामनाममें लानेसे । परमगति पाई निर्भयराम तुलसीदासने एक रामनामहीके सदा गुण गानेसे॥

॥ कवित्त ॥

सनकादिक ऋषियनको परम आनन्द हुआ रामहीके नाम का यथार्थ अर्थ पानेसे। पलटू दादू सूर सुन्दरदास और कबीरजी राममें जा मिले रामनाम सतमानेसे ॥ काशीमें निश्चयही मुक्त होजाय जो अंतसमय रामको नाम सुनपानेसे। निर्भयराम काहे तू भागे रामनामसे पारस होजाय रामनाम रसखानेसे ॥

॥ कवित्त ॥

भक्त जन अपनी अपनी भावना अनुसारही न्यारो न्यारो रूप धाम रामको संभारे हैं। मुनीजन सच्चित् आनंदरूप रामको उत्पत्ति और लयचिंतन कर हृदयमें विचारे हैं॥योगीजन प्राण-

नको स्थित कर कपालमें रामको प्रकाशरूप त्रिकुटीमें निहारे हैं । परमहंस रामहीको रूप लखें सर्व ठौर नाना नाम रूपकी कल्पना बिडारे हैं ॥

॥ कवित्त ॥

दक्षिणहूमें रामहै और उत्तरहूमें राम है पूर्वहूमें रामहै और पश्चिमहूमें राम है । नेरेहू रामहै अनेरेहू राम है बाहरहू है राम और भीतरहूरामहै ॥ देशहूमें रामहै परदेशहूमें रामहै लोकहूमें राम है परलोकहूमें राम है । तोमेंहू राम है और मोमेंहू राम है यामेंहू राम और वामेंहू राम है ॥

॥ कवित्त ॥

मथुरामें जो राम जो राम अवध द्वारिकामें पुष्करकैलास कासी वृन्दावन कश्मीरमें । बद्रीकेदार जगन्नाथ गोकुल नैमिषारण्य विंध्याचल हिमाचल और मंदराचलके तीरमें ॥ गंगा यमुना नर्दमा कावेरी सरयू गोमती गंडक गोदावरी त्रिवेणीके नीरमें । इंद्रलोक शिवलोक वैकुंठ ब्रह्मलोकमें वाही राम बैठो या प्राणीके शरीरमें ॥

॥ कवित्त ॥

ऊखमें मधुराई जैसे सेंधेमें है नमकापन तिलनमें है तेल और शीतलता ओलेमें । नींबमें कडवापन जैसे मिर्चमेंहै तीक्षणता दूधमें है घृत और सुगन्ध है बेलेमें ॥ आंममें खटाई जैसे अग्निमें है उष्णता शोरेमें खारापन रूई है बिनौलेमें । काष्ठमें अग्नि जैसे बीजमें वृक्ष छिपा ऐसेही राम छिपा प्राणीके चोलेमें ॥

॥ कवित्त ॥

बुदबुदे तरंग जलमें जलते न भिन्न कभू जलहीने प्रत्यक्ष न्यारो न्यारोरूप धारा है । सोरणके भूषण जेते सोरण ही नित्य रहै दीपकसे पृथक् नहीं दीपकका उजाराहै ॥ काठही

कठौती जैसे काठही मानी जाय माटीके बर्तन सर्व माटीका पसारा है । निर्भयराम जीव जेते रामहीको रूप जान रामसे अभिन्न ईश और विश्वसारा है ॥

॥ कवित्त ॥

अपनी हरएक स्वांस पर तू रामहीको ध्यान रख जहाँ स्वांस ठहरे वहां रामही पहिचान तूस्वासहीमें आठों याम वास रहे रामको अन्तर और बाहर दोनों ठौर सत्य जान तू॥ स्वांसही-के ध्यानते होजाय ज्ञान रामको स्वांसहीको पकड रहो यही सीषमान तू। ज्ञाननमें बाला है योगनमें आला है निर्भयराम निश्चयकर रामको चित्त आन तू ॥

लाव०—अमात्र मात्रका रूप प्रथम पहिचानो ।
पश्चात् अर्थको रामनामके जानो ॥
उत्पतिसे लय चिंतन चित्त समावे ।
तब अस्ति भाति प्रिय भाव रहिजावे ॥
इस भावको निदध्यासनसे निश्चय लावे ।
निश्चय पूरी हो साक्षात् दरसावे ॥
यूं मनन नासका करे वही मुनिसानो ।
पश्चात् अर्थको रामनामके जानो ॥
रामनामसे स्थित विराट सारा ।
इस रामनामकी महिमा निर्भयराम अपारा ॥
क्या अर्थ कहूँ इसमें कछुहू नहिं न्यारा ।
यूंही काशी सेवन गिने मोक्षका द्वारा ॥
दें राम फूंक शिव कानमें मरतीबारा ।
यही नाम सार है समझ यूंही भ्रम मानो ॥
पश्चात् अर्थको रामनामके जानो ॥

॥ गजल ॥

गुम करदे जो तकदीरको तदबीर उसे कहते हैं ।
तदबीरसे जायद न हो तकदीर उसे कहते हैं ॥
सब झूठी है कागजकी क्या मिट्टीकी क्या पत्थरकी ।
बुत होरहे तसव्वुरमें तस्वीर उसे कहते हैं ॥
दुनियांको अगर कत्ल करे घाटकी ओछी है ।
काटे जो अहंकारको शमशीर उसे कहते हैं ॥
कहता है खुदा खुदसे जुदा जान अधूरा है ।
दिखलादे जो खूदहीमें खुदा पीर उसे कहते हैं ॥
सौपर्त अगर तोडदे फौलादके तो क्या है ।
तोडे जो फकत पर्दा दुई तीर उसे कहते हैं ॥
है यूं तो बहुत वेदोंकी तस्फीर मगर जिस्से ।
तसदीक अनहल कहो तफसीर उसे कहते हैं ॥
जो कहता है मैं इन्द्र हूं तौकीर कहां उसकी ।
मैं हूं यह गुमां मिट जाय तौकीर उसे कहते हैं ॥
है आबो हवा ठंडी तौ काश्मीर नहीं साहब ।
ठन्डा हो कलेजा जहां कश्मीर उसे कहते हैं ॥
दुनियां है सरा निर्भय तू जागीर समझता है ।
कब्जेमें हमेश रहे जागीर उसे कहते हैं ॥

॥ रुबाई ॥

भगवतका भजन हो और शाही क्या है ।
खानेको अगर है जौ बुराई क्या है ॥
तकदीरपे खबर तमन्ना मिटजाय ।
जब ऐसा चलन हो फिर गदाई क्या है ॥

खुदको पहिचान खुदनुमाई मत कर ।
बरतर और इससे पारसाई क्या है ॥
दम भरका नहीं भरोसा निर्भय जिसका ।
उस देहसे तेरी आशनाई क्या है ॥

॥ होली ॥

घटमें कैसो फाग मचोरी ।
घन घन नौबत झडने लागी अनहद धुन टनकोरी । सोहं
सोहं सोहं सोहं सोहं हं चहुँ ओरी, शून्यमें शोर पडोरी ॥
घटमें कैसो फाग मचोरी ।
बाजत बीन मृदंग मुरलिया शंख झाँझ ढप घोरी । सुरतनिरत
कर पियाको रिझावे नैननमें चोराचोरी, मोहनीमंत्र पढोरी ॥
घटमें कैसो फाग मचोरी ।
उतसों पिया इतसों मैं धाई प्रेम गुलाल भर झोरी । ज्ञानको
रंग ध्यानसों छिडको तार तार दोऊबोरी।पागपियाचूनरमोरी ॥
घटमें कैसो फाग मचोरी ।
झटपट बैयां डार गलेमें मुख चूंबो बाराजोरी।निर्भय लिपट
चिपटकर पियासों सोरहों रात रही थोरी,होनेदोऐसेहीहोरी ॥
घटमें कैसो फाग मचोरी ।

॥ होली ॥

घर आए पिया मैं तो खेलूँगी फाग ।
सोतीथी प्रमादकी निंदिया, अकस्मातसे जागे हैं भाग ॥
घर आए पिया मैं तो खेलूँगी फाग ।
शुभकी घडी मैं सगुन मनाऊं, क्या बोले उडजारो काग ॥
घर आए पिया मैं तो खेलूँगी फाग ।
लाओ सखी प्रेम रंग बोरूं अपनी, चुनर और पियाकी पाग॥

घर आए पिया मैं तो खेलूँगी फाग।
मैं पियाकी पियाकी पिया, मोरे निर्भय होने दोयाही राग॥
घर आए पिया मैं तो खेलूँगी फाग।

॥ पद॥

ऊधोजी मैं बैरागन हरकी।
मेरी बिथा कहा तुम जानो, बाला यौवन योहीं गवानों।
अब जबते आपा पहिचानो, नजर पडी गिरधर की॥
ऊधोजी मैं बैरागन हरकी।
छतियां धडकत माथा ठनकत, विरहानल अति भरकी।
पटकी लटकी खबर नहीं है, सुध नहीं नथबेसरकी॥
ऊधोजी मैं बैरागन हरकी।
सुख संपतिकी बात कहा है, साख गई पीहरकी।
पतिको हित छूटो मोह सुतनको, जा रही लाज सुसरकी॥
ऊधोजी मैं बैरागन हरकी।
तनका ध्यान ज्ञान मनका नहीं, प्राणनको पडी धुरकी।
निर्भय रामनामकी जोगन, घरकी ना बाहरकी॥
ऊधोजी मैं बैरागन हरकी।

॥ पद॥

सतगुरु हो मदिरा कौन पिलाई।
जबतें पी उतरी नहिं अजहूँ दिन दिन चढत सवाई।
सब संकल्प विकल्प क्षीन भये निर्विकल्पता छाई॥
सतगुरु हो मदिरा कौन पिलाई।
ना कछु विधि निषेध कछु नाहीं समता हिये समाई।
द्रष्टा दर्शन दृश्य भ्रम मेटो भेद बुद्धि बिसराई॥
सतगुरु हो मदिरा कौन पिलाई।

मन बाणीकी गम्य कहां है महिमा कही न जाई ।
चिदानन्द घन भाव हमारा चहुँ दिशि देत दिखाई ॥
सतगुरु हो मदिरा कौन पिलाई ।
सब धुनि छोड राम धुनि गहकर ज्ञान समाधि लगाई ।
जीव ब्रह्म ईश्वर एकही है निर्भय राम दुहाई ॥
सतगुरु हो मदिरा कौन पिलाई ।

॥ पद ॥

मेरा कछु नाहीं प्रभु तेरी प्रभुताई है ।
तूनेही तो विश्व रचा तूही विश्वरूप हुवा ।
तेराही तमाशा सारा तूही तमाशाई है ॥
मेरा कछु नाहीं प्रभु तेरी प्रभुताई है ।
ध्यान है हर आन तेरा हरदम है बयान तेरा ।
जबसे हुआ ज्ञान तेरा निर्भय समझ आई है ॥
मेरा कछु नाहीं प्रभु तेरी प्रभुताई है ॥

॥ पद ॥

जो कोई चितसे मोय ना बिसारे ।
मैं ना बिसारूँ प्रण है यही मेरा ॥
धर्मप्रिय हो धर्म बढाऊँ, सुफल कार्य करूँ अर्थ बताऊँ ।
मुक्ती चाहै पार लगाऊँ, क्षण पल मांहि न लागत बेरा ॥
जो कोई चितसे मोय ना बिसारे ।
मैं ना बिसारूँ प्रण है यही मेरा ॥
रोग हरूँ चिंताको टारूँ अभय करूँ शत्रुनको मारूँ ।
निर्भय भक्त जन वेग उभारूँ, सेवा करूँ आप बन चेरा ॥
जो कोई चितसे मोय ना बिसारे ।
मैं ना बिसारूँ प्रण है यही मेरा ॥

॥ पद ॥

जागते रहना मुसाफिर यह ठगोंका ग्राम है।
आँखें खोलो लाडले क्या खावे गफलतमें पडा।
दिन तो सारा होचुका अब सिरपे आई शाम है॥
जागते रहना मुसाफिर यह ठगोंका ग्राम है।
तुझसा गाफिल आजतक हमने कभू देखा नहीं।
रहनेवाला है कहाँका क्या तुम्हारा नाम है॥
जागते रहना मुसाफिर यह ठगोंका ग्राम है।
जाहिलोंकी बात क्या है लुटगये आकिल यहाँ।
तुझको जो सूझे सो कर कहनाही अपना काम है॥
जागते रहना मुसाफिर यह ठगोंका ग्राम है।
तन बरहना खाली हाथों सोनेका कछु डर नहीं।
सोच है निर्भय यही अंटीमें तेरे दाम है॥
जागते रहना मुसाफिर यह ठगोंका ग्राम है।

॥ पद ॥

मिलना कठिन है साधो कैसे मिलों पिया जाय।
दश मंजिलके पार गगनमें हमसे चढा न जाय।
निर्गुण निराकार स्थल है पाव नहिं ठहराय॥
मिलना कठिन है साधो कैसे मिलों पिया जाय।
दुर्गम देश पंथ है झीना जियरा अति घबराय।
शून्य महलमें सेज पियाकी सूझत नाहिं उपाय॥
मिलना कठिन है साधो कैसे मिलों पिया जाय।
जबलग हंसा बोलत चालत सुरत नहीं बिसराय।
मौन गहे निश्चल हो जावे फिर कछु नाहिं बसाय॥

मिलना कठिन है साधो कैसे मिलों पिया जाय ॥
सत्चित् आनंद भाव पियाको निर्भय गयो समाय।
कैसा नाम रूप गुण कैसो हमको कछु ना सुहाय ॥
मिलना कठिन है साधो कैसे मिलों पिया जाय ॥

॥ पद ॥

नाथ कहो कैसे भ्रम छूटे। निजस्वभाव मनवा नहिं त्यागे।
विषय आनंदको छोडत नाहीं, ब्रह्मानन्दसे कोसों भागे ॥
नाथ कहो कैसे भ्रम छूटे। निजस्वभाव मनवा नहिं त्यागे।
आतम देव दुखी लघु भासे, अरु प्रपंच चेतन सतलागे ॥
नाथ कहो कैसे भ्रम छूटे। निज स्वभाव मनवा नहिं त्यागे।
हठ करते करते दिन बीते, सहजसी बात सुरत नहिं पागे ॥
नाथ कहो कैसे भ्रम छूटे। निजस्वभाव मनवा नहिं त्यागे ॥
निर्भयराम बडा राग लगोहै, सुखसों सोवत दुखसे जागे।
नाथ कहो कैसे भ्रम छूटे। निजस्वभाव मनवा नहिं त्यागे।

॥ पद ॥

मोरी गुइयाँ हो श्यामसों लागे बैरी नैन।
जब लागे तब कछुहु न जानी, अब लागे दुख दैन ॥
मोरी गुइयाँ हो श्यामसों लागे बैरी नैन।
साँवरी सूरत माधुरी मूरत, मनमें फिरत दिन रैन ॥
मोरी गुइयाँ हो श्यामसों लागे बैरी नैन।
लखो नहिं जात लाजकी मारी, विन देखे नहिं चैन ॥
मोरी गुइयाँ हो श्यामसों लागे बैरी नैन।
कैसे कहूँ कोई समझत नहीं, म्हारे जियाकी सैन ॥
मोरी गुइयाँ हो श्यामसों लागे बैरी नैन।

निर्भयरामकी सगुन मुरलिया, बोलत निर्गुण बैन ।
मोरी गुइयाँ हो श्यामसों लागे बैरी नैन ॥

॥ पद ॥

चलत बनत नहिं जिया घबरावे,
ज्ञानका पंथ कृपाणकी धारा ।
जब सत्असत्असत्सत् होवे, तब प्रकटै चहूँदिशिउजियारा॥
चलत बनत नहिं जिया घबरावे,
ज्ञानका पंथ कृपाणकी धारा ।
जोग न भोग न भक्ति न शक्ति,निरालम्ब निर्गुण निराधारा॥
चलत बनत नहिं जिया घबरावे,
ज्ञानका पंथ कृपाणकी धारा ।
कैसे हो अनुमान बताओ, अगम अगोचर अलख अपारा ॥
चलत बनत नहिं जिया घबरावे,
ज्ञानका पंथ कृपाणकी धारा ।
निर्भयराम सकल हठ त्यागो, सहज स्वभाव मिटे भ्रम सारा॥
चलत बनत नहिं जिया घबरावे,
ज्ञानका पंथ कृपाणकी धारा ।

॥ गजल ॥

अब तो यकताई मेरे दिलमें समाई तेरी ।
हूबहू शक्ल पडी यार दिखाई तेरी ॥
आतशेहु सब सजानों जिगर क्यों जले ।
लौ गजब इशकने सीनेमें लगाई तेरी ॥
देखते देखते बुत बन गया हैरत नई ।
किस मुसव्विरने यह तस्बीर बनाई तेरी ॥

तोडे आईनेको है वस्लकी ख्वाहिश जिसको ।
तेरी तस्वीर न तस्वी बनाई तेरी ॥
मौत समझाथा जिसे अस्लमें जीना निकला ।
होके मादूम हकीकत नजर आई तेरी ॥
सारी सूरत हुई निर्भयकी निगाहोंमें फना ।
जानेजा जबसे हुई चश्मनुमाई तेरी ॥

॥ पद ॥

जो कोई निर्गुण झर लख पावे ।
शोरमें शून्य होरहे न बोले, पश्यंतीसे परे टटोले ।
सोहं सोहं हंसा बोले, शून्यमें शोर मचावे ॥
जो कोई निर्गुण झर लख पावे ।
नन रूपसे हटा न देखे, आरोपत सत्ता सब छेके ।
ऐसो छबि अनुभवसे पेखे, निरखत नाहिं अघावे ॥
जो कोई निर्गुण झर लख पावे ।
सारे रस और रसना त्यागे, गन्ध स्पर्श रहै नहिं आगे ।
तुरत अमीरत झरने लागे, चाखतही छक जावे ॥
जो कोई निर्गुण झर लख पावे ।
जो योगी इस पदका मीता, समझागया है पूरी गीता ।
निर्भय जीति जी तू जीता, आवागमन नसावे ॥
जो कोई निर्गुण झर लख पावे ।

॥ पद ॥

सुनो भाई संतो अक्षर पदका विचार ।
नित्य शुद्ध शिवरूप निरंजन, निर्विकल्प निश्चय भवभंजन ।
अजर अमर अज निर्गुण, निर्मल निर्विशेष निराधार ॥

सुनो भाई संतो अक्षर पदका विचार ।
विभु अनन्त अद्वैत अविनाशी, पुरुषोत्तम स्वतंत्रसुखराशी।
स्वयं प्रकाश असंग अनादी, निष्क्रिय निराकार ॥
सुनो भाई संतो अक्षर पदका विचार ।
पूरण ब्रह्म अचिंत्य अरूपा, अप्रमेय अव्यक्त अनूपा ।
निराकार निरवयव सनातन, अगम अखण्ड अपार ॥
सुनो भाई संतो अक्षर पदका विचार ।
सच्चिदानन्द निरीह अनामी, अलख अगोचर अन्तर्यामी ।
घट घट अन्तर निर्भय बोले, हँस हंस पुकार ॥
सुनो भाई सन्तो अक्षर पदका विचार ।

॥ पद ॥

जाय नरतन मानत आप रूप भगवान है ।
अहंकारने जबते घेरो, कहने लगो मेरो और तेरो ।
भूल गया निजरूप अनारी, तू सर्वज्ञ सुजान है ॥
जाय नरतन मानत आप रूप भगवान है ।
भली बुरी करनी जब कर है, बंधनमें तब हो तो पर है ।
निष्क्रियको ना कछु डर है, तोको तो कर्मकी आन है ॥
जाय नरतन मानत आप रूप भगवान है ।
मैं हूँ देह या देह है मेरी, केवल यही भूल है तेरी ।
पंचतत्त्वकी यह तो ढेरी, जान क्यों भया अज्ञान है ॥
जाय नरतन मानत आप रूप भगवान है ।
नाम रूप कछु नहीं तिहारो, पञ्च कोशते होजा न्यारो ।
सतचित् आनँदभाव सँभारो, निर्भय यह निर्मल ज्ञान है ॥
जाय नरतन मानत आप रूप भगवान है ।

॥ लावनी ॥

एक कलम जाहिर बातिन सबसे याराना छोड़ दिया।
फकत आपसे प्यार है सारा जमाना छोड दिया॥
चंदरोजा दुनियासे बिल्कुल दिलका लगाना छोड दिया।
बडा बहाना यही था अपना बिगाना छोड दिया॥
उन्से जिस्मोजा चला आता था बहुत पुराना छोड दिया।
हवासे खमसाका झूठा नाज उठाना छोड दिया॥
ऐसा ठिकाना मिला है मुझको हरएक ठिकाना छोड दिया।
फकत आपसे प्यार है सारा जमाना छोड दिया॥
विर्देदुआओ नमाजो संध्या माला फिराना छोडदिया।
दैरो हरममें गिरजामें दिल भटकाना छोडदिया॥
पीके जामे उल्फत जाना सूये मयखाना छोडदिया।
दीनी दुन्यबी मयसे भरना पैमाना छोड दिया॥
नशाएशोंके दीदारमें दिलको कर मस्ताना छोडदिया।
फकत आपसे प्यार है सारा जमाना छोडदिया॥
राहतमें खुश होना सख्तीमें रंज बताना छोड दिया।
जर जमीनों जनतीनोंपे दिलका लुभाना छोड दिया॥
आतशेबुरजो हसदसे नाहक जिगर जलाना छोड दिया।
पेशे मुकद्दर सोच करना पछताना छोड दिया॥
झूठे बखेडे झगडोंमें तबिअतका फँसाना छोड दिया।
फकत आपसे प्यार है सारा जमाना छोड दिया॥
बाबेइश्कको पढकर पढाना हर एक फँसाना छोड दिया।
राहे बफामें बढाकर कदम हटना छोड दिया॥
एक रंग रंगलिया दूसरा रंग रँगाना छोड दिया।
यकीन कामिल हो गया अब घबराना छोड दिया॥

निर्भय देके दिल बैठरहाहै फिरना फिराना छोड दिया ।
फकत आपसे प्यार है सारा जमाना छोड दिया ॥

॥ गजल ॥

समझमें जिस बशरके खूब शब्द ॐ कार आता है ।
उसीसे सिर्रेहक्का ठीकठीक इजहार आता है ॥
जो अपनी आत्मासे हो विमुख यकबार आता है ।
वो लख चौरासीके चक्करमें सौ सौ बार आता है ॥
ये माना जौफ है जो तुझको गश हरबार आता है ।
मगर अय दिल सिंभल अब कूँच ए दिलदार आता है ॥
जिन आंखोंमें तेरा रंग गैरते गुलजार आता है ।
उन आंखोंमें नजर हरे गुलाब शक्के खार आता है ॥
खता सब भूल जाते हैं निहायत प्यार आता है ।
बशर जब खम किये गर्दन सरे दर्बार आता है ॥
जहांमें और हूँ आप और है तकरार आता है ।
वो हैरां होते हैं आइना सौ सौ बार आता है ॥
खयाले गैरो खुदसे पाक हो दुनियां जो देखे है ।
मुझे उल्फत उसीकी है उसीपर प्यार आता है ॥
बशर फँस जाता है खुद आपही अपनी तमन्नामें ।
वहांसे जब बशर आता है खुदमुखतार आता है ॥
मिटैं जब दाग दिलके हरिका तब हरजा तसब्बुर हो ।
जो है बेदाग कपडा उसपे रंग एकसार आता है ॥
अगर ख्वाहिस नहीं हैं दिलसे उनको मेरे मिलनेकी ।
मेरे नाम उनका हरयेक स्वांसमें क्यों तार आता है ॥
जलाना उसको कहते हैं जो जीतेको जला देवे ।
बशर मुर्देके कालिबको जला लाचार आता है ॥

है कज बीना यहां गुल और वहांपर खार देखे हैं ।
मुझे जलवा तेरा यकसा नजर सरकार आता है ॥
वही है तत्त्व–वेत्ता और वक्ता चारों वेदोंके ।
सुनाई जिनको हरयक रोममें ॐकार आता है ॥
ये दुनिया है नहीं पर दीखती है इसतरह साहिब ।
के जूं अज्ञात रस्सीमें हो सर्पाकार आता है ॥
महलका बन्द दर्वाजा किये खिलवतमें बैठे हैं ।
और हरदम ठचौढीवानोंसे यही तकरार आता है ॥
कोई कितना पुकारे खोलना हरगिज न कुंडीको ।
भला देखें वहां फिर कौनसा मक्कार आता है ॥
कहा मैंने यह धमकी दीजिये जाहिर परस्तोंको ।
जो आशिक है वो साहिब फांदकर दीवार आता है ॥
मुझे यह ज्ञान तेरे होनेसे वो सुख हुआ हासिल ।
जो बेगारीको हो जब फेंककर बेगार आता है ॥
जो भगवत आपमें देखे है निर्भय फिर जरूर उसको ।
नजर भगवतका हरएक चीजमें दीदार आता है ॥

॥ पद ॥

मोको डर है अति वाही दिनको ।
जौ दिन हंसा कालके वस हो त्यागे पिंजरा तनको ।
मोह प्रबल हो निरखत निरखत बांधव नारिसुतनको ।
बाढलोभ तक तक इत उत गृह भूषण वसन बहुधनको ॥
मोको डर है अति वाही दिनको ।
जागे काम अनेक रूप हो चिंता लागे मनको ।
छाय क्रोध सुध बुध बिसराये व्याकुल करे प्राननको ॥

मोको डर है अति वाही दिनको ।
हाहाकार सुन बाहर भीतर कष्ट होत काननको ।
यमके दूत देखकर सन्मुख भय उपजे नैननको ॥
मोको डर है अति वाही दिनको ।
निर्भय राम छाड क्यों न देवे झूंठा संग सबनको ।
असंगको भय नेकहु नाहीं मानो वेदवचनको ॥
मोको डर है अति वाही दिनको ।

॥ पद ॥

संतोंका मता निराला है ।
प्राणोंकी असवारी आसन, प्राणोंकी चिंतन निदध्यासन ।
प्राणोंकी ध्वनि बीजमंत्र है, प्राणोंकी गति माला है ॥
संतोंका मता निराला है ।
ऊर्ध्वमुनि प्राण धरें हैं ध्याना, अधमुनि प्राण करें परणामा ।
प्राणोंका पति महादेव है, प्रागस्थान शिवाला है ॥
संतोंका मता निराला है ।
प्राणही जीवन प्राणही काल, प्राणनहींमें है उजियाला ।
प्राणनहींसें शीतलता है, प्राणनहींसें ज्वाला है ॥
संतोंका मता निराला है ।
प्राणनमें इंजील कुराना, प्राणनहींमें वेद पुराना ।
निर्भयराम इष्ट प्राणोंका, सब ज्ञाननमें आला है ॥
संतोंका मता निराला है ।

॥ पद ॥

प्यारे मन रणमें चौकस जाना ।
नाम विवेक हमारा कहिये पायक परम प्रधाना ।
सत्यलोक है लोक हमारा अविनाशी सुलताना ॥

प्यारे मन रणमें चौकस जाना ।
तीन लोक मायाने जीते तृष्णा अति बलवाना ।
साधु संत अवधूतहु लूटे बांच लेहु परवाना ॥
प्यारे मन रणमें चौकस जाना ।
राग द्वेष सेनापति ऐसे मारें सन्मुख बाना ।
अभिनिवेश अस्मिता मंतरी कठिन बडो मैदाना ॥
प्यारे मन रणमें चौकस जाना ।
क्षमा अर्जव दया दोष सत् पांचों शस्त्र लगाना ।
ज्ञान विमान बैठ धीरजसों निश्चय जोर जमाना ॥
प्यारे मन रणमें चौकस जाना ।
निर्भय प्राण रहे या जावें नेकहु मत घबराना ।
सोहं तुझसे कहे देतहैं पाय है पद निर्वाणा ॥
प्यारे मन रणमें चौकस जाना ।

॥ होली ॥

श्यामसों मेरा नेहा लगो री ।
सास लडो ननदी क्यूं न रूठो बलमा रार करो री ।
देवरा दौरनिया जिठनियासो बिगरो ब्रजवनिता एक ठौरी,
सभी मिल लाख कहोरी॥ श्यामसों मेरा नेहा लागो री ।
साख गई जाने दो निगोडी लाज रहो न रहो री ॥
सुख संपतिकी बात कहा है धीरज बिछुर गयो री ।
प्राण नहिं मानत मोरी॥श्यामसों मेरो नेहा लगो री॥
प्रेम प्रतीत टरे नहिं टारी नीतिकी रीति टरो री ।
चाहे अचल मही चल जावे शीतल चन्द्र तपो री ॥
भावें नभ टूट पडो री ॥ श्यामसों मेरो नेहा लगो री ।
ज्ञानसों जान लियो हां लियो है ध्यानसों देख लियोरी॥

निर्भय रामको जाने न दूँगी बिन होरी खेले सखी री ।
विधिके अंग मिटो री ॥ श्यामसों मेरा नेहा लगो री ॥

॥ पद ॥

मुझको कहां देखे मूरख मैं तो तेरे पासमें ।
काबेमें न मसजिदमें मन्दिरमें न गिरजामें ।
निश्चय जो कोई ढूंढे मुझको ताय मिलूं विश्वासमें ॥
मुझको कहां देखे मूरख मैं तो तेरे पासमें ।
मुझसे क्या पूछे है गाफिल समझके देख अगर है अकिल ।
सोहं सोहं सोहं सोहं बोलत हूँ हर श्वासमें ॥
मुझको कहां देखे मूरख मैं तो तेरे पासमें ।
श्रुतिका प्रमाण ले बुद्धिसों हृदयपटमें तू छानले ।
मैंही जीव या तनके अन्दर देव मैंही कैलाशमें ॥
मुझको कहां देखे मूरख मैं तो तेरे पासमें ।
सतगुरु तोहि सीख देत निर्भय क्यों नहिं मान लेत ।
जैसा हित स्वामीमें राखे तैसाही रख दासमें ॥
मुझको कहां देखे मूरख मैं तो तेरे पासमें ।

॥ पद ॥

गगरिया मोरे सिरकी उतारी लो न जात ।
घर तो है दूर गागर सिर भारी, कैसे करूँ मोरा जिया घबरात॥
गगरिया मोरे सिरकी उतारी लो न जात ।
निशिदिन रिमझिम मेहा बरसे, निपट अँधेरा नहिं सूझे बाट॥
गगरिया मोरे सिरकी उतारी लो न जात ।
किस बिध चलूं राह रपटीली, फिसल जात नहिं पग ठहरात॥
गगरिया मोरे सिरकी उतारी लो न जात ।

निर्भय रहो और कछु नाहीं, तेराही भ्रम तुझे भरमात ॥
गगरिया मोरे सिरकी उतारी लो न जात ।

॥ लावनी ॥

जिसकी रौशनी है लैलोनहार ।
वो चश्मे यारमें जलवा है जी ॥
चींटीसे ब्रह्मातक जितने जीवोंका प्रमान ।
चश्में गौरसे देखा सरतापा पुतले बेजान ॥
जिलाती मुर्दोंको हरबार गजब रफतारमें जलवा है जी ॥
जिसकी रौशनी है लैलोनहार ।
वो चश्में यारमें जलवा है जी ॥
दिलावेज मीठी मीठी लहरें चढती हैं यार ।
तनसे जान खिंचती है रसभरे बोल सुनके सरकार ॥
बेखुदीके होते आसार, गजब गुफतारमें जलवा है जी ॥
जिसकी रौशनी है लैलोनहार ।
वो चश्मे यारमें जलवा है जी ॥
पर तोफिगन हो दिलमें तजल्ली तारकी मिट जाय ।
कहे सुने कुछ बन नहिं आवे नूरही नूर दिखाय ॥
चश्मए नूरनूरुल अनवार गजब रुखसारमें जलवा है जी ॥
जिसकी रौशनी है लैलो नहार ।
वो चश्मे यारमें जलवा है जी ॥
महब यहीं होजाता है तालिबको देख मतलूब ।
पद अवाच्य निर्भय है आगे चुप हो जाना खूब ॥
हुआ राजे मखफी इजहार गजब दीदारमें जलवा है जी ॥
जिसकी रौशनी है लैलो नहार ।
वो चश्में यारमें जलवा है जी ॥

॥ पद ॥

जैसे तैसे गुजर जायगी योंही तेरी गुजरान वे ।
चिंता कर कछु हाथ न आये, होनहार ना मिटे मिटाये ।
सावधान हो हरि सुमरन कर, तज दे मान अपमान वे ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी० ।
भोर होत चल देना खासा, रैन मात्र कितहू कर वासा ।
क्या मंदिर क्या बाग बगीचा, झोपडी क्या मैदान वे ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी० ।
शरीरका हो जा रखवाली,वस्त्रमात्र मिल जाये खाली ।
क्या मलमल क्या गजी अधातर, क्या कंबल अलवानवे ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी० ।
भोजन जो कुछ मिले सो खावे, प्राणनका पालन हो जावे ।
चना चबेना साग पात क्या, क्या मेवा मिष्टान वे ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी० ।
अष्ट प्रहर निरंतर रटना, हरीभजनसे कभी न हटना ।
और प्रमाण सभी बातोंका, याको नहीं प्रमाण वे ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी० ।
नाम रूप गुणते है न्यारा, सच्चित् आनंदरूप हमारा ।
निर्भयराम रामकी सौगंद, यही तो निर्मल ज्ञान वे ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी योंही तेरी गुजरान वे ।

॥ पद ॥

श्रवण करो चारों वेदकी बानी ।
ब्रह्मा विष्णु महेशकी अनुभव सनकादिककी मानी ॥
तत्त्वं असी महावाक्यने अभेदता दिखलानी ।
जो वो है सोई तू है यामें सामवेद परमानी ॥

श्रवण करो चारों वेदकी बानी ।
ब्रह्मा विष्णु महेशकी अनुभव सनकादिककी मानी ॥
अहंब्रह्म अस्मीश्रुतीने मेरी भूल भुलानी ।
यामें संशय कोई मत करना यजुर्वेद बतलानी ॥
श्रवण करो चारों वेदकी बानी ।
ब्रह्माविष्णु महेशकी अनुभव सनकादिककी मानी ॥
प्रज्ञानम् आनन्द ब्रह्म हूँ मोय कछु लाभ न हानी ।
ऋग्वेदमें साफ लिखा है निश्चय बडी पुरानी ॥
श्रवण करो चारों वेदकी बानी ।
ब्रह्मा विष्णु महेशकी अनुभव सनकादिककी मानी ॥
अयं आत्मा ब्रह्म पुकारत वेद अथर्वण जानी ।
निर्भय राम यामें नहिं संशय ब्रह्मही ब्रह्मज्ञानी ॥
श्रवण करो चारों वेदकी बानी ।
ब्रह्मा विष्णु महेशकी अनुभव सनकादिककी मानी ॥

॥ पद ॥

राम प्राण चिन्ता मोहो अष्ट प्रहर लागी ।
हृदय बीच मचत फाग; नासिकाके अग्रभाग ।
रवि चन्द सखियनबिच, बुद्धी अनुरागी ॥
राम प्राण चिंता मोहे अष्ट प्रहर लागी ।
बाह्यन्तर ध्यान छोड, सखियनसों नेह तोड ।
प्रीतमके प्रेम रूप, रंग सुरत पागी ॥
राम प्राण चिंता मोहे अष्ट प्रहर लागी ।
कुलवन्ती लाज भरी, पियाकी सेज सोय रही ।
झपक नैन मौन भई, आपही आप जागी ॥
राम प्राण चिंता मोहे अष्ट प्रहर लागी ।

उदासीन वृत्ति गहे, बोले और न मौन रहे ।
मिला और न दूर कहे, निर्भय बैरागी ॥
राम प्राण चिंता मोहे अष्ट प्रहर लागी ।

॥ पद ॥

केशव बिधना रची सोई हुई है ।
तुमसे नाहीं छिपी करुणानिधि, औरनतें कहा कहिये ॥
केशव बिधना रची सोई हुई है ।
कथन मात्र मायाकी रचना, क्या त्यागे क्या गहिये ॥
केशव बिधना रची सोई हुई है ।
तुम्हरी शरण यही सब कुछ है, इतर कछू नहिं चहिये ॥
केशव बिधना रची सोई हुई है ।
निर्भय प्रीतिकी रीति कठिन है, जान बूझ चुप रहिये ॥
केशव बिधना रची सोई हुई है ।

॥ पद ॥

आली घनश्यामके संग चलो, अब सोच कहा जो भई सो भई ।
बइँया मरोरी चुरियां फोरी, चोली मसक २ करी चोरी ।
माखन खाय मटकिया तोरी, चूनर झटक दई सो दई ॥
आली घनश्यामके संग चलो, अब सोच कहा जो भई सो भई ।
निशदिन ननदी सास लरत हैं, बगर परोसन नाम धरत हैं ।
ब्रजबनिता मिल हास्य करत हैं, जान दो लाज गई सो गई ॥
आली घनश्यामको संग चलो, अब सोच कहा जो भई सो भई ।
रैन अँधेरी इँदियन घेरी, नइया नहीं नदिया अति गहरी ।
पवन चलत सनसन चहुँ ओरी, दामिन दमक रही सोरही ॥
आली घनश्यामके संग चलो, अब सोच कहा जो भई सो भई ।

धीर धरो चिंताको टारो, निर्भय रामका वचन विचारो ।
घट घट वाही बंसीवारो, चुप हो रहो जो कही सो कही ॥
आली घनश्यामके संग चलो, अब सोच कहा जो भई सोभई॥

॥ लावनी ॥

योंहि मथुरा प्रयागमें भूला फिरे ।
तुझे आपनी तो यार खबरही नहीं ॥
वो तो घटहीके पटमें निहाँ है मियाँ ।
कुछ दूरो दराज सफरही नहीं ॥
इक काबेको जाताहै कहता हुआ ।
यहां नूरका तो मजह रही नहीं ॥
चलो चलिये मदीनेको और कहे ।
यहां जात हकीकीका घरही नहीं ॥
कोई काशीका अज़म करे है योंही ।
कही और शिव आता नजरही नहीं ॥
आओ देखे द्वारिका कोई कहे ।
किसी और जगह मिलै हरिही नहीं ॥
हर संगमें नूर निहां उसका ।
कुछ तूरपे खास हसरही नहीं ॥
वोतो घटहीके पटमें निहां हैं मियां ।
कुछ दूरो दराज० ॥ १ ॥
उसी नूरकी सारी है जलवः गरी ।
बजुज़ उसके तो किधरही नहीं ॥
हर जर्रेमें जर्रे फिशां है वही ।
कोई और इधर या उधरकी नहीं ॥

वोही चौदह तबकमें समाया हुआ ।
तेहि उससे कोई पैकरही नहीं ॥
लमाए जहांका है जिक्र यही ।
वोही हक है अगर या मगरही नहीं ।
है अर्जों समापे वो एक सिफत ।
असगरही नहीं अकबरही नहीं ॥
वो तो घटहीके पटमें निहां है मियां ।
कुछ दूरो दराज० ॥ २ ॥

ईसाईमें गो ईसाईसा है ।
ईसाई वो ता महशरही नहीं ॥
इसलाममेंभी इसलामसा है ।
बांधे दीनकी कोई सिपरही नहीं ॥
हां हिंदूमें हिंदूसा दीख पडे ।
वले हिन्दूपनेका असरही नहीं ॥
हर जात में जात उसीकी है ।
परजातकी उसको खबरही नहीं ॥
बहदहुला शरीक सिफत उसकी ।
कभी उसका हुआ हमसरही नहीं ॥
वो तो घटहीके पटमें निहां है मियां ।
कुछ दूरो दराज० ॥ ३ ॥

वो तो इल्म हि इल्मका दराया है ।
कहीं उसका कुतर या वतरही नहीं ॥
उसे नूरहि नूर समझ दिलमें ।
अखतरही नहीं खावरही नहीं ॥

तू तो शब्दसे रास्ता बुझ ले कुल ।
हक और कोई रहबरही नहीं ॥
और सूरतका साथ न छोड कभी ।
हक और कोई यावरही नहीं ॥
निर्भय हर स्वाँसमें बोलता है ।
सोहं सोहं मुनकिरही नहीं ॥
वो तो घटहीके पटमें निहाँ है मियाँ ।
कुछ दूरो दराज० ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

बागों मत जा तेरी कायामें गुलजार ।
सूर्यमुखी चन्द्रमुखी फूली, खिल रही अजब बहार ॥
बागों मत जा तेरी कायामें गुलजार ।
चेतन अंग सुगंध बसाये, झोके खात बयार ॥
बागों मत जा तेरी कायामें गुलजार ।
मुक्त कली लगी ज्ञान ध्यानसों, गलका गुंथ लेउ हार ॥
बागों मत जा तेरी कायामें गुलजार ।
हरी बेल कहीं सूख न जावे, निर्भय प्रेम जल डार ॥
बागों मत जा तेरी कायामें गुलजार ।

॥ पद ॥

मैं कैसे करूँ कहो वीर श्याम नहीं आवत हैं ॥
आवन आवन कहा गये थे हेरत रही हिराय ।
क्या जाने कब आयँगे री घर अँगना न सुहाय ॥
मैं कैसे करूँ कहो वीर श्याम नहीं आवत हैं ।
सर्बस अपना त्यागके मैं हरिसों कीनी प्रीती ॥
तापरभी आवत नहीं या कौन देशकी रीति ॥

मैं कैसे करूँ कहो वीर श्याम नहीं आवत हैं ।
लाज गई धीरज गयो प्राननकी पत नाहिं ।
हरि रीझत नहीं अय सखी री याको कौन उपाय ॥
मैं कैसे करूँ कहो वीर श्याम नहीं आवत हैं ॥
जिन ढूँढा तिनको मिले निर्भय राम जरूर ।
आज नहीं तो कल सही री चिंताको कर दूर ॥
मैं कैसे करूँ कहो वीर श्याम नही आवत हैं ।

॥ गजल ॥

तू जिसके लिये घरसे हैरान निकला ।
वो तेरे तो घरहीमें नादान निकला ॥
इलाही मेरे दिलका अज्ञान निकला ।
तू ना आशना जान पहिचान निकला ॥
जो मैं हूँ सो तू है जो तू है सो मैं हूँ ॥
तेरा कौल सच्चा मेरी जान निकला ॥
किसीसे वो मिलते नहीं और न बोलें ।
यह जाहिर परस्तो का बोः तान निकला ॥
टटोला कफन शा होपीरो गदाका ।
बजुत उस्तख्वां कुछ न सामान निकला ॥
न लुँगा कभी दर्क दिल चाहे कुछ हो ।
मेरा उनसे यह अहदोपैमान निकला ॥
जिबह करतेही हाय कतरा परोंको ।
तड़पनेका कुछभी न अरमान निकला ॥
तेरे घरसे पीकर पियाला जो निकला ।
वो मस्तान निकला या सुनसाम निकला ॥

किया उनको रागिब वो नगमा सुनाया।
ये मगैं दिल अपना खुश इलाहान निकला॥
वो हर बुतमें नुरे खुदा देखता है।
मैं समझा था हिंदू मुसल्मान निकला॥
जिसे पहिले समझे थे आराम निर्भय।
उसे अब जो देखा तो खल जान निकला॥

॥ गजल ॥

यह भारी और वो हलकी देख लो कोई रकम लेलो।
हैं दोनों साफ सौदे मौत लेलो चाहे गम लेलो॥
दिलो जाँ दीनो ईमाँ बेचता हूँ यार तुम लेलो।
तुम्हारी एक नजरपर मोल सबका है खतम लेलो॥
वसीयत है यही यारो लिखो कागज कलम लेलो।
मेरा लाशा उठाना तब जब उनको साथ तुम लेलो॥
गगनपर पहुँचकर कहते हैं हजरत इश्क यूँ मुझसे।
अब आ पहुँचे हैं कुए यारमें बेहतर है दम लेलो॥
मरी शरमों हया सबरो करारो आबरू साहिब।
तुम्हें पट्टा गुलामीका लिखे देते हैं हम लेलो॥
अजीजो जजबे दिलले जायगा खुद कुए कातिलको।
बराय नाम लाशा दोशपर दो दो कदम लेलो॥
तमन्ना मिट गई बिल्कुल तो अब वो मुझसे कहते हैं।
जमीसे लामकाँतक जितना है जाहो हशम लेलो
है कब मुमकिन लबोंका लेके बोसा कहदू गरोंसे॥
मैं मुँह सीलूँगा लेकर पहिले तुम कौलो कसम लेलो॥
कहां करते हैं बेखबरी जिसे निर्भयको अय जानो।
वोही देदो खुदाके वास्ते वहमो फलम लेलो॥

॥ होली ॥

मोरी नई चुनरिया बोर दई बडो होरीका खिलैया बिहारी रे ।
प्रेमका रंग दृगन बिच भर भर सैनन मारे पिचकारी रे ॥
मोरी नई चुनरिया बोरी दई बडो होरीका खिलैया बिहारी रे ।
कर झटको घूँघटवा खोलो चोली मसक बिगारी रे ॥
मोरी नई चुनरिया बोर दई बडो होरीका खिलैया बिहारी रे ।
ज्ञान गुलाल ध्यानसों मलकर लिपट जात देदे तारी रे ॥
मोरी नई चुनरिया बोर दई बडो होरीका खिलैया बिहारी रे ।
अपनी करत सुनत कछु नाहीं निर्भय भयो बनवारी रे ॥
मोरी नई चुनरिया बोर दई बडो होरीका खिलैया बिहारी रे॥

॥ कवित्त ॥

आये कछु हरष नहीं जाये कछु शोक नहीं,बडो ही निर्द्वन्द्व हूँ, समझनेकी बात है । देह नेह घेरे नहीं, लक्ष्मीके चेरे नहीं, सुत वनितादि मेरे नहीं,हरिसों कछु बसात है । लोककी रीति है,माननेकी प्रीति है,हार है न जीतिहै, जाति है न पाँति है । निर्भय यही ज्ञान है सत्य भगवान है, और कहा ज्ञानीके, सींग जम जात है ॥

॥ कवित्त ॥

प्रेमकीसेली पडी,ध्यानकाआसाहैं,लगनकी अगनमें,जियरा अति जरत है । विरहकी भस्म मली,प्राननतें अटकीहै,छिनहूँ घनश्याम बिन, कल नाहीं परतहै ॥ लाज गई धीर गयो, बुद्धि मन शरीर गयो,आप बिसरायो, कालहूँसो नाडरत है। सर्वका वियोग है, निर्भय यही जोग है, और कहा जोगी, कुछ जहर खा मरत है ॥

किस्मतसे झगडना नहीं, साईंसे लडना नहीं, मरनेसे डरना नहीं, किस्सा तमाम है । तेरा राम तेरे माहिं, यामें कछु संशय नाहिं, तेरा साही रूप है, तेराही हम नाम है ॥ रामहीके रूप सभी, रामहीके नाम सभी, निर्भय राम तुमको अगर, इसमें कलाम है। हिर्दैकी ओटमें, प्रेमकी चोटमें, झांक तो देख जरा, बैठा घनश्याम है ॥

क०—अहं ब्रह्मास्मी, प्रथमदृढ निश्चय करि, इदं सर्व अहं एक, पुनि सत्य मानिये । वासुदेव सर्वमिदं, भेदो नास्ति वास्तवं, अहं त्वं जीव ईश, कल्पना न आनिये ॥ अचल अनंत सम, सच्चित् आनंद घन, अद्वितीय पूरण ब्रह्म अनुभव रूप जानिये । तत्त्वका ज्ञान यही, देवका ध्यान यही, निर्भय-राम आपको, आप पहचानिये ॥

गजल—जिस दिनसे मन तुम्हारे मननसे निकल गया।
कांटोंमें फँस रहा है चमनसे निकल गया ॥
झोकासा एक हवाका तो सनसे निकल गया।
क्या बोलता था कौन बदनसे निकल गया ॥
पहुंचा कहां खयाल गगनसे निकल गया ।
आजाद हो गया है जतनसे निकल गया ॥
आजिम हूं वस्फका मैं किसी शह सवारके ।
सारा खयाल आगे कथनसे निकल गया ॥
मैं एकही अनेक हुआ दूसरा कोई नहीं ।
खदशा दुईका उनकी कहनसे निकल गया ॥
मजनू हुई है लैला किसे ढूँढती है तू ।
मुद्दत हुई है कैसे तो बनसे निकल गया ॥

खिचवाओ खाल चाहे मुझे खींचो दार पर ।
आशिक हूँ तेरा अब तो दहनसे निकल गया ॥
जोशे जिनूंसें शौक गजब दीदका हुआ ।
दीवाना कैद खानए तनसे निकल गया ॥
हस्तीके लोग कहते हैं मुझको अदममें देख ।
यह बावला बडा है वतनसे निकल गया ॥
मुझको मिलाके खाकमें कातिलने यूँ कहा ।
ये शख्स साफ आवाअगमसे निकल गया ॥
उनका निजेमेंभी न उठा रुखसे जब नकाब ।
मैंभी छिपाके मुँहको कफनसे निकल गया ॥
पीकर शराबे शौकको वो मस्त हो गया ।
दुनियाके निर्भय सारे चलनसे निकल गया ।

॥ गजल ॥

कहां खोले हैं साहिब हैं बँधे पर देखते जाओ ॥
तडपता है ये बिस्मिल फिरभी क्योंकर देखते जाओ ।
गला काटे है रुकरकर सितमगर देखते जाओ ॥
है लत्फो रहमका खंजरमें जौहर देखते जाओ ।
फलकपर चांद तारेका गुमां है एक आलमको ॥
तुम अपनी एकपटी नूरानी चादर देखते जाओ ॥
तजल्लीसे तेरी रौशन है सरतापा तने इन्सां ।
चमकता कानमें नायब गौहर देखते जाओ ॥
तुम्हारा नाम है खाली मता ये दीनों दुनियांमें ।
अगर है आपको कुछ शक मेरा घर देखते जाओ ॥
मिटा नामों निशां तीनोंका जखमोंसे जरा कातिल ।
मेरे सीनेको पहलूको जिगको देखते जाओ ॥

मैं फौरन जी उठूँगा अय मसीहा दम तेरे सदके।
मेरे लाशेको हाँ ठोकर लगाकर देखते जाओ॥
मिटाती है दुई वहदका रंग लाती है अय जाहिद।
मए उल्फतकी प्याली एक पीकर देखते जाओ॥
मैं मरजाता हूँ क्योंकर मरके जी जाता हूँ फिर क्योंकर।
चढाकर पहले अबरू पीछे हँसकर देखते जाओ॥
हुआ करते हैं निर्भय किस तरह यह शौक है जिनको।
अनल हक इस्मे आजम है ये पढकर देखते जाओ॥

॥ लावनी ॥

जिसकी खातिर हम दुनियाँकी राह तो गमको भूल गये। वुह दिल लेकर हमारा दिलसे हमको भूल गये॥ उसके कूँचे के सिवा और जा रखना कदमको भूल गये। खुलदेबरींको इरमको दैरो हरम को भूल गये॥ उसके नामकी यादमें पढना इस्म आजमको भूल गये। होशो खिरदको अक्लको वहमो फहमको भूल गये॥ जिसके दममें आके सरासर अपने दमको भूल गये। वो दिल लेकर हमारा दिलसे हमको भूल गये॥ उसकी तर्ज सीनेमें लिखकर तरजे रकमको भूल गये। मतलब मजमूँ इबारत कशिश कलमको भूल गये॥ उसका तसब्बुर करके और सब क्रिया करमको भूल गये। निर्गुण सगुण भावको निगमागमको भूल गये॥ जिसको तजल्ली ओ नूर देखहस्तिओ अददको भूल गये। वो दिल लेकर हमारा दिलसे हमको भूल गये॥॥ खाक उसके दरकी मलकर सब जाहो हशमको भूल गये। शाही गदाई नबूवत दामो दिरमको भूल गये॥ उस की लगनमें फाड गरे बाँ हया शरमको भूल गये। सबरो तहम्मुल करारो कौलो कसमको भूल गये॥ खयालमें जिसके

बिल्कुल हैयते आदमको भूल गये । वो दिल लेकर हमारा दिलसे हमको भूल गये ॥ उसकी निगाहे सहर देख हरयक आलमको भूल गये। जुल्मो सितमको कहरको लुत्फो करमको भूल गये। उसकी मधुर वाणी सुनकर स्वर ताल और समको भूलगये। बीन पखावज बिहाग एमन सरगमको भूल गये ॥ निर्भयराम जिनकी खातिर हम सारे भ्रमको भूल गये। वो दिल लेकर हमारा दिलसे हमको भूल गये ॥

॥ लावनी ॥

जब आशिकपर आशिक वो सनम होता है ।
दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥
दरपए कत्ल ले तेगे दुदम होता है ।
आँखोंसे सर तस्लीमको खम होता है ॥
ये कज फहीमी है उनका सितम होता है ।
गो जाहिरमें सर तनसे कलम होता है ॥
मैं तू का झगडा जहां खतम होता है ।
दोनोंका रुइबा एक रकम होता है ॥ १ ॥
वहदतकी द्वार पर जिसका कदम होता है ।
लाखोंमें एक खालिककी कसम होता है ॥
मतलूब और तालिबका वहम होता है ।
यकताईका जिस दम आलम होताहै ॥
क्या कहूँ मैं जैसा जाहो हशम होता है ।
दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥
नौ द्वार छोड प्रवेश दशम होता है ।
जहाँ मन वाणीका जरा न गम होता है ॥

ना गिर्जा है ना दैरो हरम होता है ।
मायाका खेल दरहम बरहम होता है ॥
जब ध्येयरूप हो ध्याता सम होता है ।
दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥ ३ ॥
हम ज़बाँ तभी अपना महरम होता है ।
जब दम अपना उसका हमदम होता है ॥
अपनी करनी और उसका करम होता है ।
हमदम महरम हो दम यकदम होता है ॥
निर्भय हो बेश वो जरा न कम होता है ।
दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥ ४ ॥

॥ गजल ॥

मेरा दिल रूठ गया मुझसे मनादो कोई ।
कहीं बदनाम न होजाय बुलादो कोई ॥
मुझको वो भूल गये याद दिलादो कोई ।
उनको मैं याद करूँ नाम बतादो कोई ॥
लोग कहते हैं कि हम आपको पहिचानते हैं ।
आप कहते हैं किसे मुझको दिखादो कोई ॥
यूँ तो हाँ याद तेरी दिलसे नहीं जानेकी ।
खुदको खुद आप भुलावे तो भुलादो कोई ॥
तुमको अपनासा करूँ आपसा बन जाऊँ मैं ।
ऐसी तदबीर मेरी जान बतादो कोई ॥
क्या बुरा ख्वाब है डरडरके वो चौंक उठते हैं ।
किसी माकुल बहानेसे जगादो कोई ॥
अपनी सूरतपे कहीं आप न आशिक हो जाय ।

चुपके आइना मुकाबिलसे हटादो कोई ॥
निर्भय हो जाऊँ मिटे दिलसे दुईका खदशा ।
एक प्याली मए वहदतकी पिलादो कोई ॥

॥ पद ॥

आतमको सर्व आनन्द मूढ सुख विषयनमें जाने ।
नर सिंह देखकर कोसों भागे इतना भय माने ।
और उसी सिंहको निरख सिंहनी मनमें हरषाने ॥
आतमको सर्व आनन्द० ।
पहले जब कोई मित्र मिले कैसा सुख उपजाने ।
फिर सुख तो क्या नर उसी मित्रको निरखत उकताने ॥
आतमको सर्व आनन्द० ।
जल हालत हालत घटमें तौलो नाहीं ठहराने ।
पूरण सुखका प्रतिबिंब कदाचित् नाहीं दरशाने ॥
आतमको सर्व आनन्द० ।
मनकी चंचलता मेट आत्मानन्दको पहिचाने ।
जो होनी हो सो होय निर्भय भय काहेका आने ।
आतमको सर्व आनन्द मूढ सुख विषयनमें जाने ॥

॥ दोहा ॥

बोध साम शम पुष्पतें, पूज आतमा राम ।
निर्भय सुख होगा तुझे, निश्चय आठों जाम ॥
बोधपुष्पका फल यही, निर्भय हो अभिध्यान ।
साम पुष्पकी अर्चना, करे योजना ज्ञान ॥
निर्भय राखो प्रेमसे, शम स्वरूप सरफूल ।
तत्त्व भाव हो जायगा, रहे न किंचित भूल ॥

॥ दोहा ॥

जैसे कामी नर करें, रती युक्त व्यवहार ।
निर्भय तूभी काम कर, आतम दृष्टि न टार ॥
जैसे क्रीडा करत हैं, गृहमें नर अरु नारि ।
निर्भय ऐसेहि ब्रह्मका, क्यों नहिं करत विचार ॥
जिमि नारिसों करत है, नर निर्भय हो भोग ।
सुख चाहे तो कर योंही, आतम संयम जोग ॥
जिमि भोगके अंतमें, होत विषय आनंद ।
निर्भय राम समाधिमें, भासे स्वरूप अखंड ॥

॥ दोहा ॥

सर्गुन निर्गुण ब्रह्मका, एक नाम ॐकार ।
नामी नाम अभेद है, निर्भय कहे पुकार ॥
तीन मात्रा सगुण हैं, अर्द्ध निरंजन जान ।
निर्भय सबके मेलको, अपर ब्रह्म पहचान ॥
सोहं पदका वाच्य है, जीव ईशका रूप ।
दोनोंका लक्ष एक है, चेतन तत्त्व अनूप ॥
जीव ईशकी एकता, याही पदमें हो ।
निर्भय व्यंजन छोड दो, स्वरही स्वर गहलो ॥
स्वर व्यंजनका ज्ञान है, जड चेतनका ज्ञान ।
मायासों व्यंजन कहे, शुद्ध स्वरनको जान ॥
केवल स्वरही स्वर भजो, व्यंजनसे रहो दूर ।
परम ब्रह्मॐकार है, घट घटमें भरपूर ॥
विना नाम तुमही कहो, कैसे होवे ज्ञान ।
निर्भय होकर नामका, धरो रैन दिन ध्यान ॥

रटत रटतही नामके, मिथ्या भ्रम्म नसाय।
अर्थ प्रगट हो जात है, निर्भय राम हढाय॥

॥ पद ॥

कितेक दिननको ऊधम ठावे।
कोठी बंगला कोट तबेला, ऊँचे ऊँचे महल चिनावे॥
कितेक दिननको ऊधम ठावे।
केला संतरा चंपा चमेली, फल फूलोंके बाग लगावे॥
कितेक दिननको ऊधम ठावे।
नये नये रथ हाथी अंबारी, बग्गी घोडे मोल मंगावे॥
कितेक दिननको ऊधम ठावे।
भूषण पहने रतन जडाऊं, जरीबफतके वस्त्र सिलावे॥
कितेक दिननको ऊधम ठावे।
पान इलायची केसर मेवा, नाना रस पगे भोजन खावे॥
कितेक दिननको ऊधम ठावे।
विद्या बल संपति परिवारा, मैं मेरी कर धूम मचावे॥
कितेक दिननको ऊधम ठावे।
निर्भयराम साँचही मानो, कछुहू मूरख साथ न जावे॥
कितेक दिननको ऊधम ठावे।

॥ पद ॥

जहांश्याम तहांचलो चलहैं सखी, या हमें ना सुहावत सूनी अटा।
खान पान भूषण वसन निंदिया जुबना काम।
कछुहू नीका ना लगे कैसे कहूँ मोरे राम॥
जहां श्याम तहां चलो चलहैं सखी, या हमें ना सुहावत सूनीअटा।
मैं मैं कहना छोड दो कृष्ण कृष्ण कहो टेर।
मैं मैं सुनकर श्यामने लीनी चितवन फेर॥

जहांश्याम तहांचलोचल हैं सखी,या हमें ना सुहावत सूनी अटा।
बांधव आतम ईश धन गुरू सखा जग माहिं ।
मेरे तो छुट कृष्णसों और दूसरा नाहिं ॥
जहांश्याम तहांचलोचल हैं सखी,या हमें ना सुहावत सूनी अटा।
तनमें मनमें दृगनमें प्राणनमें घनश्याम ।
पूरण रहो प्रेममें निर्भय आठों जाम ॥
जहां श्याम तहांचलोचल हैं सखी,या हमें ना सुहावत सूनी अटा।

॥ पद ॥

हमारे घर आये हैं नँदलाल ।
काछी कटि चूनर काहूकी मुख लिपटाये गुलाल ॥
हमारे घर आये हैं नँदलाल ।
गल बिच कंगन कर बिच पायल पग वैजन्तीमाल ॥
हमारे घर आये हैं नँदलाल ।
लाओ सखी वारूँ शोभापर गजमुतियन भर थाल ॥
हमारे घर आये हैं नँदलाल ।
निर्भय राम चरण बलिहारी नई अनोखी चाल ॥
हमारे घर आये हैं नँदलाल ।

॥ पद ॥

मन चेत नहीं पछितावेगा ।
जा तनमें जा धनमें भूला यहीं पडा रह जावेगा ॥
मन चेत नहीं पछतावेगा ।
झूठे मित्र स्वारथके नाते कोई काम न आवेगा ॥
मन चेत नहीं पछतावेगा ।
भजता क्यों नहीं नन्दनँदनको जो तोहे पार लगावेगा ॥
मन चेत नहीं पछतावेगा ।

जा दिन गहरी निंदिया सोवे निर्भय कौन जगावेगा ॥
मन चेत नहीं पछतावेगा।

॥ पद ॥

पडी मोहे कैसी अद्भुत बान।
जा आकाशको अंत कहूँ नहीं निर्गुण लाभ न हान।
वाको निरखत निरखत निशिदिन नैना नहीं अघान ॥
पडी मोहे कैसी अद्भुत बान।
रूप अरूप है नाम अनामी कैसे करूं भगवान।
मोको तो अचरजसा लागे जियरा बडाही लुभान ॥
पडी मोहे कैसी अद्भुत बान।
बतलाऊं दिखलाऊं क्योंकर अनुभव है प्रमान।
मन वाणीकी गम्य नहीं है निर्विशेष निर्बान ॥
पडी मोहे कैसी अद्भुत बान।
आप मरे कुल जगको मारे निर्भय तभी द्दढान।
मूरख या पदको नहिं पावें पावें सन्त सुजान ॥
पडी मोहे कैसी अद्भुत बान।

॥ पद ॥

जतन बिन मृगोंने खेत उजाडा।
पांच मिरग पच्चीस मिरगनी संग लिये तीन चिकारा।
दिन धौली अन्दर घुस आये फांद फांद कर बारा ॥
जतन बिन मृगोंने खेत उजाडा।
इत उत डोलत कूदत फांदत भय नहिं करत गँवारा।
मेंड सभी तोडी क्यारिनकी उलट पुलट कर डारा ॥
जतन बिन मृगोंने खेत उजाडा।

किसको को बरजे माने सबरो खेल बिगाडा।
चुनचुन पात फूल फल खाये तिनका तलक न छाडा॥
जतन बिन मृगोंने खेत उजाडा।
अपनी सुथ खेतीकी बुधि नाहिं दुर्लभ दे निस्तारा।
निर्भयराम कहो कैसी करोगे सोवत है रखवारा॥
जतन बिन मृगोंने खेत उजाडा।

॥ गजल ॥

जगदीशही आपसे जीव भयो ये भी सच है वोभी सच है।
प्रतिबिंब कहो या बिंब कहो यहभी सच है वोभी सच है॥
है एक नहीं ये लग्वबयां तेरी अक्कहीका है कसूर मियां।
खुर्शीद कहो या धूप कहो यहभी सच है वोभी सच है॥
गफलतका रुखसे नकाब उठा वहदममें है कसरते जलवे।
नमा बुदबुदे कहो या नीर कहा यह भी सच है वोभी सच है॥
है दोमें एक हो दोसे एक निर्भय करलो अन्वय व्यतिरेक।
अद्वैत कहा या द्वैत कहो यहभी सच है वोभी सच है॥

॥ गजल ॥

आदम किधर खहाल है हकको तो जानले।
हम तुम हैं एक दो नहीं यह बात मानले॥
बुद्धीसे दूर मनसे अलग चित्तसे पार हो।
चिंता दुइकी झाडदे अनुभव प्रणाम ले॥
खालिक है तुभी मैं हूँ अगर फर्क फिर कहां।
रचता है स्वप्न सृष्टीको मुझसे निशान ले॥
गदलाह आवे इस्क झिझकता है दिल तभी।
पीना अगर हे शौको मुहब्बतसे छान ले॥

खुदसे खुदा जुदा नहीं हरगिज खुदापरस्त।
कहाता है रास्त हाथमें निर्भय कुरान ले ॥

॥ गजल ॥

रूप सब रामके हैं रामके हैं नाम तमाम ।
दोनों आलममें यहां क्या वहां घनश्याम तमाम ॥
दीनो दुनियांके हुए सारे सरंजाम तमाम।
आजकल खूब गुजरती है ब अराम तमाम ॥
राह तो रंज मुकद्दरसे हुआ करते हैं ।
हकको नाहकही किया करते हैं बदनाम तमाम ॥
बदतहरीर करो रहनेदो तकरीर फजूल ।
नासहा मेरा इशारेमें हुआ काम तमाम ॥
सुफहए हिलपे जो दिलबरकी खिंची है तस्वीर।
वोही जलवा वोही कुद्रत वही अंदाम तमाम॥
शौकेदीदार अगर है तो बस इन आँखोंमें ।
शामसे सुबह हो और सुबहसे हो शाम तमाम ॥
मलकुल मौत उठो निर्भय कमरको बांधो ।
आखिरी तुमही तो ले जाते हो पैगाम तमाम ॥

॥ पद ॥

अब संत जनोंका विचार यार कहताहूँ तुझसे होशयार।
देह मलीन क्षणभंगुर भाई निर्मल बुद्धि भागसों पाई ॥
निश्चय मानो रामदुहाई याको कछु नहीं एतबार ।
अब संतजनोंका विचार यार कहताहूँ तुझसे होशियार ॥
चेतन देव प्रकाशत सारा नाम रूप और गुणसे न्यारा ।
कथनमात्र है द्वैतपसारा आपही आप है वार पार ॥

अबसंतजनों का विचार यार कहता हूँ तुझसे होशियार।
मिथ्या राग द्वेष मन माना साक्षी निज स्वभाव नहीं जाना ॥
जिन जाना तिन नाहीं माना उदासीन भये कर विचार ।
अब संतजनोंका विचार यार कहता हूँ तुझसे होशियार ॥
वृथा जीवन मिथ्या मरना बंधन नहीं मुक्ति क्या करना ।
निर्भय हो काहेको डरना समझावत हूँ बार बार ।
अब संतजनोंका विचार यार कहता हूँ तुझसे होशियार ॥

॥ पद ॥

फिरे मतवारा किस धुनमें ।
भज ले रे श्रीनंदनँदनको सोच समझ मनमें ॥
कबहूं राव करे है छिनमें रंक कभू छिनमें ।
या माया अपना रंग बदले आननफाननमें ॥
फिरे मतवारा किस धुनमें ।
भज ले रे श्रीनंदनँदनको सोच समझ मनमें ॥
माटी फूली पवनसों हाँ कछु नाहीं या तनमें ।
जानत है पर मानत नाहीं अँधेरा जोबनमें ॥
फिरे मतवारा किस धुनमें ।
भज ले रे श्रीनंदनँदनको सोच समझ मनमें ॥
कबहू प्रीति सुतनसों होवे रति कभू कामनमें ।
इनसे बचना बडो कठिन है बस करे नैननमें ॥
फिरे मतवारा किस धुनमें ।
भज ले रे श्रीनंदनँदनको सोच समझ मनमें ॥
सहसबाहु दशवदन आदि नृप अजयवीर रनमें ।
तिनको कालकूरने खाया बातन बातनमें ॥
फिरे मतवारा किस धुनमें ।

भज ले रे श्रीनंदनँदनको सोच समझ मनमें ॥
जैसाही घरमें रहना है तैसाही वनमें ।
निर्भयरास भेद कछु नाहीं निर्गुण सर्गुणमें ॥
फिरे मतवारा किस धुनमें ।
भज ले रे श्रीनंदनँदनको सोच समझ मनमें ॥

॥ लावनी ॥

कर देखा सावित हमने सबके बयनाके पास है वो ।
दूर जिससे बतलाते हो देखो तो आनके पास है वो ॥
पहले तो ईमानसेही देखा ईमानके पास है वो ।
फिर पुराण देखे तो देखा हरएक पुराणके पास है वो ॥
वेद देखे कुरान देखा वेद और कुरानके पास है वो ।
गीतामें हैं साफ वचन करुणानिधानके पास है वो ॥
प्रमाणोंकर देखा तो देखा हरएक प्रमाणके पास है वो ।
दूर जिसे बतलाते हो देखो तो आनके पास है वो ॥
भलीभांति यहि देख लिया सतगुरुसे छानके पास है वो ।
स्वरूपसे लासकां मगर हरएक मकानके पास है वो ॥
खाक बाद आबो आतशके आसमानके पास है वो ।
दूर किसी शयसे नहीं मुतलक कुल जहानके पास है वो ॥
प्रत्यक्ष अनुभवमें आया है निश्चय ठानके पास है वो ।
दूर जिसे बतलाते हो देखो तो आनके पास है वो ॥
क्या हिंदू क्या ईसाई क्या मुसलमानके पास है वो ।
जितने नामोनिशां है सब नामोनिशानके पास है वो ॥
दिलो जिगर पहलु ओ कमर सीनेके कानके पास है वो ।
हाथ पाँव पिंडली जानू बाजू जबानके पास है वो ॥

देखा बचश्मे गौर तो हरदम प्राण अपानके पास है वो।
दूर जिसे बतलाते हो देखा तो आनके पास है वो ॥
गुमानसे माना तो यही माना गुमानके पास है वो ।
ध्यानसे पहचाना तो यही पहचाना ध्यानके पास है वो ॥
ज्ञानसेभी जाना तो यही जाना है ज्ञानके पास है वो ।
हुआ गरज तहकीक यही हरतरह जानके पास है वो ॥
फट न जाय चादर निर्भय मत ओढो तानके पास है वो।
दूर जिसे बतलाते हो देखो तो आनके पास है वो ॥

॥ पद ॥

जान गया क्या बोलूँ अरे बाबा मैं जान गया क्या बोलूँ।
निर्गुण निर्विकार निराकार, परम पवित्र स्वरूप बिचारा।
अब जियामें यही संशय बाढा, क्या न्हाऊँ क्या धोलूँ।
जान गया क्या बोलूँ अरे बाबा मैं जान गया० ।
विभू अनंत अखंड अपारा, निश्चल अच्युत भाव हमारा ।
मैं यही सोच सोच बहु हारा, क्या बैठूँ क्या डोलूँ ॥
जानगया क्या बोलूँ अरे बाबा मैं जान गया क्या बोलूँ।
पूर्ण निर्विकल्प अविनाशी,सत् चित् आनंद अज सुखराशी।
मुझे लगे बारबार यूँहि हांसी, क्या जोखूँ क्या तोलूँ ॥
जान गया क्या बोलूँ अरे बाबा० ।
आतमनित्यमुक्तनिराधारा, पंचकोश त्रैदेहतें न्यारा ।
निर्भय वृथा संकल्प तुम्हारा, कौन बँधा क्या खोलूँ॥
जान गया क्या बोलूँ अरे बाबा मैं जान गया क्या बोलूँ।

॥ लावनी ॥

आय दिल तू आशिक हुआ तो क्या घबराना ।
आसान नहीं है वस्ले सनमका पाना ॥

मजनूँने इश्कमें कैसी अजी अन झेली।
थीं जौरोजफा लाखों और जान अकेली॥
सब भूल गया बाजिये मोहब्बत खेली।
यह बिर्द हुआ हाय लैली लैली लैली॥
लैली पाई आपेको आप भुलाना।
आसान नहीं है वस्ले सनमका पाना॥
फरहादने किस दर्जे अपनी ख्वारी की।
काटा पहाड तैशेसे नहर जारी की॥
कीं शर्तें अदा सबही शीरीं प्यारी की।
कोई तर्ज न छोडी बाकी जाँ निसारी की॥
मकबूले यार होतेही हुआ खाना।
आसान नहीं है वस्ले सनमका पाना॥
राँझेके दिलमें जब उल्फते हीर समाई।
चलदिया छोडकर खेशो अकरवा शाही॥
की दरपे यारके बरसों तलक गदाई।
सदहा ठोंकर खाखाकर हुई रसाई॥
जब चाहा हीरको हुई बना दीवाना।
आसान नहीं है वस्ले सनमका पाना॥
मनसूरने पूरा पूरा इश्क कमाया।
दिलबरमें आको आपमें दिलबर पाया॥
जब हकका कलमा नोके जबांपर लाया।
पाबंद शरहने काफिर उसे बताया॥
कहा अनलहक सूलीपरभी नहीं माना।
आसान नहीं है वस्ले सनमका पाना॥

हक इश्क शम्स तबरेजने कर दिखलाया।
पढ कुंबेइजनी मुर्देको होशमें लाया॥
खिचवाके खाल भुस मुफ्तीने भरवाया।
पर हसको आपसे जुदा नहीं बतलाया॥
आशिक होना है जीते जी मरजाना।
आसान नहीं है वस्ले सनमका पाना॥
दीन और दुनिया दोनोंकी हवस छुटजावे।
दिलबरका जलवा तभी दीदमें आवे॥
हां खुदीका नामों निशान गुम हो जावे।
हक रह जाये नाहकका भेद मिटा जावे॥
निर्भय हो मुक्ति कही आना रहे न जाना।
आसान नहीं है वस्ले सनमका पाना॥

॥ गजल ॥

वही हकपे ईमान लाये हुए हैं।
जो खदशा दुईका मिटाए हुए हैं॥
हरेक तरह दिलको मनाए हुए हैं।
तेरे दरपे आसन जमाए हुए हैं॥
कयामतके आसार छाए हुए हैं।
वो जुल्फोंसे मुँहको छुपाए हुए हैं॥
वो मुखतार हैं दिल लगाए किसीसे।
हमसे दिल अपना लगाए हुए हैं॥
वो गो हमसे आंखें चुराए हुए हैं।
हम आखोंमें उनको रमाए हुए हैं॥
कोई रूप हो उनकी हैयत न बदले।
कुल आलममें यकसां समाए हुए हैं॥

ये माना वो दममें न आए किसीके ।
पर हम उनको दमपर चढाए हुए हैं ॥
बगलमें मुसल्लाह नहीं जाहिदाचुष ।
मये शौकका खुम दबाए हुए हैं ॥
कसम है तुम्हें तुम भी गर्दन न मारो ।
और हम भी सर अपना झुकाये हुए हैं ॥
वो आजाद निर्भय हो दुनियाँसे क्यों कर ।
जो हुक्समें शरहसे डराए हुए हैं ॥

॥ गजल ॥

पहले क्या सोचके उल्फतका बचन मुझको दिया ।
जानेजां किसलिये अब रंजो महन् मुझको दिया ॥
नामका रूपका मैं क्या करूं लेलो साहब ।
दोनों बेकार हैं क्या आपने धन मुझको दिया ॥
तेरी मायाने किया मुझको बहुत खाने खराब ।
कैसे निर्गुण हो मियां जानके मन मुझको दिया ॥
दाग लगजायगा इज्जतमें तमाका बेशक ।
बाद मुर्दनभी किसीने जो कफन मुझको दिया ॥
निर्भय किस मुँहसे करे शुक्र तेरी रहमतका ।
लाख अहसां किये इन्सांका वदन मुझको दिया ॥

॥ पद ॥

जतनसों ओढे जी चादर झीनी ।
पंच विषयही सेवत सेवत, दाग दगीली कीनी ॥
जतनसों ओढो जी चादर झीनी ॥
तार तार भई जात अनारी, मोह ग्रंथि कस दीनी ॥

जतनसों ओढो जी चादर झीनी ।
फट न जाय तृष्णा मत बाँधो, दुस्तर है फिर सीनी ॥
जतनसों ओढो जी चादर झीनी ।
निर्भय निर्भय जतन यही है, हरदम रहो लौलीनी ॥
जतनसों ओढो जी चादर झीनी ।

॥ पद ॥

गुरु पैंयाँ लागूँ तारक नाम बता ।
चिदानन्द निर्मल निराधारा, अविनाशी निर्गुण निराकारा ।
अचल अखण्ड अनन्त अपारा, पुराण अर्थ दृढा ॥
गुरु पैंयाँ लागूँ तारक नाम बता ।
आपही आप नाम धनु गाजे, बजे मनोहर अनहद बाजे ।
द्वैत भ्रम मूलसों भाजे, चेतन शब्द जगा ॥
गुरु पैंयाँ लागूँ तारक नाम बता ।
संसारी माया नहिं भासे, सकल द्वंद्व अनुभवसों नासे ।
चहूँ ओर अक्षर प्रकाशे, रूप अरूप बना ॥
गुरु पैंयाँ लागूँ तारक नाम बता ।
शब्दही शब्द अमरपुर जाऊँ, शब्दहीमें पुन आप समाऊँ ।
शब्दातीत ब्रह्म होजाऊं, निर्भय पद दरसा ॥
गुरु पैंयाँ लागूँ तारक नाम बता ।

॥ होली ॥

सबी शृंगार सखीका, भजन बिन लागत फीका ।
नाम रूप आरोपित सत्ता है संकल्प हरिका । आपही दीन
आपही दुनिया करता दान दुनीका, मूल यही मंत्र श्रुतीका ॥
सबी शृंगार सखीका, भजन बिन लागत फीका ।

ओ लार्ड डायविल नाट माइन है यही कौल मसीका मोमिनो । लाइलाह इल्लिलाह कहो मतलब यही वहीका यही कलमा है नबीका ॥

सबी शृंगार सखीका, भजन बिन लागत फीका ।

सबसे मिले अलग सबसे रहो ज्ञान यही ज्ञानीका । यह दुनिया धोखेकी टट्टी कोई नाहिं किसीका, यही मत है सूफीका ॥

सबी शृंगार सखीका, भजन बिन लागत फीका ।

इंद्रिन ग्राम पवन मन रोको खुले द्वार त्रिकुटीका । निर्गुण भाव पुरुषका झलके मिटे भ्रम्म तब जीका, यही आशय योगीका ॥

सबी शृंगार सखीका, भजन बिन लागत फीका ।

तन मन धनसों नेह न राखे रामनाम लगे नीका । अष्ट प्रहर रैन दिन क्षण पल सुमरन रहे उसीका, यही लक्षण भक्तीका ॥

सबी शृंगार सखीका, भजन बिन लागत फीका ।

तन मक्का मन कावा जिसमें नूर जाते अबदीका । अक्लकी आंख खोलकर देखो परदा उठा खुदीका, यही हज है हाजीका ॥

सबी शृंगार सखीका, भजन बिन लागत फीका ।

शब्द ब्रह्म घटहीमें खोजे अर्थ समझ काशीका । आपमें आप समावे ऐसा रहे न लेश दुईका, यही है ध्यान मुनीका ॥

सबी शृंगार सखीका, भजन बिन लागत फीका ।

सब तज हरि भज सुख जो चाहे, मूल उपदेश जतीका । निर्भय-राम रामकी सौगन्द साधू संतऋषीका, यही सिद्धान्तसभीका ॥

सबी शृंगार सखीका, भजन विन लागत फीका ।

इति श्रीनिर्भयविलास प्रथम भाग समाप्त ।

॥ श्रीगणपतये नमः ॥

अथ
निर्भयविलास ।
अर्थात्
गीतगोविन्द द्वितीय भाग.

हरिः ॐ तत्सत् ब्रह्मणे नमः ।

॥ पद ॥

ब्रह्मणे नमो नमः नमो नमः ब्रह्मणे ।
अव्यय हो असंग हो, अच्युत हो अखण्ड हो ।
सच्चिदानन्द हो, स्वम्भुवे स्वयम्भुवे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
अलख हो अचिंत्य हो, आदि हो न अन्त हो ।
विभु हो अनन्त हो, शाश्वते शाश्वते ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
निर्गुण निराकार हो, निर्मल निराधार हो ।
अगम हो अपार हो, अक्षरे अक्षरे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
ज्ञान हो विज्ञान हो, केवल अधिष्ठान हो ।
मुक्त हो निर्वाण, हो, अनुत्तमे अनुत्तमे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ॥
रूपकी खान हो, सकलगुण निधान हो ।
सर्वशक्तिमान हो, सुन्दरे सुन्दरे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।

स्वतंत्र हो सुजान हो, प्रचण्ड हो प्रधान हो ।
धीर हो बलवान हो, प्रभवे प्रभवे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
विश्व हो कर्तार हो, शब्द अहंकार हो ।
सदा निर्विकार हो, ईश्वरे ईश्वरे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
तात हो मात हो, सखा हो भ्रात हो ।
गुरु हो नाथ हो, केशवे केशवे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
जीवन हो काल हो, सुन्दर विकराल हो ।
श्याम हो विशाल हो, माधवे माधवे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
धर्मकी टेक हो, अन्वयव्यतिरेक हो ।
एक हो अनेक हो, मधुसूदने मधुसूदने ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
सूक्ष्म हो स्थूल हो, मूल फल फूल हो ।
सर्वदा अनुकूल हो, जनार्दने जनार्दने ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
पालक हो दयाल हो, रक्षक हो कृपाल हो ।
गोविन्द हो गोपाल हो, विश्वम्भरे विश्वम्भरे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
अणु हो महान् हो, सर्वतः प्रमाण हो ।
श्रेष्ठ हो कल्याण हो, शङ्करे शङ्करे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।

शांत हो निर्माण हो, अचल हो समान हो ।
साक्षी भगवान हो, परमात्मने परमात्मने ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
भक्तिमें और योगमें, भोगमें प्रयोगमें ।
रोगमें अरोगमें, शिवे शिवे शिवे शिवे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
ज्ञानमें और ध्यानमें, जानमें अजानमें ।
प्राणमें अपानमें, प्रणवे प्रणवे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
हानिमें और लाभमें, ग्रहणमें और त्यागमें ।
रागमें वैरागमें, हरे हरे हरे हरे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
स्वप्नमें व्योहारमें, निद्रामें विचारमें ।
घर और द्वारमें, भगवते भगवते ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
दृष्टमें अदृष्टमें, वेदनमें सृष्टिमें ।
इष्टमें अनिष्टमें, नारायणे नारायणे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
विद्या बलधन हो, इंद्रिय प्राण मन हो ।
पूरण हो घन हो, व्यापिने व्यापिने ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
ज्योति हो प्रकाश हो, सर्वगताकाश हो ।
तेजकी राशि हो, दिवाकरे दिवाकरे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।

बुरे हो न भले हो,जुदे हो न मिले हो ।
बंदे हो न खुले हो, केवले केवले ॥
ब्रह्मणे नमो नमः० ।
शरण हो गति हो, मायाके पति हो ।
निर्भय हो जती हो, विष्णवे विष्णवे ॥
ब्रह्मणे नमो नमः नमो नमः ब्रह्मणे ।

॥ सवैया ॥

जा दिनतें छबि वाकी चुभी चितवा दिनते छवि और न भावे ।
आवत जात कमात रु खात प्रभात रु रात कछू न सुहावे ॥
टारो टरे न कभू कितहू विसरत छिन नाहिं कोऊ बिसरावे ।
कैसी कहूं अब सोवत जागत स्वप्नमें श्यामहिं श्याम दिखावे ॥

॥ सवैया ॥

जलकी लहर है जल नहीं लहरको यद्यपि एकहिं तत्त्व विचारो ।
ऐसेहि केशव आपको अपनो ज्ञानसूं ध्यानसूं भाव संभारो ॥
याही सेन दई गुरु देवने मूलसहित सगरो भ्रम टारो ।
निर्भयराम है रामकी सौगंद द्वैताद्वैतको टंटो सारो ॥

॥ मुसद्दस ॥

अब सेमसे आसनको लगाया नहीं जाता ।
ॐकारको नाभीसे उठाया नहीं जाता ॥
प्राणोंसे दशम द्वारतक आया नहीं जाता ।
जगदीशको सुरतोंसे रिझाया नहीं जाता ॥
चितवन नहीं चैतन कोई सोच है भारी ।
ये देह गिरी जाती है सदमेंस हमारी ॥
ये दिलपे उदासीसी गजब छाई है कैसी ।
ये गमकी घटा घोरके घिर आई है कैसी ॥

सीना है तपां जानभी घबराई है कैसी।
और आंखभी रोरोके उमड आई है कैसी॥

क्या कीजिये ये रंज उठाया नहीं जाता।
कहनेका इरादा नहीं है जताया नहीं जाता॥

गोइलमभी है जरभी है घरबार है अपना।
और शहरमें माना बडा अधिकार है अपना॥
ये देखती आखों सभी परिवार है अपना।
किससे कहूँ हाय मददगार है अपना॥

यूँ कोई नहीं पूँछता क्या हाल रही है।
हम आप समझ लेवेंगे जो कुछके वही है॥

हाँ दीन दयाल ऐसे हैं जिनकी ये दुआ है।
वो फल खिले आज जो कुमलाया हुआ है॥
माना वोही होना है जो मनजूरे खुदा है।
सतधर्म रहे जान निकल जाये तो क्या है॥

सर राहमें जगदीशकी कट जाय तो अच्छा।
पर सामनें जो रोक है हट जाय तो अच्छा॥

ये धर्मसभाने बडा उपकार किया है।
जो भार है सब अपनेहि काँधेपे लिया है॥
इसकाहि नतीजा है के वो शोर बपा है।
कानोंसे सुनाई नहिं देता ये सदा है॥

खुरशीदकी राहूने छिपाया है चमकको।
होने लगा उग्रहनभी देखो तो फलकको॥

क्या नूर बरसता है ये बरसात मुबारक।
उतसवका है दिन चाँदसी है रात मुबारक॥
खुरशीद हैं तारे ये नई बात मुबारक।
जिस जातकी कुदरत है वही जात मुबारक॥

मन्त्रोंकी गरजने है अजब धूम मचाई ।
वेद आते हैं लेना तुम्हें देनेको वधाई ॥

शोभित हैं सभामें बडे पण्डित बडे ज्ञानी ।
सतधर्म्मके उपदेशमें जिनकी नहीं सानी ॥
जो कुछ मुझे आता सुना इनहीकी जबानी ।
क्या खोलूँ जबाँ भाइयो है बात पुरानी ॥

हो फख्र मुझे धर्मके जलसे कि बदौलत ।
कुछ कहनें कि इसवास्ते है खास जरूरत ॥

फूला नहीं हर शख्स समाता है बदनमें ।
कुदरतका अजब रंग खिला आज चमनमें ॥
कब पहले ये खूबी थी कहो सर्वोसमनमें ।
यूँ बुल्बुलें कब मस्त हुईं गलकी लगनमें ॥

मकदूर नहीं वस्फ हो मौला कि कलमका ।
क्या रूप उतारा है यहां वागे इरमका ॥

जलसा तो खुशीका है पर अफसोस यही है ।
जो धर्मकी हालत है वो मजमुर्दः हुई है ॥
सोचो तो सही कौनसी वो बात नई है ।
जिस वजहसे ये बेल हरी सूख गई है ॥

ऐ भायो गैरोंहिका सब खोट नहीं है ।
अपनेभी कलेजोंपे जड़ी चौट नहीं है ॥

पहलासा कहां शोक है फरमाओ तो साहिब ।
हिम्मत जो कभी थी उसे दिखलाओ तो साहिब ॥
जो हुक्मेशरह है हमें बतलाओ तो साहिब ।
क्या जीव है क्या ब्रह्म है समझाओ तो साहिब ॥

अज्मत वो नहीं कि जिस अज्मतके सबबसे ।
त्रिदेवभी गर्दनको झुकाते थे अदबसे ॥

पापोंको हटा देते थे ठोकरको लगाकर।
संशयको बहा देतेथे वचनोंको सुनाकर॥
अमृतको पिलाते थे महामन्त्र बताकर।
आवर्ण मिटा देतेथे दृष्टीको दिखाकर॥

खुर्शीद ईशारेसे बुलाते थे जमींपर।
कुदरत ये कहां हैं हमें दिखलाओ तो आकर॥

वो अक्ल थी अय भाइयो वो ज्ञान न तुम्हारा।
उलमाय जहांमें था अधिक मान तुम्हारा॥
वो ध्यान तुम्हारा था वो ईमान तुम्हारा।
वैकुंठके नकशेको हिंदमें उतारा॥

जा अर्शे मोअल्लापे गलीमें अपनी बिछाई।
इन्सान है क्या चीज खुदातक थी रसाई॥

हरफनमें थे उस्ताद हरएक इल्ममें फाजिल।
भक्तीका नमूना थे हरेक योगके आमिल॥
इखलाकमें पूरे थे बुजर्गीमें थे कामिल।
तहजीबके पुतले थे फसाहतके मवक्किल॥

जो खूबीयां मशहूर हैं थीं आपमें सारी।
खसलत थी फरिश्तोंकि किसी वक्त तुम्हारी॥

वो धन था तुम्हारा के जमानेको हसद था।
इकबाल :बढावो के फलकेपे हुई चर्चा॥
वो तप था के जिस तपसे हुआ इन्द्रको धडका।
वो बल था के जिस बलसे पकड कालको बाँधा॥

ऐसी थी करामात जो हाथोंको हिलादो।
जिंदोंको करो मुर्दा मुर्दोंको जिलादो॥

वो इल्म खुदा जाने कहाँ आपने छोडा।
जिस इल्मे मायाका किला फूँकमें तोडा॥

रिश्ता वो गया टूट जो पहले कभी जोडा।
हाँ ख्वाबमें अब अर्शपे दौडाते हो घोडा॥

क्या नाम था क्या रूप ज़मानेमें तुम्हारा।
हर सिम्तमें इस हिन्दका चमके था सितारा॥

क्या लोग थे क्या हौसला क्या शौक गजब था।
फलफूलहि खाकर किया जङ्गलमें बसेरा॥
वो पास था ईमानका वो खौफ खुदाका।
सद्धर्मको छोडा नहिं हां देहको छोडा॥

जां बेचके जो जिन्स बुजुर्गोंने खरीदी।
रोनेकी जगह है उसे सूखेमें डबो दी॥

जो ऋण हैं वो अब तुमसे उतारे नहीं जाते।
शत्रु बडे परबल हुए मारे नहीं जाते॥
जो वर्त हैं अब व्रत वो धारे नहीं जाते।
जो कष्ट हैं तपमें वो सहारे नहीं जाते॥

ये आन है ये कान है ये बान तुम्हारी।
ये भाईयो फिर क्यों न घटे शान तुम्हारी॥

क्यों आज जहालतका नशा खाए हुए हैं।
हँसता है जमाना हमें शर्माए हुए हैं॥
क्या हौसला गैरोंका इतराए हुए हैं।
हमपस्त हुए ऐसेका घबराए हुए हैं॥

ईमानकी अटकल न रही कामके मारे।
गुम होयगे दहशतसे औसान हमारे॥

क्या गम है के सौसनकी जबां बन्द हुई है।
नरगिस बडी हसरतसे खडी देख रही है॥
अब जीनेका मौका नहिं मरनेकी घडी है।
अय भाइयो पदवी तुम्हें वहशीकी मिली है॥

हैं जितने मलायक सभी ललकार रहे हैं।
हैवान हमें देखके मुह फाड़ रहे हैं॥

साया नहिं उठता रहा कदमोंका पकडकर।
शबनमने बुरा हाल किया सोचमें रोकर॥
दर्याओंने तूफान उठाया है जमींपर।
और देवता सर पीटके कहते हैं फलकपर॥

अन्धेर है पुरुषोंको जरा ज्ञान नहीं है।
नरदेहके क्या धर्म हैं कुछ ध्यान नहीं है॥

वो दाग लगा है के मिटाया नहीं जाता।
बदनामके सदमेको उठाया नहीं जाता॥
किस्सा है वो पुरदर्द सुनाया नहीं जाता।
जलता है जिगर हाय छुपाया नहीं जाता॥

क्या वक्त बुरा आया है कुछ कह नहीं सक्ता।
वह दिलका तकाजा है कि बस रह नहीं सक्ता॥

जो धर्म तुम्हारा था वो अब धर्म नहीं है।
जो कर्म तुम्हारा था वो अब कर्म नहीं है॥
जो जोश कभी गर्म था अब गर्म नहीं है।
ठंडे हुए बैठे हो जरा शर्म नहीं है॥

तुम हो गये बदनाम नया नाम हुआ है।
जिस कामसे डरते थे वही काम हुआ है॥

ऐ भाइयो धिक्कार है जीवनको तुम्हारे।
तुम्हारे चुप हो हमें पोप कोई कहके पुकारे॥
हम सर्गसे जिस धर्मके जीते थे सहारे।
वो आज मिटा जाता है सन्मुखहि तुम्हारे॥

इस लोकके परलोकके सब कामसे खोया।
जिस नामसे था शफ वही नाम डबोया॥

वो आज बिरहमन है कहां साहिबे अजमत ।
ब्रह्माण्डके रचनेकी जिन्होंको हुई कुदरत ॥
जो दिलसे मिटा देते थे अज्ञानकी जुलमत ।
यक बूंदमें दर्याकी दिखाकरके शबाहत ॥

क्षत्री है कहां विश्वमें अर्जुनके बराबर ।
विष्णुकी कला जिनमें चमकती थी सरासर ॥

वो वैश्य दिखाओ तो सही साहिबेहश्मत ।
जो दिलसे कमाते थे फकत धर्मकी दौलत ॥
होती थी हरेक काममें अंजाममें बर्कत ।
मानसे देखी नहीं नुकसानकी सूरत ॥

वो शूद्र बता दो जिन्हें सेवाका वो बल है ।
धो डालें मसक्कतसे जो अज्ञानका मल है ॥

वो शक्ति नहीं तेज नहीं नाम है बाकी ।
कहनेको बिरमन हैं येही काम है बाकी ॥
मनसे नहिं नवत कोई प्रमाण है बाकी ।
आगाज हुआ पर अभी अजाम है बाकी ॥

गो सींग नहीं तौ भी तो इन्सान वोही है ।
अक्षर नहीं माता जिसे हैवान वोही है ॥

क्षत्रीमें नहीं कर्मका बल राम दुहाई ।
और वैश्यने ईमानकी दूकान बढाई ॥
कुछ शूद्रहि करते नहीं विपरीत कमाई ।
हर कौमसे होने लगी बातिनमें बुराई ॥

दर खोल दिया नर्कका पापोंने हमारे ।
यमदूत चले आते हैं हाथोंको पसारे ॥

जिस राहपे चलत थे वोही राह भुलाई ।
क्यों तुमहि कहो धर्मपे आए न तबाही ॥

सब धर्महीकी ओटमें करते हैं बुराई।
इस रोगकी दुनियामें नहीं कोई दवाई॥

जो धर्मके रहवर है वोही भूल रहे हैं।
अज्ञानके झूलेपे चढे झूल रहैं है॥

अन्तर तो बहुत कालसे अनरीत थी जारी।
अब जाहिरा सद्धर्मकी मर्याद बिगाडी॥
ये और मुशीबत पडी इस वक्तमें भारी।
क्या खोटी दशा आई है जगदीश हमारी॥

होने लगी हर रोज जहालतकी मनादी।
जो राह थी धुन्धलीउसे बिल्कुलही मिटादी॥

कलियुगने बडी धूमसे सागरका चलाया।
कुछ होश जमानेको नहीं मस्त बनाया॥
जो पास मुसल्ला था वो पैरोंसे हटाया।
जो हुक्म खुदा था उसे हाथोंसे मिटाया॥

जाहिरमें जवानोंसे वडा प्यार किया है।
मीठेका किया नाम मगर जहर दिया है॥

वो चाल चले है नहीं दिखलानेके काबिल।
वो बात कहे हैं नहीं बतलानेके काबिल॥
वो अक्ल है बिगाडी नहीं समझानेके काबिल।
वो हाल हुआ है नहीं जतलानेके काबिल॥

कलियुगकी है फिटकार शिफा हो नहीं सक्ती।
इस रोगकी ईलाव दवा हो नहीं सक्ती॥

क्या मद हैं तूफान उठाते नहीं डरते।
सोते हुए फितनेको जगाते नहीं डरते॥
ईमानकी बातोंमें उडाते नहीं डरते।
बे साखता तोःमतको लगाते नहीं डरते॥

खुशीदंको बादलमें छिपाया है जिन्होंने।
रोशन है ये अंधेर मचाया है जिन्होंने॥

किस ख्वाबमें हो रहबरेदीं ये तो बताओ।
अब हदसे जियादा हुई गफलत जरा आओ॥
जो भाई पडे सोते हैं उनको तो जगाओ।
सतधर्मका उपदेश मोहब्बतसे सुनाओ॥

श्रुतिका है प्रमाण और अनुभवकी गवाही।
इस कामसे बढकर नहीं दुनियामें भलाई॥

ये माना कमानेका तुम्हें फिक्र पडाहै।
वो पहिली सी बीनाई नहीं जोफ बडा है॥
देखो तो सही सामने अज्ञान खडा है।
मचकाय मचकता नहीं पर्वतसा अडा है॥

भगवानसे डरना नहीं खम ठोक रहा है।
जो कहनी न कहनी है सभी झोक रहा है॥

पापीने कमर पापसे बांधी है खुदा है।
कुछ यत्न करो केतुकी मनहूस दशा है॥
जो धर्मका चन्दा है उसे ग्रहण लगा है।
इस खूटसे उस खूटतलक शोर मचा है॥

आंखोंका वो ईमानक तलवोसे मलेगा।
ये कुफ्र तो काबेसे उठा अब न टलेगा॥

अब हिन्दमें ईमानका है कौन ।।
जो धर्मकी पुस्तक उसे कहते हैं ॥
तपदानसे मिलता नहिं उकबाका ।
नादानको ठगनेका है माकूल बह ॥

क्या दुष्ट निडर होके जबां खोल रहे हैं।
हक छोडके नाहकके बुरा बोल रहे हैं॥

कब इल्मो अदबसे हुई बतलाओ ये शौकत।
कब अक्लोखिरदसे हुई बतलाओ ये हिम्मत॥
व्यवहारमें बतलाओ हुई कब ये सिदाकत।
तुमही कहो इन्सानने कब पाई ये इज्जत॥

आलिम हैं वही अक्लमें उनसे नहीं बढकर।
मजहबको फकत खेल समझते हैं जो पढकर॥

पढते नहीं मीमांसा और योगको छोडा।
बल न्यायका मुतलक नहीं वेदांतको तोडा॥
पाबन्द नहीं सांख्यके व्याकर्ण है थोडा।
मतलब तो समझते नहीं हांके हैं गपोडा॥

सच कहता हूं कुछ झूठ नहीं राम दुहाई।
गुमराहोने मजहबकी युँही खाक उड़ाई॥

जब भेद किसी तरह समझमें नहीं आया।
हठधर्मीसे वेदोंका नया अर्थ लगाया॥
जो बात थी मतलबकी उसे साफ उडाया।
ये दीदओ दानिस्ता है पाखण्ड मचाया॥

ऐ भाइयो वेदार हो हिम्मतको बढाओ।
अज्ञान चला आता है आगेसे हटाओ॥

उपनिषदोंको कहते हैं नहीं वेदकी बानी।
हां अक्लसे गढ़ली है फकीरोंने कहानी॥
गीतामें बहुत नुक्स निकाले हैं जबानी।
घनश्यामसे समझे हैं अधिक आपको ज्ञानी॥

भगवानके जब वाक्यका प्रमाण नहीं है।
सत उठगया दुनियासे ईमान नहीं है॥

कुछ हिन्दमें खाली नहीं गीताकी दुहाई।
कुल अहले जबाँ फख्रसे करते हैं बडाई॥

जिस ज्ञानसे अज्ञानकी बिल्कुल हो सफाई ।
वो सैन है गीतामें समझमें नहीं आई ॥

खुरशीदके प्रकाशमें कुछ दोष नहीं है ।
अंधे हैं अवश दिनमें अगर होश नहीं है ॥

धन धन हैं अहो व्यासजी धन उनकी कमाई ।
वेदोंको मथा सूत्र रचे राड मिटाई ॥
जब उठ गया परदा तो हकीत नजर आई ।
ये भागवत महारानी अनुभवसे बनाई ॥

नादन है जाहिल अभी पहुँचे नहीं जिनको ।
इस ग्रन्थपे आती है हँसी भाइयो जिनको ॥

सच तो है युँही धर्मकी तस्वीर यही है ।
वेदोंकी मुशारा लिखि तदसीर यही है ॥
जिससे हरी मिल जायँ वो तदबीर यही है ।
जो पार हो अज्ञाके वो तीर यही है ॥

ऐ भाइयो कल गैबसे आवाज ये आई ।
हो जाती धुरतक इसी गुटकेसे रसाई ॥

जो कुछ है लिखी अर्शपे गङ्गाकी बडाई ।
पोशीदा नहीं जानती है सारीहि खुदाई ॥
शिवजीने जटा खोलके मस्तकपे चढाई ।
अन्धेर मचाते हैं जो करते हैं बुराई ॥

चौरसीके चक्करमें वो सौ वार पडेंगे ।
इकबारभी गंगाकी जो निन्दाको करेंगे ॥

स्नानसे निर्मल हो जहाँ अर्बे अनासर ।
गंगाहिका वो भण्डार है वह विश्वके अन्दर ॥
इस जलसे न थलसे है निजारा कोई बतंर ।
जगदीशके चरणोंसे हुए पाक सरासर ॥

ऋषियोंने विचरनेको किनारा यही पकड़ा ।
मकबूल इबादत हो सहारा यही पकड़ा ॥

जब बौद्धने सतधर्मके दुनियासे मिटाया ।
शंकरहिका बल थाके जो श्रुतिको जगाया ॥
इसका यही बदला है जरा खौफ न आया ।
सिद्धान्तको उनहीके बतोलोमें उडाया ॥

क्या जर्फ है मिल मिलके वो मुह फोड़ रहे हैं ।
सत्पुरुषपे वो तान नये जोड़ रहे हैं ॥

कुछ भेद नहीं जीव वही ब्रह्म वही है ।
ये एकता शंकरने श्रुतिसे कही है ॥
फल योगका और ज्ञानका बस सार यही है ।
काफिर है जो कहता है बात नई है ॥

मैं एक बहुत होके करूं नाम जहांका ।
जगदीशका सङ्कल्प है क्या काम जबांका ॥

साधूका वो सत्सङ्ग है अज्ञान मिटे है ।
जो गाँठ पडी भ्रमकी वो गाँठ छुटे है ॥
सरपरसे गुनाहोंका गुरू भार उठे है ।
जो फेरके कटता नहीं वो फेर कटे है ॥

साधूका बना भेष हरी घूम रहे हैं ।
वो बावले दुनियाके कदम चूम रहे हैं ॥

रघुनाथजी जिस वक्त के लंकाको सिधारे ।
सोचा के हों निर्विघ्न सभी काम हमारे ॥
सब कामसे पहले ही समन्दरके किनारे ।
पत्थरके महादेव बना आप पधारे ॥

ज्ञानीकी दृष्टिमें जरा हानि नहीं है ।
पूजनका फकत लिङ्ग है अज्ञान नहीं है ॥

वो योगका आशय है दृष्टीको जमाओ ।
आलम्भ कोई मोहनी आकार बनाओ ॥
ये पक्ष है भक्तीका के भगवतको रिझाओ ।
विनती करो प्रणाम करो नामको गाओ ॥

हां, योगमें भक्तीकी फकत चाश मिली है ।
कुछ प्रतिमा पूजन नहीं दुनियामें चली है ॥

संसारमें घनश्यामने जो शान दिखाई ।
उस शानमें कम्बख्त निकाले है बुराई ॥
वो मार खुदाकी है के हरचन्द बताई ।
यह रम्ज अभी उनकी समझमें नहीं आई ॥

क्या कर नहीं सकता है जो मायाका पती है ।
हर भोगकी इच्छा नहीं वो बाल यती है ॥

जब धर्मकी मर्य्यादा जमानेसे उठे है ।
ईमानकी पूँजी सरे बाजार लुटे है ॥
बढता है उधर पाप इधर पुण्य घटे है ।
फिर घोर हो ऐसा कि जिगर सुनके फटे है ॥

भक्तोंकी विनय दुष्टोंकी अनरीतके फलसे ।
नैमित्तिक अवतार हो जगदीशके बलसे ॥

अवतारमें जगदीशसी होती नहीं अजमत ।
जिनका है बयाँ उनमें भरी है अभी गफलत ॥
गो पेटके भरनेकी है माना उन्हें कुदरत ।
अफसोस नहीं जानते विष्णूकी हकीकत ॥

है लुत्फ वहां उल्फत घनश्याम नहीं है ।
यूँ कोई जिये ज़ीस्तका आराम नहीं है ॥

अय भाइयो तुम पहलेकी हालतको तो देखो ।
और अपने बुजुर्गोंकी असालतको तो देखो ॥

किस धूमसे फैली है जहालतलो तो देखो।
तूफान उठाया है विकालतको तो देखो॥

अंधेर करे नूरका जुलमतमें छिपा दें।
बीडा ये उठाया है सत् धर्म मिटा दें॥

क्या हाल लिखूं धर्मका बँधती नहीं हिम्मत।
हाथोंसे कलम छूट गया क्या हुई ताकत॥
वो बाब खुला गमका चली आती है रिक्कत।
आँखोंसे चलो देख लो देता हूँ शहादत॥

मिलती है बुजुर्गोंको हरएक रस्ममें गाली।
पित्रोंकी तृप्तीकी सहज राह निकाली॥

आते हैं कनागत चले करता नहीं कोई।
अपमानसे पितरोंके भी डरता नहीं कोई॥
श्रद्धासे बना पिंडको भरता नहीं कोई।
खुद खाते हैं उनके लिये धरता नहीं कोई॥

दस सालसे देते हैं दुआ घेर रहे हैं।
हसरत भरी आंखोंसे खडे हेर रहे हैं॥

कुलकरके ये कफ्फारेके देनेमें है बर्कत।
पित्रोंकी मिला करती है अर्वाहको फरहत॥
अपना तो ये मजहब है उठाते नहीं हुज्जत।
इस कर्मसे इसलामके होती है सिदाकत॥

कलियुगकी वो औलाद है छानी नहीं रहती।
मा बापको चुल्लूभर पानी नहीं देती॥

सतवाक्र शुभाचारमें विश्वास नहीं है।
करते हैं बुरे कर्म मनुष त्रास नहीं है॥
फिर धर्मपे आजायें कभी आस नहीं है।
बेवाओं की असमतका जरा पास नहीं है॥

करनीका ये फल है वो गजब टूट रहा है।
नाकर्द गुनाहोंका भी जी छूट रहा है॥

जब नाम पुनर्व्याहका आता है जबांपर।
रहजाती हैं बेवाएं कलेजेको पकडकर॥
यूँ बैन रोरोके करें हाय मुकद्दर।
मा बापही रांडोंकी उतरवाते हैं चादर॥

विष घालके विधवाओंको देता नहीं कोई।
ये पुन्य तो अनमोल है लेता नहीं कोई॥

माको कभी भाईकी सुना कहती है दुखिया।
क्या कहर है हम रांडोंको खेया नहीं जाता॥
अन्यायपे बांधी है कमर आपने बाबा।
पर मुफ्तमें लगवाते हो नीलका टीका॥

चूल्हेमें गया नाम बने काम तुम्हारे।
बाजारमें लेजाओ करो दाम हमारे॥

बुद्धीको किया नष्ट हरएक नेमको छोडा।
सन्तोष क्षमा शील दया व्रतको तोड़ा॥
लाज उठ गई श्रद्धा नहीं मुँह ज्ञानसे मोडा।
ईमानपै चलते हैं ऐ तूफान है जोडा॥

तज धर्मको गैरोंके गले हार हुए हैं।
जो चिह्न जनेऊके गले थे अब तार हुए हैं॥

वैदिकका है प्रमाण वो पढता नहीं कोई।
क्या अर्थ है तपका ये समझता नहीं कोई॥
जो नेम है मन्तव्य बरतता नहीं कोई।
इस नफसको हां कैदमें करता नहीं कोई॥

जो सन्तके व्रतोंकी लिख आए हैं बडाई।
अंधेर हैं अब उनको बताते हैं कसाई॥

शमदमका पता भी नहीं वैराग कहां है ।
संसारके भोगोंमें अधिक प्रीति तो कहां है ॥
दरपरदा कपट रखते हैं इखलास अयां है ।
सत् प्रेम परस्पर नहीं कैसा ये समां है ॥

अंतरहीका साधन नहीं पुरुषोंसे उडाया ।
हठधर्मीके धब्बेनें तिलककोभी खेडाया ॥

जिस मन्द्रमें फेरे हैं मनुष नामकी माला ।
और ध्यानमें आता है जहां रूप निराला ॥
क्या ध्यान निकाला है क्या ज्ञान निकाला ।
ये हठ है कि देवालयको करदें तहोबाला ॥

आदमका नहीं छोटा कोई धर्म निशाको ।
अन्धेर है ढाते हैं खुदाके भी मकांको ॥

क्या सोते हो जागो अजी जागो अजी जागो ।
हठधर्मीको त्यागो अजी त्यागो अजी त्यागो ॥
अज्ञानसे भागो अजी भागो अजी भागो ।
मन प्रेममें पागो अजी पागो अजी पागो ॥

साधू ऋषी योगी मुनिजन टेर रहे हैं ।
वो कानसे सुनते नहीं मुँह फेर रहे हैं ॥

जो कर्म है करनेको वो करते नहीं बिल्कुल ।
ये ज्ञान पडा है के समझते नहीं बिल्कुल ॥
है ऐसे निडर पापसे डरते नहीं बिल्कुल ।
पत्थरसे कलेजे हैं पिघलते नहीं बिल्कुल ॥

जिन भूतपे आया है चोटी है उतारी ।
कुछ काम नहीं करती है तदबीर हमारी ॥

इस वक्तमें जातीका बडा ध्यान नहीं है ।
वो ऊँच हो या नीच हो कुछ आन नहीं है ॥

जो चाहे सो खाये पिये प्रमाण नहीं है।
पोशाक जवाँ साफ हो कुछ हानि नहीं है॥
जो ढङ्ग जो आसार नमूदार हुए हैं।
ऐसेही निशाँ देखके अवतार हुए हैं॥

फटती है जमीं आहसे यह दर्द नया है।
क्या रोग लगा चर्खका मुँह जर्द हुआ है॥
फैली है बवा हिंदमें ये कैसी हवा है।
पानीका मजा तलख हुआ भेद ये क्या है॥
वो आग लगी है के दुहाई दुहाई।
कलियुगने उपद्रव बडी दुनियामें उठाई॥

लो आज गिरा जाता है खुरशीद जमींपर।
और चाँद छिपा ओढके तारीकीकी चादर॥
देखो तो जरा टूटते हैं तारे सहम कर।
क्या इन्द्रने रोसेकी छडी बाँधी फलकपर॥
शिवजीकी समाधी खुली अंधेर नहीं है।
विष्णूका सिंहासन हिला अब देर नहीं है॥

आँखोंसे दिखाई नहीं देते हैं किनारे।
दर्या वो चढा पापका कर्मोंसे हमारे॥
पकडो बहे जाते हैं सभी हाथ पसारे।
सुनता नहीं दुनियामें कोई टेरके हारे॥
गजराजसे भारी है विपत फन्द छुडाओ।
सद्धर्मके बेडेको हरी पार लगाओ॥

जगदीश बजुज आपके है कौन हमारा।
जब भीड हुई सबने तुम्हीको है पुकारा॥
वो नाम मुझे याद है सरकार तुम्हारा।
गुमराहोंको जो खिज्र हो निर्मलको सहारा॥

हां आप सहाई हूं तो यह भार टलेगा।
गर विश्वभी लग जाय तो जौभर न टलेगा॥

प्रह्लादने जब आपसे लौ अपनी लगाई।
वो कौनसी आफत थी जो सरपर नहीं आई॥
जब आपहि हरवक्त हुए दिलसे सहाई।
पापीपे पडी लौटके पापीकी बुराई॥

जिस हाथसे उस दुष्टके चीरा था शिकमको।
उस हाथसे अय नाथ उभारो अभी हमको॥

जब चीर सभा मध्य दुशासनने उतारा।
गोविंद हो गोविंद हो द्रोपदीने पुकारा॥
उस टेरको सुन आपने झट पटको सँभारा।
हे कृष्ण मुझे याद है वृत्तान्त वो सारा॥

जिस लाजसे प्रभूजी रखी लाज वहांपर।
उस लाजकी बलिहारी रखो लाज यहांपर॥

जब आपकी महिमाको हृदयेसे भुलाया।
मतहीन हुआ रावण सीताको चुराया॥
वो चक्र फिरा खाकमें लंकाको मिटाया।
और पापीका परिवारसहित नाम मिटाया॥

जिस बलसे भुजा सीस दशाननके उतारे।
उस बलसे करो आज सभी काज हमारे॥

अय भाइयो कुछ आपभी हाथोंको हिलाओ।
जो पैर थके हैं उन्हें आगेको बढाओ॥
जीवनका यही धर्म है मत देर लगाओ।
गौ आन फँसी दुष्टके फंदेसे छुडाओ॥

था कृष्णका बल गिरिको उठा भीड हटादी।
पर अपनीभी लाठी तो गुवालोंने लगादी॥

मुमकिन नाहिं मुश्किल न हो आसान तुम्हारी ।
हाँ मानलो अय भाइयो ये बात हमारी ॥
अब जौनसी बहबूदीकी तदबीर विचारी ।
तनसे रहे मनसे रहे धनसे रहे जारी ॥

गो धर्मपे चलनेकी मसावात नहीं ।
हिम्मत करो फिरभी तो बडी बात नहीं ॥

जुरअतको सिंभालो नहीं पछताओगे साहिब ।
कम हौसलगीसे बडे दुःख पाओगे साहिब ॥
ईमानकी जब राहसे हट जाओगे साहिब ।
जाहिर है बेईमानहि कहलाओगे साहिब ॥

घबराओ नहीं सबसे इज्जतको दिखाओ ।
यह धर्मका संग्राम है सुरतीको दिखाओ ॥

यह दीनका अय भाइयो झंडा है उठावो ।
वो शौकसे ईमानकी मीना है चढाओ ॥
हिम्मतके कदम जोडके निश्चयसे बढाओ ।
यह नीति है अब हाथ सखावतके दिखाओ ॥

हर सिम्तमें अज्ञानके दल टूट रहे हैं ।
सत धर्मको बे खौफ हुए लूट रहे हैं ॥

श्रद्धासे कमर बांधलो अभ्यास बढाओ ।
विश्वाससे सन्तोषकी पेटीको लगाओ ॥
वैरागसे सोते हुए पुरुषोंको जगाओ ।
नारा करो ऐसा के जहालतको हटाओ ॥

होशियार हो अब ज्ञानकी शमशीर निकालो ।
वो ध्यानकी देखो है सिरपर जाओ उठालो ॥

यह शीलकी बन्दूक है लेजाओ उठाकर ।
वो गोलियां सतनामकी भरलो अभी जाकर ॥

रणभूमिमें हलचल करो गणपतको मनाकर।
जितना है कपट तोड दो उपदेश सुनाकर ॥

मर्यादसे शत्रुको दवा दण्डसे मारो।
पृथ्वीका वड़ा भार है धीरजसे उतारो ॥

फिर आज़ जमानेको वोही शान दिखा दो।
दिल खोलके सत्‌धर्मका नक्कारा बजा दो ॥
गुमराई हरएक सिम्तमें फैसी है मिटा दो।
ये आग तअस्सुबकी मुहब्बतसे बुझा दो ॥

जो नामके गुम हैं उन्हें रोशन करो ऐसा।
बतलानेकी हाजत नहीं खुरशीद है जैसा॥

सुत नार तजी राज तजा धर्मको पाला।
है नाम हरिश्चन्द्रका सतलोकसे बाला॥
शशि भानुका टलजाय है निशदिनमें उजाला।
ये धर्मका प्रकाश तो टलता नहीं टाला ॥

हां धर्म रहे और ये मर जाय तो जाये।
पीछे नहीं हटना कभी घर जाय तो जाये॥

ईसा है न मूसा है सिकन्दर है न दारा।
लुक्मा न अरस्तू न धनन्तर है विचारा ॥
राघवका न जादवका चला मौतसे चारा।
गोरखसा जती बलसा सखी कालसे हारा ॥

वो कौन बशर है जिसे मरते नहीं देखा।
पर पेट कजाका कभी भरते नहीं देखा ॥

सायेका अबस नाज उठाना नहीं अच्छा।
संकल्पकी वस्तूपे लुभाना नहीं अच्छा॥
दिल बातोंही बातोंमें फँसाना नहीं अच्छा।
ये रोग बुरा पीछे लगाना नहीं अच्छा॥

दुनियाका फकत नाम है पर रूप नहीं है।
खुरशीदकी खाली है चमक धूप नहीं है॥

दो दिनकी फकत रोल है इन्सानमें क्या है।
वो फूल तो मुरझायगा जो फूल खिला है॥
दुनियामें कोई शै नहीं जिस शैको बका है।
हाँ याद रखो भाइयो यकनामे खुदा है॥

ये धन है ये परिवार है क्या फूल रहे हो।
मायाके भुलावेमें पडके भूल रहे हो॥

क्या चाश है देखो तो सही रामभजनमें।
शीरीनीसे होती है जबाँ बन्द दहनमें॥
खाकरके नहीं रहती है हसरत कोई मनमें।
ब्रह्माण्डके ऐश्वर्यका अनुभव हो बदनमें॥

अनमोल है ये इसका कोई मोल नहीं है।
और भारी भी ऐसा है कि कछू तोल नहीं है॥

ये प्रेमका कूँचा है यहाँ नाम नहीं है।
खुदबीनी खुद आराईका कुछ काम नहीं है॥
हरवक्त मसावी सुबह हो शाम नहीं है।
फँस जाता है दिल दाना नहीं दाम नहीं है॥

फिर लौटके दम गैरका भरते नहीं देखा।
ये नशा तो आँखोंसे उतरते नहीं देखा॥

दुनियाकी खुशी छोडके जीना है गवाँरा।
और जीतेही जी जानको खोना है बिचारा॥
हर आन उसी ध्यानका रहता है सहारा।
मिल जाता है उस भक्तको हाँ कृष्ण पियारा॥

इस राहमें रखना कदम आसान नहीं है।
तलवारोंपे चलनेकी तुम्हें बान नहीं है॥

जोबनके नशेमें कहीं मखमूर है होना।
क्या नर्म बिछाया है या मखमलका बिछौना॥
इस ग्राममें चोरोंका सदा रहता है रोना।
साफ कहे देते हैं जगते हुए सोना॥

है लाल बँधा गाँठमें हुशियारहि रहना।
लूट जायगा गफलतमें खबरदारहि रहना॥

इस राहपे आता नहीं धनमें कोई भूला।
पर जाऊँगा डर जाता है तनसें कोई भूला॥
हां इल्म है आलिम नहीं मनसें कोई भूला।
निर्वाण नहीं होता है वनमें कोई भूला॥

वो फेर है मायाका निकलता नहिं कोई।
गिर पडता है चिंतासे संभलता नहीं कोई॥

सत् कर्म करो नेमसे शुद्धान्नको खाओ।
अभिमान तजो प्रेमसे भागीरथी न्हाओ॥
जो जीव है सो ब्रह्म है हरगिज न सताओ।
घनश्यामको दमदमसें यही टेर सुनाओ॥

मनबुद्धि प्राणोंको नजर करता हुँ तेरी।
अब वेग खबर लीजिये गोपालजी मेरी॥

वो योग करो जो तुम्हें पापोंसे छुडा दे।
और भक्ति हो ऐसी यहीं भगवतसे मिला दे॥
वो हौसला पैदा करो मस्तीको मिटा दे।
और शौकभी ऐसा होके हस्तीको भुला दे॥

घनश्यामका मुँह देखलो और अपना दिखाओ।
ऐसा करो दिल साफ के आईना बनाओ॥

हरनामका रथ प्रेमके हाथों बनाओ।
पहियोंकी जगह चाँदको सूरजको चढाओ॥

जोडी है सर्जी श्रुति स्मृतिको लगाओ।
अनुभवको बना सारथी चाहो जहाँ जाओ॥

इस लोकमें परलोकमें खटका नहीं रहता।
यह रथ तो कहीं भाइयो अटका नहीं रहता॥

ये राग है वो द्वेष है दोनोंको हटाओ।
अय भाइयो चित्त प्रेमसे चेतनमें लगाओ॥
हाँ अथ महावाक्यका सुरतीपे जमाओ।
स्मृतिको छोडो नहीं वो तार लगाओ॥

इस जिक्रमें गैरोंकी सुनाई नहीं होती।
मतलूबकी तालिबसे जुदाई नहीं होती॥

वो काम है जिसमें नहीं नाम जियाँका।
वो नाम है ये जिसमें नहीं काम जबाँका॥
ईमान रखो पाओगे आराम यहाँका।
हुशियार हो अब आता है पैगाम वहाँका॥

वो जिन्स तो ऐ भाइयो आंखोंपे चढी है।
पर देखना फिरना नहीं कीमतभी कही है॥

क्या आज कन्हैयाने नया राग उठाया।
जा तनसे निकलती है गजब बोल बजाया॥
सुधबुध न रही नामको वो रूप जमाया।
गोखेल किया मुझको तो दीवाना बनाया॥

जलवा है ये छबिका कि दिखाई नहीं देता।
मुरलीकी वो ध्वनि है कि सुनाई नहीं देता॥

मैं कृष्णका हूँ कृष्ण मेरे ज्ञान यही है।
वो मुझमें हैं मैं उनमें हूँ बस ध्यान यही है॥
हैं दिलसे मिले प्रेमकी पहचान यही है।
संशय नहीं होता कभी ईमान यही है॥

करता हूँ हरएक कामको मैं कृष्णके बलसे।
निर्भय हूं इसी वास्ते मतलब नहीं फल से॥

अज्ञानसे देख तो बहुत दूर खुदा है।
हाँ ज्ञान ये कहता है नहीं तुमसे जुदा है॥
यह ध्यानकी खूबी है के भेद खुला है।
वो आपमें है आप मिला है न जुदा है॥

क्या बावला निर्भय है कहां अक्ल गई है।
जो बातके कहनी नहीं वो बात कही है॥

जै जै कहो जै जै कहो क्या नींदने घेरा।
ऐ भाइयो मैं निर्भय हो बिलकुल है सबेरा॥
सूरज निकला आया नहीं कहनेको अँधेरा।
क्यों वाद बढाते हो हुआ आप निबेरा॥

किस राहमें बैठे हो सभी ध्यान लगाये।
शंखासुर संहार हरी वेदको लाये॥

ऐ भाइयो मैं आपकी हूँ शानके सदके।
क्या पाक तबीयत है ईमानके सदके॥
तक्सीर अफू कीजिये बस जानके सदके।
ये आपका भिक्षुक है भगवानके सदके॥

अपना तो वोही फर्ज था जो सरको झुकाया।
ये आपका अहासान है नहीं जाता उठाया॥

॥ पद ॥

नमः ॐ तत्सत् नारायणाय॥
त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, नमो भगवते विष्णवे केशवाय॥
नमः ॐ तत्सत् नारायणाय।
त्वमेकं जगत् ईश्वरं वासुदेवं, नमस्ते चिते विश्वरूपात्मकाय॥
नमः ॐ तत्सत् नारायणाय।

त्वमेकं शिवं अक्षरं निर्विशेषं, नमस्ते सते सर्वलोकाश्रयाय ॥
नमः ॐ तत्सत् नारायणाय।
त्वमेकं सदा निश्चलं निर्विकल्पं,नमोब्रह्मणेव्यापिनेनिर्गुणाय ॥
नमः ॐ तत्सत् नारायणाय ।
त्वमेकं परं सुंदरं शांतरूपं, नमो सुखस्वरूपाय मुक्तिप्रदाय ॥
नमः ॐ तत्सत् नारायणाय ।

॥ पद ॥

गोविन्दा तोरी महिमा अपरंपार ।
आपहि एक अनेक रूप भयो, नाम धरो संसार ॥
गोविन्दा तोरी महिमा अपरंपार ।
जडको चेतन चेतनको जड, करत न लागे बार ॥
गोविन्दा तोरी महिमा अपरंपार ।
रवि शशि पावक शब्द प्रकाशे,लिख रही अजब बहार॥
गोविन्दा तोरी महिमा अपरंपार ।
अपनी माया आपही जाने, निर्भय कहत पुकार ॥
गोविन्दा तोरी महिमा अपरंपार ।

॥ पद ॥

दयानिधि शरण तिहारी आयो ॥
निश दिन चहुँ दिशि डोलत२, सगरो विश्व मझायो ।
जहाँ देखो तहाँ दुखही देखो, सुख कितहूँ नहिं पायो ॥
दयानिधि शरण तिहारी आयो ।
हम हम मम मम रटना लगी, रामनाम विसरायो ।
आतम देव अजहू नहिं चीन्हो, वृथा काल गँवायो ॥
दयानिधि शरण तिहारी आयो ।

हम जानी कछु मान बढेगो, देहसों नेह लगायो ।
ब्रह्मरूपको जीव नाम भयो, मनमें नाहिं लजायो ॥
दयानिधि शरण तिहारी आयो ।
जहँलगि नाम रूप गुण निर्भय, मायाको रँग छायो ।
मायाका है कौन ठिकाना, यांसों भेट न लायो ॥
दयानिधि शरण तिहारी आयो ।

॥ होली ॥

सखी मोइको साँवरेकी नजर भई ।
आन कान जेती कछु जगमें, एकहु नाहिं रही ।
जबतें दृष्टि परी मोहनकी, सुध बुध बिसर गई ॥
सखी मोइको साँवरेकी नजर भई ।
कहनेमें आवत नाहीं सजनी, ऐसी बात कही ।
सन्मुख होय छिपो नैननतें, तकतीकी तकती रही ॥
सखी मोइको साँवरेकी नजर भई ।
जाने क्या जादू पढ फूँका, सैनन बीच दई ॥
अपनी गती प्राणनकी आली, सगरी खींच लई ॥
सखी मोइको साँवरेकी नजर भई ।
अष्ट प्रहर रैनन दिन क्षण पल, हरदम तान नई ।
निर्भय श्यामकी अधर मुरलिया, ध्वनि नहिं जात गही ॥
सखी मोइको साँवरेकी नजर भई ।

॥ पद ॥

अपनेको आपहि दुख देवे मनवा निपट अनारी हो रे ।
हरिविमुखनमें निशदिन डोले, सन्तनसों मुखते नहिं बोले
छोड अमीरस विषको घोले, जाने कहा बिचारी हो रे ॥

अपनेको आपहि दुख देवे मनवा निपट अनारी हो रे।
जितना विषयभोगको धावे, उतनाही मूरख दुख पावे।
आप करे आपहि पछतावे, करतबके बलिहारी हो रे॥
अपनेको आपहि दुख देवे मनवा निपट अनारी हो रे।
कबहूँ क्रोध मोह कभू जागे, कभू लोभमें इत उत भागे।
कितना कोऊ मनावन लागे, मानत नाहिं खिलारी हो रे॥
अपनेको आपहि दुख देवे मनवा निपट अनारी हो रे।
इतना जीवन युहीं गवानो, निजस्वरूप अजहूँ नहिं जानो।
दुखको सुख सुखको दुख मानो, निरभय बनी बिगारी हो रे॥
अपनेको आपहि दुख देवे मनवा निपट अनारी हो रे।

॥ पद ॥

चल मन सन्तसमागम कीजे।
हितको बोल सुनत नहिं एकहु, जीवन पल पल छीजे।
जब यमदूत पकड ले जैहै, मुझको दोष न दीजे॥
चल मन सन्तसमागम कीजे।
हरिचर्चा जब करिहै सुनिहै, पत्थर होय पसीजे।
छूटत सकल प्रबल मल मूरख, प्रेम रङ्ग अति भीजे॥
चल मन सन्तसमागम कीजे।
रामचरित्र सुधाको सागर, श्रवणन कर भर लीजे।
परमानन्द प्रगट होय त्यूँ त्यूँ, ज्यूँ ज्यूँ रतीसूँ पीजे॥
चल मन सन्तसमागम कीजे।
या मायाने छानबीनकर, राव रङ्क सब मीझे।
तासों निर्भय तबही हुइ है, श्याम सुँदर जब रीझे॥
चल मन सन्तसमागम कीजे।

॥ रुबाई ॥

पीछे पडता हूँ तो छातीसे लगा कहते हैं ।
हमें और तुम्हें रहा भेद नहीं देख तो लो ॥
तुम झरोकोंसे न मालुम किसे झाँकते हो ।
मेरा वस्तूंसे परिच्छेद नहीं देख तो लो ॥
हट तभी करना जब हम आपसे बाहर हों कभी ।
ये तो मानाके पढा वेद नहीं देख तो लो ॥

॥ पद ॥

ऊधोजी ले आइयो घनश्यामको मनायके ।
सब कुछ आंखन देख चले हो, कह दीजो समझायके ॥
ऊधोजी ले आइयो घनश्यामको मनायके ।
प्रीति करी तब कछू न सूझा, अब क्या हो पछतायके ॥
ऊधोजी ले आइयो घनश्यामको मनायके ।
जो नहिं आये कृष्ण बुलाये, मरजाऊं विष खायके ॥
ऊधोजी ले आइयो घनश्यामको जायके ।
हमरो सँदेसा भूल न जाना, निर्भय द्वारका जायके ॥
ऊधोजी ले आइयो घनश्यामको मनायके ।

॥ पद ॥

मोहे यही अचरज बडो भारी ।
हमारी सुध क्यों ना लेत बिहारी ॥
विश्वेश्वर विश्वात्मा विश्वम्भरवनमाली बनवारी ॥
दीनानाथ दयानिधि दाता, दीनबन्धु हितकारी ॥
मोहे यही अचरज बडो भारी ।
हमारी सुध क्यों ना लेत बिहारी ॥

जब २ भीर पडी भक्तनपर, तब २ विपत निकारी ।
नाना देह धरी श्रम कीनो, प्रतिज्ञा नहिं टारी ॥
मोहे यही अचरज बडो भारी ।
हमारी सुध क्यों ना लेत बिहारी ॥
रोग हरो चिंताको टारो, योग क्षेम करो सारी ।
सन्तनके निज काज सँवारो, सेवक बन गिरिधारी ॥
मोहे यही अचरज बडो भारी ।
हमारी सुध क्यों ना लेत बिहारी ॥
कर्म भक्त ज्ञान कर हीनो, जाने कहा बिचारी ।
निर्भय रामको दोष नहीं है, सगरी भूल तुम्हारी ॥
मोहे यही अचरज बडो भारी ।
हमारी सुध क्यों ना लेत बिहारी ॥

॥ मुसद्दस ॥

ये ऊधोने घनश्यामसे आके पूछा ।
महाराज मुक्तीके साधन हैं क्या क्या ॥
जगतमें पदारथ नहीं कोई ऐसा ।
मेरे दिलमें जिसकी हो बाकी तमन्ना ॥
मुझे अपनी भक्तीका रस्ता बताओ ।
सखे आत्मज्ञान हितसे सुनाओ ॥

कुशलसे तो हो ये कहो ऊधो प्यारे ।
अहो भाग हैं आज निश्चय हमारे ।
लडकपनकी यारीके बरताव सारे ।
लगे जोश करने मुहब्बतके मारे ॥
मगन होके केशवने हिर्दे लगाया ।
जडाऊ सिंहासन बिछाकर बिठाया ॥

किया विश्वकर्मासे चुपके इशारा।
हो दावतका सामान तैयार सारा॥
है ऊधो परम मित्र रुक्मिणी हमारा।
दबाओ चरण फर्ज है ये तुम्हारा॥

बड़े प्रेमसे द्वारकाधीश बोले।
थे जितने हकीकतके सब बाब खोले॥

सुनो मित्र कहताहुँ सच्ची कहानी।
यही मेरा अनुभव यही वेद वानी॥
सदाशिवने ब्रह्माने विष्णूने मानी।
बनाई नहीं बात है ये पुरानी॥

जिसे ब्रह्म कहते हैं वो आतमा है।
मिला सबमें ऊधोजी सबसे जुदा है॥

चिदानन्द घन नित्य निर्मल अमर है।
निराकार निर्गुण निरंजन अजर है॥
निराधार निरवयव मायासे पर है।
न खटका किसीका न काहूका डर है॥

है ब्रह्माण्ड काइम उसीके सहारे।
उसीके हैं यह नाम और रूप सारे॥

गजब उसकी कुदरत अजब उसकी माया।
दो आलमका सामान पलमें बनाया॥
हरएक जां हरएक शैमें खुदको छिपाया।
हरएक काममें जोर अपना दिखाया॥

हरएक दिलमें नूर उसका जलवः फिशा है।
हरएक अक्समें उसका जौहर अयां है॥

वो है जात मेरी जो जाते खुदा है।
परम देव श्रुतीने मुझको कहा है॥

मैं कर्ता अकर्ता हूँ तुमने सुना है ।
बका है मुझे और सबको फना है ॥
मनुष्योंके उद्धारको देहधारी ।
नहीं जानता कोई महिमा हमारी ॥

जगत्‌के बडे टेढे व्यवहार सारे ।
है कल्याण होना कठिन तिनके मारे ॥
जो जीते हैं केवल इन्हीके सहारे ।
वो योग अपने करते हैं पूरी बिचारे ॥
उन्हें धर्म और नीतिकी क्या खबर है ।
न मखलूलका हित न खालिकका डर है ॥

रहे रातदिन जिनको दौलतका खटका ।
उन्हें गैरकी और अपनी खबर क्या ॥
है खानेका शौक और पीनेको चसका ।
नहीं जानते हकपरस्तीको असला ॥
वो क्या जानें भक्तीमें कैसा मजा है ।
किसे योग कहते हैं और ज्ञान क्या है ॥

उदय पुण्य हो जन्म जन्मांतरका ।
तब होती है अपवर्गकी मनसे इच्छा ॥
कठिन इसके साधन हैं कम इसके शैदा ।
ये संसार ऊधोजी अद्भुत तमाशा ॥
नहीं पूरे होते कमानेके धन्धे ।
मनुष गांठके पूरे आंखोंके अन्धे ॥

ये अध्यास तनका है ऊधोजी ऐसा ।
बडे विद्वान और विरक्तोंमें देखा ॥
न हो रोग कोई मिले भोग अच्छा ।
ये है फिक्र हरदम ये है नित्य चर्चा ॥

शरीरोंकी सेवा शरीरोंकी पूजा।
नहीं जानते हैं मनुष देव दूजा॥

जो पंडित हैं उनको हैं तृष्णाने लूटा।
समझते नहीं धनको अफसोस झूटा॥
अहंकारका तार असला न टूटा।
न काम उनके वशमें न मोह उनका छूटा॥

वो मायाको मिथ्या नहीं मानते हैं।
वो ब्रह्मत्व अपना नहीं जानते हैं॥

हैं उनके बडे भाग उत्तम कमाई।
मेरी भक्ति जिनके दिलोंमें समाई॥
मैं उनका हरएक काममें हूं सहाई।
मुझे उनकी मंजूर है रहनुमाई॥

वो बन्दे मेरे मैं उनका खुदा हूँ।
वो मुझपर फिदा हैं मैं उनपर फिदा हूँ॥

जो मुझको अयाँमें निहाँ देखते हैं।
निहाँको खिदरसे अयाँ देखते हैं॥
मेरी जातमें कुल जहाँ देखते हैं।
जहांमें मुझे लामकाँ देखते हैं॥

मुझे जैसा समझो उन्हें तैसा मानों।
है जाहिरमें दो एक वा तिनमें जानो॥

है संसारमें गो बुरी उनकी हालत।
नहीं उनको पैसा कमानेकी कुद्रत॥
अमीरोंमें कम होगई उनकी इज्जत।
फकीरोंमें गुम होगई उनकी अजमत॥

नहीं खोटी उनमें वो विल्कूल खरे हैं।
हैं इन्सान क्या चीज मुझसे बडे हैं॥

मनुष उनको ऊधो करमहीसे माने ।
हिकारतसे देखें बुराई बखाने ॥
दरिद्री मलीन आलसी दीन जाने ।
हर एक बातमें उनसे बकवाद ठाने ॥

वो मेरी हजों हैं वो मेरी बुराई ।
नहीं उनसे नफरत है मुहसे लडाई ॥

दयाधर्म पालो और हिंसाको छोडो ।
वृथा मान अपमानसे मुँहको मोडो ॥
इधरसे हटाओ उधर मनको जोडो ।
उदासीन हो जावो आशाको छोडो ॥

जगत् वास्तव कुछ पदारथ नहीं है ।
हैं सर्वात्मा मित्र सच तो तुंही है ॥

पकड प्रेम बलसे प्राणोंकी धारा ।
चढो ऊर्ध्व जपते हुए ॐकारा ॥
जमाकर भ्रू मध्य आंखोंका तारा ।
करो ध्यान भृकुटीमें निर्भय हमारा ॥

विलय हो अहंकार आतम प्रकाशे ।
हो आनन्द पूरण सकल भ्रम नाशे ॥

॥ गजल ॥

उनको गर मुझसे सुती दिलगीरकी हाजत नहीं ।
मुझको उनसे बेवफा बेपीरकी हाजत नहीं ॥
जखमें दिल कह देंगे जैसा हाल है दिलका मेरे ।
मुझसे ऐ पैयाम्बर तकरीरकी हाजत नहीं ॥
उनका नक्शा हूबहू फिरता है आंखोंमें मेरी ।
ओ मुसव्विर देखना तसबीरकी हाजत नहीं ॥

दिल समझ जाता है मतलब आप उनकी बातका ।
ऐसे कुरआंके लिये तफ़सीरकी हाजत नहीं ॥
देख लो दुनियाको आंखोंसे अगर बावर नहीं ।
ये वो सच्चा ख्वाब है ताबीरकी हाजत नहीं ॥
एक फकत संतोष धन करता है इन्साँको गनी ।
जिनको यही दौलत मिली जागीरकी हाजत नहीं ॥
खाकसारीकी सिफत कुछ कीमियासे कम नहीं ।
नफ़सको मारा अगर अक्सीरकी हाजत नहीं ॥
जो रजा है यारकी मुझको वोही मंजूर है ।
आप कटजावेंगे दिन तदबीरकी हाजत नहीं ॥
हल्कए गेसुए जानका जो है हल्के पगोश ।
निर्भय उसके वास्ते जंजीरकी हाजत नहीं ॥

॥ कवित्त ॥

मायामें फँसा है मेरा मेरी कहत बावरे, मेरा और मेरी सब माटीमें समाय जाय । मेरा बल मेरी धाक मेरो जस मेरी साख, झूठा अहंकार छिनहूमें बिलाय जाय ॥ मेरा धन मेरो धाम मेरो रूप मेरो नाम, मेरा मेरा मेरी मेरी कहा लगाय जाय। मेरा पुत्र मेरी नार मेरा दास मेरो यार, निर्भय राम सबनको काल कूट खाय जाय ॥

॥ सवैया ॥

लख चौरासी भोगतही जुग बीतगए तब अवसर आयो ।
कर्म फलो पुनि धर्म फलो जब उत्तम या मानुष तन पायो॥
या तन देवनको दुर्लभ है चेत अचेत कहाँ भिरमायो ।
निर्भयरामको ध्यान नहीं कछु लाखन बार तुझे समझायो ॥

॥ दोहा ॥

दुर्लभ मानुष तन मिलो,अवसर बनो है आय ।
चेत तबेरा बावरे, बिरथा जीवन जाय ॥
मेरा मेरी मानकर, क्या मनमें रहो भूल ।
माटीका सब खेल है, अन्त धूलकी धूल ॥

॥ पद ॥

हमारा मन लागो जी प्रभूजीके चरण ।
जे माने मानो तिहिमानो,बहुआश्रम बहु वरण ॥
हमारा मन लागो जी प्रभूजीके चरण ।
जे जाने जानो तिहिजानो,बलधनादि दुखहरण ॥
हमारा मन लागो जी प्रभूजीके चरण ।
जे राखें राखों तिहि राखो संप्रदायी आचरण ॥
हमारा मन लागोजी प्रभूजीके चरण ।
निर्भय ज्ञान ध्यानको अस्थल, हरि सुमिरण हरिशरण ॥
हमारा मन लागो जी प्रभूजीके चरण ।

॥ पद ॥

यह कैसी हियेमें चोट लगी, चुपकेही बने नहीं जात कही ।
गोरस बेचन घरसे सटकी, मगमें श्याम कला करे नटकी ।
अँखियाँ अटकी बतियाँ खटकी, मटकीतें बह्यो जात दही ॥
यह कैसी हियेमें चोटलगी, चुपकेही बने नहीं जात कही ।
चाल अनोखी चितवन बाँकी, नैन विशाल मनोहर झाँकी ।
कैसा धीरज लाज कहाँकी, सुधिछबि निरखत नाहिं रही ॥
यह कैसी हियेमें चोट लगी, चुपकेही बने नहीं जात कही ।
ना जियरा घरमें लागत है, बनहूसों कोसन भागत है ।
ना सोवत है ना जागत है, लख न परत या रीति नई ॥

यह कैसी हियेमें चोटलगी, चुपकेही बने नहीं जात कही।
तनका कछुहू ध्यान नहीं है, बुरे भलेका ज्ञान नहीं है।
कोई कहे कछु हानि नहीं है, मान अथवा अपमान सही॥
यह कैसी हियेमें चोट लगी, चुपकेही बने नहीं जात कही।
निर्भय कोऊ आस नहीं है, निर्धन कौडी पास नहीं है।
जन्म मरणकी त्रास नहीं है, अद्भुत धुनी नहिं जात गही॥
यह कैसी हियेमें चोट लगी, चुपकेही बने नहीं जात कही॥

॥ पद ॥

रात मोहनके गले लागी, सखी री मैं सुख दुख भूल गई।
ठाढी ठाढी तक रही, पर घूँघटकी ओट।
मुखते कह आयो नहीं, कछु लागी हियेमें चोट॥
रात मोहनके गले लागी, सखी री सुख दुख भूल गई।
चितवनसे चितवन मिली, बैठ रही सर नाय।
प्रेम प्रीतिकी उमंगमें, सुरत झकोरे खाय॥
रात मोहनके गले लागी, सखी री मैं सुख दुख भूल गई।
चीर पकड खींचन लगो, श्याम सेजकी ओर।
सहम सहम पग धरने लागी, हितसों दोउ कर जोर॥
रात मोहनके गले लागी, सखी री मैं सुख दुख भूल गई।
झकझोरनमें ऐ सखी, मैं तो रही लजाय।
चोलीके बंद खोलके झट, हिये लई लिपटाय॥
रात मोहनके गले लागी, सखी री मैं सुखदुख भूल गई।
दो तनको एक तन भयो, सुध बुध गई बिसराय।
निर्भय ज्याने क्या हुआ, फिर भेद ज्ञान रहो नाय॥
रात मोहनके गले लागी, सखी री मैं सुखदुख भूल गई।

॥ गजल ॥

जो दिलसे मेरा नाम गाता रहेगा ।
तो मुझकोभी हाँ याद आता रहेगा ॥
नहीं पूरे होनेके दुनियाँके धन्दे ।
तू कबतक यहाँ दिल लगाता रहेगा ॥
ये है ज्ञानकी बूँटी ऐसी मुजर्रब ।
अगर ध्यानसे इसको खाता रहेगा ॥
तो आंखोंका कानोंका बुद्धीका मनका ।
मेरी जान सब रोग जाता रहेगा ॥
ये मुमकिन नहीं तुझसे मैं रूठ जाऊँ ।
जो तू मुझको निर्भय मानता रहेगा ॥

॥ गजल ॥

हाँ वोही दिल है वोही दिलबर रसाई होगई ।
कौन कहता है मेरी गमसे रिहाई हो गई ॥
सर कलम होनेसे क्या समझे जुदाई होगई ।
हां खयाले खामकी बेशक सफाई हो गई ॥
दिल नहीं मानूस असला अब खयाले गैरसे ।
ऐसी आईनेसे उनकी आशनाई होगई ॥
है वोही खंजर वोही गर्दन वोही जोरोजफा ।
या खुदा आपसमें फिर क्योंकर लड़ाई होगई ॥
अब नहीं बचनेका साहिब कुफ्रके इल्जामसे ।
इस तरफ मैं उस तरफ सारी खुदाई होगई ॥
मैंने दुनियाछोडदी औरमुझको जब छोडा नहीं ।
इस कदर बिगडीके आखिर हाथां पाई होगई॥

उनका कटजाता है वक्त आरामसे निर्भय यहाँ ।
जिनको सम दोनों भलाई और बुराई होगई ॥

॥ पद ॥

देव अर्चनका सुनो विधान बतावें पूरे सन्त सुजान ।
यावत् क्रिया हस्तकी, हिंसा तो एकनाय ।
सो सब सेवा देवकी, वरणन करी न जाय ॥
देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान ।
जों जों पग आगे पडे, पीछे हटे विचार ।
परिक्रमाही देवकी, होती है हरबार ॥
देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान ।
मुखसे जो निकले वचन, होवे प्रिय निष्काम ।
सबही देवकी वंदना, जानो निर्भय राम ॥
देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान ।
प्रारब्धसे जो करे, खान पान निर्द्वंद ।
तिसी भोगसे होत है, देव परम आनन्द ॥
देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान ।
इन्द्रिन मनका जो विषय, ताहि करो प्रणाम ।
सोइ देवको अङ्ग है, सोइ देवको धाम ॥
देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान ।
जीवमात्रसों प्रेमहो, भेद बुद्धि बिसराय ।
बडी भक्ति है देवकी, यामें संशय नाय ॥
देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान ।
सबमें सबसों है अलग, अस्ति भाति प्रिय रूप ।
कर विचार योंहि देवका, जिमि सूर्य और धूप ॥

देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान।

अन्तर बाहिर स्वास पर, रहे सुरत आरूढ।
याहि देवका जाप है, अति पावन अति गूढ॥

देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान।

खमाकार बुद्धि करो, नाम रूप भ्रम टार।
यही देवकी धारना, निर्मल अचल अपार॥

देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान।

सम हो साक्षी भावमें, बिसरजाय अनुमान।
सर्वोपरि यहि देवका, बतलाते हैं ध्यान॥

देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान।

साक्षी स्वयं स्वरूपमें, अन्तर्ध्यान होजाय।
यही मिलना है देवका, कहें समाधी ताय॥

देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान।

या विधि पूजन देवका, निर्भय करो जरूर।
ना कछु हट ना नेम है, ज्ञान होय भरपूर॥

देव अर्चनका सुनो विधान, बतावें पूरे सन्त सुजान।

॥ पद ॥

अब मोहे अद्वितीय पद भासो।

ना कछु माया ना संसारा, कारज कारण शून्य हैं सारा।
शीतल हृदय हुआ हमारा, सकल द्वैत भ्रम नाशो॥

अब मोहे अद्वितीय पद भासो।

चन्द भानु दर्से नहिं न्यारा, जित चितवत उतही उजियारा।
चेतन आनन्द रूप अपारा, ब्रह्म प्रकाश प्रकाशो॥

अब मोहे अद्वितीय पद भासो।

द्रष्टा दर्शन दृश्य समाना, आपहि एक बहुरूप छिपाना।
कोटिन भांति जतनसों छाना, सगरो स्वप्न तमाशो ॥
अब मोहे अद्वितीय पद भासो ।
जीव ब्रह्ममें भेद ना राखो, परम पुनीत अमीरस चाखो।
निर्भय सर्व ठौर भय हांको, सतगुरु राम कृपासो ॥
अब मोहे अद्वितीय पद भासो ।

॥ गजल ॥

एक लख्तही घनश्यामने जो बढाके प्यार घटादिया ।
अर्शमो अल्लापर चढा मुझे फिर जमींपे गिरादिया ॥
जीनेपे ऐसे खाक है गमसे कलेजा चाक है मेरा।
नाम खासुलखासमें लिखकर उन्होंने मिटा दिया ॥
क्या शौक था मेरी दीदका आंखोंसे रखते थे मुझे ।
अब ख्वाबमें मिलते नहीं क्या जाने किसने सिखादिया॥
मेरा विर्द उनका नाम है कोई कुछ कहे क्या काम है ।
मुझे याद उनकी मुदाम है उन्होंने मुझको भुलादिया ॥
मुझसे सखी री श्यामने, उलफतका रिशता तोडकर ।
अब तार आमदो रफ्तका, कुबरीके घरमें लगादिया ॥
निर्भय हुआ किस ध्यानमें, श्रद्धा नहीं है ज्ञानमें ।
छलनेको गोपीनाथने, मायाका रूप दिखा दिया ॥

॥ पद ॥

बासना बिसोर डार यही बडी बात रे ।
इन्द्रियनको संग छोड, विषयनते नेह तोड ।
प्रभुजीसे प्रीति जोड, दिन बीते जात रे ॥
बासना बिसार डार यही बडी बात रे ।

अहङ्कारमें न भूल, ममतापे डाल धूल ।
झूठी माया न फूल, साची दिखलात रे ॥
बासना बिसार डार यही बडी बात रे ।
हठधर्मी मनसे त्याग, मूढनसे दूर भाग ।
सन्तनके चरण लाग, जमसे जो डरात रे ॥
बासना बिसार डार यही बडी बात रे ।
सर्व ठौर सर्व काल, निर्भय आपको सँभाल ।
रामनामको न टाल, खात और कमात रे ॥
बासना बिसार डार यही बडी बात रे ।

॥ पद ॥

सुन मन मूढ सिखावन मेरो ।
मात पिता भगिनी भ्राता सुत, दारा कुटुम्ब घनेरो ।
अपने अपने सुखके साथी, कोऊ नहीं है तेरो ॥
सुन मन मूढ सिखावन मेरो ।
मंदिर भूषण वसन तुरंगगज्ज, सेना धन बहु तेरो ।
दो दिनका सब चमत्कार है, होय है अंत अंधेरो ॥
सुन मन मूढ सिखावन मेरो ।
जा तनकी रक्षाके कारण, स्वामीसे भयो चेरो ।
सो तन एक दिन खेहमें मिल है, समझायोसौ बेरो ॥
सुन मन मूढ सिखावन मेरो ।
सब तज हर भज सुख जो चाहत, निर्भय राम सबेरो ।
जीव नामसों ब्रह्म रूप भयो, श्याम सुंदर जिन हेरो ॥
सुन मन मूढ सिखावन मेरो ।

॥ पद ॥

माधो मोह ग्रन्थि नहिं टूटे।
या जगके नाते सत लागें, यद्यपि हैं सब झूठे॥
माधो मोह ग्रंथि नहिं टूटे।
अहंकार जीवनकी आशा, छोडत हूँ नहिं छूटे॥
माधो मोह ग्रंथि नहिं टूटे।
सुतको नेह नारिको चितवन, अँधरो करके लूटे॥
माधो मोह ग्रंथि नहिं टूटे।
लाख उपाय करो क्या होय है, निर्भय राम जब रूठे॥
माधो मोह ग्रन्थि नहिं टूटे।

॥ लावनी ॥

क्यों हेर फेरमें पडे हुए हो धनके।
क्या लोगे प्यारे बडा आदमी बनके॥
राजाके घरभी जन्म जो प्राणी पावे।
देह नग्न किये और खाली हाथों आवे॥
भोगोंका अन्त हो देह पात हो जावे।
आपी चलदे सब ठाठ पडा रहजावे॥
समझो तो सही मतलबको मेरे सुखनके।
क्या लोगे प्यारे बडा आदमी बनके॥ १॥
कङ्गाल घर तो जन्मे हैं पुरुष अकेला।
रीते हाथों ना पैसा गहे न धेला॥
जगते काहे यह दुनिया दर्शन मेला।
जब आंख मिची तो सारा झूठ झमेला॥
वाचारम्भण है यावत विषय दृगनके।
क्या लोगे प्यारे बडा आदमी बनके॥ २॥

कोई कहता है मैं साहुकारहूँ भाई ।
कोई कहता है घरमें नाहीं एकहु पाई ॥
कोई कहता इत उत डोले राम दुहाई ।
है खर्च बहुत और थोडी मेरी कमाई ॥
ये सब संकल्प विकल्प उठादो मनके ।
क्या लोगे प्यारे बडा आदमी बनके ॥ ३ ॥
संकल्पसे हो जाता है मेरा तेरा ।
निर्विकल्पतामें कुछभी नहीं बखेडा ॥
मंजिल सरपर और तुझे नींदने घेरा ।
है ब्रह्ममुहूरत निर्भय उठो सबेरा ॥
पाबन्द अगर हो दिलसे वेदवचनके ।
क्या लोगे प्यारे बडा आदमी बनके ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

नाथ लगाओ खेवा पार ।
भुज बुध बल खेवटको थाको, बही जात मझधार ।
आओ नैया मेरी बूडन लागी, हेरत भई बडीवार ॥
नाथ लगाओ खेवा पार ।
कठिन प्रवाह थाह नहिं पावत, सूझत वार न पार ।
लहर उठत है भवर परत है, तापर चलत बयार ॥
नाथ लगाओ खेवा पार ।
मेघा गर्जत दामिनी दमकत, बूँदनको लगो तार ।
निपट अँधेरो भ्रमने घेरो, धीरज गयो बिसार ॥
नाथ लगाओ खेवा पार ।
दुस्तर है भवसागर तरनो, निर्भय कहे पुकार ।
तुम बिन कोउ सुनत नहिं मेरी, टेर टेर रह्यो हार ॥
नाथ लगाओ खेवा पार ।

॥ लावनी ॥

महाराज इश्क आओ आओ तुम्हें सरपर बिठालाऊँ ।
जो कुछ हुक्म करो फौरन आँखोंसे बजा लाऊँ ॥
लखते जिगर दूं सेक अय हजरत खाओ अगर कबाब ।
आँखोंके पयमाने अश्कोंसे भरदूं पियो शराब ॥
शौकेगुलगश्त अगर होवे दागे पिनहांको दिखलाऊं ।
महाराज इश्क आओ आओ तुम्हें सरपर बिठालाऊं ॥
जो कुछ हुक्म करो फौरन आँखोंसे बजा लाऊं ॥ १ ॥
लिबास रंगी चाहो खींचदूं तनकी सरासर खाल ।
अभी कहो बिकजाऊं अगर चाहो हजरत धनमाल ॥
रागका शौक अगर होवे खटका दिले मुजतर सुनवाऊँ ।
महाराज इश्क आवो आवो तुम्हें सरपर बिठालाऊं ॥
जो कुझ हुक्म करो फौरन आँखोंसे बजा लाऊँ ॥ २ ॥
मकान गर चाहो तो सफा करदूं सीना अय यार ।
खादिम चाहते हो तो जानो दिल हाजिर है सरकार ॥
महज खिलबत हो अगर पसन्द तारे रगे जाँको बतलाऊँ ।
महाराज इश्क आओ आओ तुम्हें सरपर बिठालाऊँ ॥
जो कुछ हुक्म करो फौरन आँखों बजा लाऊं ॥ ३ ॥
हुस्नपरस्त हो अगर हुस्न अन्तर वो दिखादूं यार ।
लाखों चश्मो कमरसे बढकर निर्भय अजब बहार ॥
काश हकपरस्ती तुम चाहो तुम्हें ले हकमें समाजाऊँ ।
महाराज इश्क आओ आओ तुम्हें सरपर बिठालाऊँ ॥
जो कुछ हुक्म करो फौरन आँखोंसे बजा लाऊँ ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

मानत मिथ्या मोह अनारी ।
चित्र विचित्र मायाकी रचना, भासत न्यारी न्यारी ।
अन्तर आतम देव एक है, चहुँ श्रुति कहत पुकारी ॥
मानत मिथ्या मोह अनारी ।
काहूको बतलावत है सुत, काहूको कहे नारी ।
चर्मदृष्टिसों देखन लागी, आतमदृष्टि बिसारी ॥
मानत मिथ्या मोह अनारी ।
जा शरीरसों नाते जगमें, सो तौ बडो बिकारी ।
उपजत बाढत छीजत बिनसत, निर्भयराम बिचारी ॥
मानत मिथ्या मोह अनारी ॥

॥ गजल ॥

तसव्वुर दिलमें हरदम लब्पे दम्दम् यादगारी है ।
मिलेगा जाने कब हम्दम् निहायत बेकरारी है ॥
दो०—निश दिन क्षणपल रहत है, केवल तुमरो ध्यान ।
तुम बिन एक एक स्वास मोहिं, बीतत कल्पसमान ॥
दिखादो अब तो जलवा यार हरदम् दम शुमारी है ।
तसव्वुर दिलमें हरदम् लब्पे दम्दम् यादगारी है ॥
दो०—आसन लगा प्रेमको, असुवन माला धार ।
तन मन जला विभूतकी, जपूँ नाम हरबार ॥
गिगर हालत हो क्या जोगीकी साहब जो हमारी है ।
तसव्वुर दिलमें हरदम लब्पे दम्दम् यादगारी है ॥
दो०—कबहूं चेंटी ब्रह्मा भयो, कबहूं रावण प्रहलाद ।
काल अनादि बिचरत गयो, करूं कहाँतक याद ॥

पिला दो अब तो जामें क़बसे इन्तजारी है।
तसव्वुर दिलमें हरदम लब्पे दम्दम् यादगारी है॥
दो०—देह त्रै त्रै गुणरहित, सच्चित् आनन्दरूप।
परिपूरण आकाशवत्, शोभा महा अनूप॥
नहीं देखी वजह हमने क़िसीकी जो तुम्हारी है।
तसव्वुर दिलमें हरदम लब्पे दम्दम् यादगारी है॥
दो०—वरण आश्रम परिवार धन, मृत्यु अर्ध ऊर्ध्व लोक।
हानि लाभ जीवन मरण, जस अपजस हर्षशोक॥
यह सब कल्पित हैं निर्भयराम, जो अच्छी विचारी है।
तसव्वुर दिलमें हरदम लब्पे, दम्दम् यादगारी है॥

॥ पद ॥

पुरुषोंमें पुरुष वोही आला है।
शीतल हृदय हो कोदल बानी, दयावान प्रेमकी खानी॥
मान अपमान निकाला है। पुरुषोंमें पुरुष वही आला है॥
समता होय अर्जव बाढे, अहंकार निर्भय हो काढे।
काम क्रोधको टाला है। पुरुषोंमें पुरुष वही आला है॥

॥ पद ॥

ऐसोजी हिरण्यगर्भ भगवान।
सूक्ष्म गात लखो नहिं जात, त्रिलोकीको प्राण॥
ऐसोजी हिण्यगर्भ भगवान।
बुद्धि अपार अतुलबल निर्भय, इच्छा अतिबलवान॥
ऐसोजी हिरण्यगर्भ भगवान।

॥ पद ॥

तेरी चंचलता मिट जायगी, मन भृगुटी ध्यान लगाय ले।
आलस मिटे देह थिर होवे, आसन सिद्ध जमाय ले॥

तेरी चंचलता मिट जायगी, मन भृकुटी ध्यान लगाय ले ।
निद्रा जाय स्वप्न नहीं आवे, अनहद जोत जगायले ॥
तेरी चंचलता मिट जायगी, मन भृकुटी ध्यान लगायले ।
अक्षय निर्विकल्प सुख होवे, संयमको रस खायले ॥
तेरी चंचलता मिट जायगी, मन भृकुटी ध्यान लगायले ।
निर्भय राम परम गति पावे, आतम देव मनायले ॥
तेरी चंचलता मिट जायगी, मन भृकुटी ध्यान लगायले।

॥ गजल ॥

लौ तूने अगर वहां लगाली, कर तर्क यहांकी देखा भाली ।
खुदको भूला रखा तुम्हें याद, कैफियत उसने कुछ उठाली॥
एक माल एक जाँ एक ईमाँ, पूजी थी यही सो बेच डाली ।
दुनियामें वही है मर्द साहिब, दमूभर रहैं यादसे नखा ली॥
कपडामिला जैसा वैसा पहाना,रोटी मिली जैसी वैसी खाली।
कर स्वाँसोंही स्वाँस फरको, निर्भय है ये राह देखी भाली ॥

॥ पद ॥

कोई ऐसा जतन करूंगी, जामें सोच न हो मनको ।
गई जवानी आया बुढापा, देखो तो तनको ॥
धनसे अक्षयसुख होत नहीं है आग लगो धनको ।
कोई ऐसा जतन करूंगी, जामें सोच न हो मनको ॥
निर्भय हो मन चाहत नाहीं, अब बिषै सेवनको ।
ये राजपाट तज जोगनबन, रमजाऊँगी वनको ॥
कोई ऐसा जतन करूंगी, जामें सोच न हो मनको ।

॥ पद ॥

अनारी मन नारी नरकका मूल ।
रंग रूपमें रहो लुभाना, भूल गयो हरिनाम दिवाना ।

या जोबनको कौन ठिकाना, दोय दिनमें होय धूल ॥
अनारी मन नारी नरकका मूल ।
अमृत भरे कलश बतलावे, पकड २ आनन्द मनावे ।
चमडेकी थैली है मूरख, जापे रह्यो बडो फूल ॥
अनारी मन नारी नरकका मूल ।
जा मुखको चन्दा कर मानो, थूक लार वामें लिपटानो ।
छी छी छी छी तुमरी मतिपर, विष्ठामें गयो भूल ॥
अनारी मन नारी नरकका मूल ।
कैसा भारी धोखा खाया, तन परका मनको ललचाया ।
निर्भय आँखोंसे नहिं देखा, माटीको अस्थूल ॥
अनारी मन नारी नरकका मूल ।

॥ पद ॥

योंही सम दृष्टी हो जायगी, मन गगनाकार बनावो रे ।
नासा अग्र नयन थिर राखो, आसन पद्म जमावो रे ॥
योंही सम दृष्टी हो जायगी, मन गगनाकार बनावो रे ।
जिह्वा दन्त अलग नहीं होवे, दृढ यही बंध लगावो रे ॥
योंही सम दृष्टी हो जायगी, मन गगनाकार बनावो रे ।
अजपा जाप सुरतसों लावो, घटमें अलख जगावो रे ॥
योंही सम दृष्टी हो जायगी, मन गगनाकार बनावो रे ।
निर्भय राम ऐसे संयमतें, अन्त परम पद पावो रे ॥
योंही सम दृष्टी हो जायगी, मन गगनाकार बनावो रे ।

॥ पद ॥

योग आरूढके लक्षण साधो, श्रवण करो श्रुति गावे है ।
मनकी मननगती बिसराई, बुद्धि गँवाये अस्थिति पाई ।
आपेमें रहो आप समाई, चिन्ता निकट न आवे है ॥

योग आरूढके लक्षण साधो, श्रवण करो श्रुति गावे है ।
अर्थ अनर्थ दोनोंको खोवे, व्यर्थ चेष्टा तनकी होवे ।
ना कछु जागे ना कछु सोवे, हकधकसा हो जावे है ॥
योग आरूढके लक्षण साधो, श्रवण करो श्रुति गावे है ।
अस्तुति और निंदाको त्यागे, मान अपमान तेजसम लागे ।
बनसो नेह न घरसो भागे, ज्योंका त्यों रहजावे है ॥
योग आरूढके लक्षण साधो, श्रवण करो श्रुति गावे है ।
जीवत क्षीण भयो संसारा, पञ्च कोषते बरते न्यारा ।
निर्भय जैसे होत गुजारा, तैसाही दर्सावे है ॥
योग आरूढके लक्षण साधो, श्रवण करो श्रुति गावे है ।

॥ पद ॥

तू मत जा गोरी पनियां भरनको, प्रेमका जाल लगायोहै री ।
तनमें मनमें दृगन प्राणनमें, चेतन रंग जमायो है री ।
ऐसा सुंदर रूप बनायो, परब्रह्म मानो आयो है री ॥
तू मत जा गोरी पनियां भरनको, प्रेमका जाल लगायोहै री ।
अद्भुत आन बान अद्भुत है, अनहद नाद बजायो है री ॥
सन्मुख श्याम गुलाल उडावत, निर्भय फाग मचायो है री ॥
तू मत जा गोरी पनियां भरनको, प्रेमका जाल लगायो है री ।

॥ पद ॥

उदासीन हम हो गये, गुरु पूरा दीयो ज्ञान ।
नयना रूपते रूठे, कछुहू नाहीं ध्यान ॥
उदासीन हम हो गये, गुरु पूरा दीयो ज्ञान ।
श्रवण शब्द नहीं भावे, कैसी पडगई बान ॥
उदासीन हम हो गये, गुरु पूरा दीयो ज्ञान ।
जिह्वा स्वाद नहीं जाने, ऐसी भई अनजान ॥

उदासीन हम होगये, गुरु पूरा दीयो ज्ञान।
नासिका गंध नहीं लेवे, दृढ करलाई आन॥
उदासीन हम होगये, गुरु पूरा दीयो ज्ञान।
स्पर्श त्वचासों छूटा, थिर होगये प्राण॥
उदासीन हम होगये, गुरु पूरा दीयो ज्ञान।
निर्भय रहो नहीं खटका, मन हुआ निर्वाण॥
उदासीन हम होगये, गुरु पूरा दीयो ज्ञान।

॥ पद ॥

केशव याही सोच बडो है, कौन जतनसे तुम्हें मनाऊँ।
चरणनमें गंगाजी बहत है, जलतें क्या स्नान कराऊँ॥
सच्चित आनन्द चोला पहनो, पट पीतांबर कहां चढाऊँ॥
केशव याही सोच बडो है, कौन जतनसे तुम्हें मनाऊँ।
सब भूतनमें वास करत हो, वासुदेव आसन क्या लाऊँ॥
रविशशिदोऊसन्मुखरहेंनिशदिन, मिथ्याक्यादर्पणदिखलाऊँ॥
केशव याही सोच बडो है, कौन जतनसे तुम्हें मनाऊँ।
सब जोतिनकी जोत आप हो, कहो कौनसी जोतजगाऊँ॥
अनहद बाजे निशि दिन बाजत, शंखझांज ढफकहांबजाऊँ।
केशव याही सोच बडो है, कौन जतनसे तुम्हें मनाऊँ॥
चारों वेद चारों बानीमें, गावत हैं मैं कहा रिझाऊँ।
जेते रस सबमें रस तेरो, निर्भयराम क्या भोग लगाऊँ॥
केशव याही सोच बडो है, कौन जतनसे तुम्हें मनाऊँ।

॥ पद ॥

मत भटके रे करले दीदार, टुक आंख खोल गफलतविसार।
गुरुदेव बतायो ब्रह्मज्ञान, तू बस तू सेवाहीनको जान।

ये भेद भरम सब दे निकार, घट घटमें बोलत ॐकार ॥
मत भटकेरे करले दीदार, टुक आंख खोलगफलतबिसार ।
यह नाम रूप गुण देश काल, प्रकृतिका फैला है जाल ॥
तू निर्भय रामको कर बिचार, सच्चिदानन्द घन निर्विकार॥
मत भटके रे करले दीदार, टुक आंख खोलगफलतबिसार

॥ गजल ॥

अव्वल तो अयां राजे निहां हो नहीं सक्ता ।
हो जाय अयांभी तो बयां हो नहीं सक्ता ॥
दक्दीरपे शाकिर हो खुदापर हो भरोसा ।
मुशकिल न हो आसां ये गुमां हो नहीं सक्ता॥
कैसा है बडा नाम तेरा अय मेरे अल्लाह ।
सुन लेता हूँ पर बिर्द जबां हो नहीं सक्ता ॥
जलने दो कलेजा जिनूँ होनेभी दो दिलको ।
है पासे अदब शोरोफिगा हो नहीं सक्ता ॥
निर्भय हुआ मांगो अब जो इल्मों यकींसे ।
क्या इतनाभी तुमसे मेरी जां हो नहीं सक्ता ॥

॥ पद ॥

कैसा दिलको लगा आजार बताओ तो सही ।
रंग फक होगया चेहरेका धडकता सीना ।
आंसू गिरते हैं क्यों हरबार बतावो तो सही ॥
कैसा दिलको लगा अजार बताओ तो सही ।
आहें भरते हो नहीं बोल निकलता मुँहसे ॥
जांसे क्यों होगये बेजार बताओ तो सही ।
कैसा दिलको लगा आजार बताओ तो सही ॥
रंजो गमहदसे जियादह है खुदा खैर करे ।

दिलसे क्या होगई तकरार बताओ तो सही ॥
कैसा दिलको लगा आजार बताओ तो सही ।
भेद खुलता नहीं क्या सोच है निर्भय तुमको ।
कहते कहते गये हम हार बताओ तो सही ॥
कैसा दिलको लगा आजार बताओ तो सही ।

॥ पद ॥

नहीं या जगमें धनसों अधिक विकार ।
एकसे दश दशसे सौ गावत, सौसे करत हजार ।
पाय हजार लाख मांगत है, टूटत नाहीं तार ॥
नहीं या जगमें धनसों अधिक विकार ।
आवत कष्ट जात दुख देवे, छीजत बहू प्रकार ।
याकी चिंता छूटत नाहीं, कठिन बडो आजार॥
नहीं या जगमें धनसों अधिक विकार ।
अंधा बहरा कपटी क्रोधी, परमादी बदकार ।
चोर कठोर ज्वारी छिनरा, होत न लागे बार ॥
नहीं या जगमें धनसों अधिक विकार ।
गोविंदा गुण गावत क्यों नहीं, आतम तत्त्व विचार ।
निर्भय राम धनी है तेरा, या धनको धरकार ॥
नहीं या जगमें धनसों अधिक विकार ।

॥ लावनी ॥

मुरशदने पूरा भर दिया मुझे पैमाना रे ।
पिलादी वो वहदतकी शराब, कसरका गुम हुआ हिसाब ।
जुलमतका उठगया नकाब, रहा नजरा हिसाब बना मस्तानारे॥
मुरशदने पूरा भर दिया मुझे पैमाना रे ।
नूरकी सादिक जलवेगरी, जिसकी तजल्ली देख भरी ।

उतरआइ शीशेमें परी, क्या बलासे बरी दिल दीवाना रे ॥
मुरशदने पूरा भर दिया मुझे पैमाना रे ।
पूरे मुरशदका पीकर जाम, गफलत जाती रही तमाम ।
वहदतमें रहूँ मस्त मुदाम, मिटा दुईका नाम अनलहक जाना रे॥
मुरशदने पूरा भर दिया मुझे पैमाना रे ।
अरजो सिमाँ दोनो छाने, निर्भय कहीं ना ठहराने ।
खुदाई भरको पहिचाने, खुदको नहीं पहिचाने खाक पहिचाना रे
मुरशदने पूरा भर दिया मुझे पैमाना रे ।

॥ पद ॥

हमसों प्रीत लगा मनमोहन, कैसी मनमें ठानी रे ।
जबसे गये मोरी सुध नहीं लीनी, ऐसे भये गुमानी रे ॥
हम तो पैंडा हेरत हेरत, हेरत छैल हिरानी रे ॥
हमसों प्रीत लगा मनमोहन, कैसी मनमें ठानी रे ।
याद तुम्हारी करते करते, हम तो भई दिवानी रे ।
तुम्हारे भावे चाहे कुछ हो; बडे निठुर सैलानी रे॥
हमसों प्रीत लगा मनमोहन, कैसी मनमें ठानी रे ।
सच्च तो यों है नेह लगाकर, मैं तो अति पछतानी रे ।
लाख कहत काहूको न मानो, कैसे हो अभिमानी रे॥
हमसों प्रीत लगा मनमोहन, कैसी मनमें ठानी रे ।
प्रीतिकी रीति आप नहीं जाने; मोसों कहत अज्ञानी रे ।
निर्भय जो कुछ भई जानेदो; घरको चलो दिलजानी रे॥
हमसों प्रीत लगा मनमोहन, कैसी मनमें ठानी रे ।

॥ गजल ॥

मालिककी रजा तेरा इजारा क्या है ।
कर शुक्र हमेशा ना गवारा क्या है ।

कङ्गाल दुखी सही ये माना हमने ।
सन्तोष नहीं तो और चारा क्या है ॥
टुक सोच तो देख तनमें मनमें धनमें ।
दुनियामें दीनेमें तुम्हारा क्या है ॥
दमभरकी खबर नहीं है तिसपर ये भूल ।
ये तो फरमाइये बिचारा क्या है ॥
पडजायगा फिर तू फेरमें भोंदू ।
दीद ओ दानिस्ता हर विसारा क्या है ॥
हरदम योंहि बोल हक तुही तोते ।
टेंटें करता है दमकी सारा क्या है ॥
खंजर रक्खा है जब गलेपर अपने ।
एकबार बचेभी फिर दुबारा क्या है ॥
निर्भय कैसे हो पूछते क्या हो ।
जो चाहे करो मियाँ हमारा क्या है ॥

॥ पद ॥

हरसों प्रीतकी रीत तोड दई, मनुवा कहां लगायो है रे ।
लख चौरासी भरमत भरमत, मानुष तन अब पायो है रे॥
फिरभी हम मम करता डोले, आतम देव भुलायो है रे ।
हरसों प्रीतिकी रीत तोड दई, मनुवा कहां लगायो है रे ।
उमड घुमड दोऊ नयननमें, मद जोबन चढआयो है रे ॥
कर्म धर्म सोवतही छांडे, पापी काम जगायो है रे ।
हरसों प्रीतिकी रीत तोड दई, मनुवा कहां लगायो है रे ।
तृष्णा बाढी मोह प्रबल भयो, क्रोधने आन दबायो है रे ।
क्षमा दया संतोष गँवायो, ज्ञान ध्यान बिसरायो है रे ॥
हरसों प्रीतिकी रीति तोड दई, मनुवा कहां लगायो है रे ।

नाम रूपमें रहो लुभानो, मायाने भिरमायो है रे।
निर्भयरास रामकी सौगंद, सचमुच राम रिसायो है रे॥
हरसों प्रीतिकी रीत तोड दई, मनुवा कहां लगायो है रे।

॥ गजल ॥

जिनपै जाँ देताहूँ वो शक्ल दिखातेभी नहीं।
शक्ल तो एक तरफ नाम बतातेभी नहीं॥
तू बता वस्लकी कौनसी है सूरत अय दिल।
वो तो आते नहीं और मुझको बुलातेभी नहीं॥
मुफ्तमें दिलको मेरे लेके वो चुप बैठे हैं।
योग सिखाते नहीं ज्ञान सुनातेभी नहीं॥
जाने किस तरहसे मुर्दोंको वो दम करते हैं।
लब हिलाते नहीं ठोकरको लगातेभी नहीं॥
देखलो जैसी गुजरती है मियाँ निर्भयकी।
मुँहसे कहते नहीं पर दिलसे छिपातेभी नहीं॥

॥ पद ॥

मेरा तेरा अनुभव कैसे एक होय जियरा।
मुझको मोह किसीका नाहीं, तू मानत है मोह जियरा।
मेरे तो बसमें है इच्छा, तू इच्छावश होय जियरा॥
मेरा तेरा अनुभव कैसे एक होय जियरा।
मैंने आय लोभको खोया, तुझे लोभ दे खोय जियरा।
मुझको दुःख हो विषय भोगमें, तोको तो सुख होय जियरा॥
मेरा तेरा अनुभव कैसे एक होय जियरा।
मैं जागत हूँ निशिवासर तू, जाता है सोय जियरा।
मुझको द्वैत सुहावत नाहीं, तू वाके लिये रोय जियरा॥
मेरा तेरा अनुभव कैसे एक होय जियरा।

मैं आनन्दरूप रहता हूँ, तोको शोक डबोय जियरा।
मुझको भय निर्भय कछु नाहीं, तोइको तो भय होय जियरा॥
मेरा तेरा अनुभव कैसे एक होय जियरा।

॥ पद ॥

हरको हरमें पायो दईरी, हरको हरमें पायो री।
घर घर ढूँढ फिरी नहीं पायो, सगरो बृजमझायो री॥
कालिंदी तट बंसीबटमें, हेरत हिया हिरायो री।
हरको हरमें पायो दईरी, हरको हरमें पायो री॥
गलियन गलियन पूछत डोली, काहू नहीं बतायो री।
बन बन खोजत २ सजनी, जियरा अति घबरायो री॥
हरको हरमें पायो दईरी, हरको हरमें पायो री।
खाक मली पहनी कफनी, जोगनियां भेष बनायो री॥
गोविंदा नयनन नहीं देखो, भृकुटी ध्यान लगावो री।
हरको हरमें पायो दईरी, हरको हरमें पायो री॥
अलख असंग अनन्त देव है, आपमें आप समायो री।
निर्भयराम गुरुके बलिहारा, त्रिपुटी भरम नसायो री॥
हरको हरमें पायो दईरी, हरको हरमें पायो री।

॥ पद ॥

सखी कहीं मनमोहन बाँसुरी बजात री।
धुनिमें ललकार रही, जादू पढ मार रही।
भोरते पुकार रही, भई अर्द्ध रात री॥
सखी कहीं मनमोहन बाँसुरी बजात री।
जबते लखलई सैन, नेक नहीं पडत चैन।
सुन सुन रस भरे बैन, जियरा घबरात री॥

सखी कहीं मनमोहन बाँसुरी बजात री ।
छतियनमें होत पीर, दृगन बहो जात नीर ।
कासे दुःख कहूँ बीर, कहती लजात री ॥
सखी कहीं मनमोहन बाँसुरी बजात री ।
निर्भय श्याम टेर रहो, बंसीवट हेर रहो ।
ताको भय घेर रह्यो, अचरजकी बात री ॥
सखी कहीं मनमोहन बाँसुरी बजात री ।

॥ पद ॥

चिंता हरो अपराध क्षमा करो,भृगु मुनि तक्सीर भई ।
याही सोच बडो मनमाहीं, जाने कब आये कब नाहीं ।
सेवा टहल कछु बन नहीं आई, निद्रामें सुध नाय रही ॥
चिंता रहो अपराध क्षमा करो, भृगु मुनि तक्सीर भई ।
सुन्दर कोमल चरण तुम्हारो, वज्र शिला है हृदय हमारो ।
लाओ दबादूं चरण पसारो, होगी पीर मैंने जान लई ॥
चिंता हरो अपराध क्षमा करो, भृगु मुनि तक्सीर भई ।
ब्रह्म रूप पूरण सुखदाई, भगवन् कहाँलग करूं बडाई ।
अतुलित बल अपार प्रभुताई, कृपासिंधु तोरी शरण गही ॥
चिंता हरो अपराध क्षमा करो,भृगु मुनि तक्सीर भई ।
शांत रहो चित क्रोध ना आनो, स्तुतिकी अपमान न जानो ।
हरिकी दया कौन ठिकानो, निर्भयराम ये रीति नई ॥
चिंता हरो अपराध क्षमा करो,भृगु मुनि तक्सीर भई ।

॥ गजल ॥

जुनूँ भरता है कैसी कैसी दिलमें चुटकियां मेरी ।
करूं फरयाद गम क्योंकर नहीं खुलती जबाँ मेरी ॥

अलमसे यासमे हसरतसे बेताबीसे हरमाँसे ।
मिली फुरसत तो कहदूँगा बडी है दास्तां मेरी ॥
है चिहरा जर्द खाली खूनही सूखा नहीं साहिब ।
धुली जाती हैं फरते गम्मे सारी हड्डियां मेरी ॥
कहीं जोसे जिनूँमें याद सहराकी न आजावे ।
पिन्हादो तौक गरदनमें बढादो बेडियां मेरी ॥
कफससे उड नहीं सक्ता है निर्भय आबो दाना है ।
बँधे बाजू टटोले हरघडी क्यों बदगुमा मेरी ॥

॥ गजल ॥

कभी मुझमें तुझमेंभी प्यार था, तुझे याद हो कि न याद हो ।
वोही सोहं अस्मि विचार था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥
वो जो पहल ऐसा कमाल था, जुदा मुझसे होना मुहाल था ।
मेरे नूरमें शरशार ना, तुझे याद हो कि न याद हो ॥
वो जो घोर नींदमें हाल था, कि न शक्ल थी न खयाल था ॥
मेरी मायाका वो खुमार था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥
वो जो स्वप्न रूप जहान था; नहीं जिसका वह मोगमान था ।
मेरी शक्तिका इजहार था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥
मिलजाय मानुष देह जो, केवल हरीसे नेह हो ।
निर्भय तेरा इकरार था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥

॥ पद ॥

परम प्रेमका विषय निरन्तर, सोही इष्ट हमारा है ।
प्राण अपान उदय और अस्त हो, जा निर्मल आकाश मझोरा ।
तामें जो अनुभव तत्त्व प्रकाशे, सोही स्वरूप है इष्ट हमारा ॥
परम प्रेमका विषय निरंतर, सोही इष्ट हमारा है ।

अहं त्वं इत्यादिक जामें, उपजें लीन हो वृत्ति अपारा ।
ऐसो चेतन शुद्ध अखण्ड, अनन्त स्वरूप है इष्ट हमारा ॥
परम प्रेमका विषय निरन्तर, सोही इष्ट हमारा है ।
हृदय आकाशमें संपुट होवे, पवन परस्पर कुम्भकरूपा ।
तिसके अन्तरसाक्षी भूत जो, सोही हमारा इष्ट अनूपा ॥
परम प्रेमका विषय निरन्तर, सोही इष्ट हमारा है ।
अष्ट प्रहर सकार हकार हो, अन्तर जा पुनि बाहर आवे ।
सोहं सोहं बोलता हंसा, वोही हमारा इष्ट कहावे ॥
परम प्रेमका विषय निरन्तर, वोही इष्ट हमारा है ।
भृकुटीमाहीं शुद्ध आकाश है, ऊँचे नैन स्पष्ट दिखावे ।
तामें स्वयं प्रकाश है ज्योति, सोही हमारा इष्ट कहावे ॥
परम प्रेमका विषय निरंतर, सोही इष्ट हमारा है ।
बिन्दु नाद सरूप हो प्रगटा, आदि अनादि शब्द ॐकारा ।
ताको लय स्थान आधार जो, सोही देव है इष्ट हमारा ॥
परम प्रेमका विषय निरंतर, सोही इष्ट हमारा है ।
अकार उच्चार हुआ पर हम, नहीं संधिमें जोही चित ठहरानो ।
तामें स्वरूपको रूप जो भासे, सोही इष्ट हमारा जानो ॥
परम प्रेमका विषय निरंतर, सोही इष्ट हमारा है ।
नाहीं गमन कियो परदेश, न देशहीमें निर्देश समानो ।
ऐसो निश्चल अटल स्वभाव जो, सोही इष्ट हमारा जानो ॥
परम प्रेमका विषय निरंतर, सोही इष्ट हमारा है ।
जागृत नाहीं न आई सुषोपति, स्वप्नसों शून्य न कोई विचारा ।
निःसंकल्प निरंजन, शान्त स्वरूप है इष्ट हमारा ॥
परम प्रेमका विषय निरंतर, सोही इष्ट हमारा है ।

शक्तीकीशक्तीहैशक्तीनहीं, ना पुरुषही है न नपुंसक जानो।
मेहर न अणु न मध्य प्रमाणहै, सोही इष्ट हमारा मानो ॥
परम प्रेमका विषय निरंतर, सोही इष्ट हमारा है।
निर्मूलनमूलनशून्यअशून्य, निर्जीवनजीवअसार नसारा।
रूप अरूप न नाम अनाम, न निर्गुण सर्गुण इष्ट हमारा ॥
परम प्रेमका विषय निरंतर, सोही इष्ट हमारा है।
अन्तर बाहर पूर रह्यो जो, संवति तत्त्व प्रत्यक्षही न्यारा।
सर्वमें सर्वको आतमदेवहै, निर्भय सोही बडो इष्ट हमारा ॥
परम प्रेमका विषय निरंतर सोही इष्ट हमारा है।

॥ लावनी ॥

आसभी है विश्वासभी है और इतनी बेकरारीक्यों है।
जानबूझकर ये हालत दिगरगूँ हमारी क्यों है ॥
निश्चय गही धीरबाँधाहै फिरभी इजतराबी क्यों है।
अपने आपही समय आजायगा शिताबी क्यों है ॥
राहतो रंज मुकद्दरसे होते हैं बेताबी क्यों है।
तत्त्वज्ञान है ध्यान है तिसपे ये खराबी क्यों है॥
जाहिरमें आमद नहीं हसरत बनी इन्तजारी क्यों है।
जानबूझकर ये हालत दिगरगूँ हमारी क्यों है ॥ १ ॥
खाना पीना बदस्तूरहै जान घुली जाती क्यों है।
बजूद जिसका नहीं है उसकी याद आती क्यों है ॥
हवास सालिम होश बना है अक्ल उडी जाती क्यों है।
यास नहीं है तबीयत अजखुद घबराती क्यों है ॥
आँसू नहीं बहते हैं माना चुपके आहोजारी क्यों है।
जानबूझकर ये हालत दिगरगूँ हमारी क्यों है ॥ २ ॥

बिना जख्म सीनेमें खारे अलम खटकता है कैसा ।
ठण्ढे कलेजे ये जोसे जुनूं भडकता है कैसा ॥
तावो तवा मुतलक नहीं दिल बेताब तडपता है कैसा।
दर्द नहींहै ये सीना हरदम धडकता है कैसा ॥
श्वास नहीं पूरे होते हरवक्त दमशुमारी क्यों है ।
जानबूझकर ये हालत दिगरगूँ हमारी क्यों है ॥ ३ ॥
घबराहट घरमें बाहर सुनसान दिखाई देता है।
बहमाफ हममें अजब खफकानसा पैदा होता है ॥
सुन लेते हैं समझतेहैं जिस वक्त कोई कुछ कहता है ।
बादमें बिल्कुल भूल जाते हैं याद नहीं रहता है ॥
निर्भय सोते जागते हरदम गमकी यादगारी क्यों है ।
जानबूझकर ये हालत दिगरगूँ हमारी क्यों है ॥ ४ ॥

॥ बन्द ॥

॥ प्रश्न ॥

न तो कुछ बिर्दही तेरा है न कुछ ध्यान तेरा।
नतु आशिक है न कुछ ज्ञानमें है ज्ञान तेरा ॥
आकबतका न तुझे खौफ न इमान तेरा ।
किसने दुनियांमें रखा नाम है इन्सान तेरा ॥

है निडर जीमें जो आता है सोई करता हैं।
नेको वदसे तू जमानेके नहीं डरता है ॥

॥ उत्तर ॥

शून्य रहता हूँ हमेशा है यही ध्यान मेरा ।
एक मैं हूँ नहीं दीगर हो यही ज्ञान मेरा ॥
कोई ईमान नहीं है यही ईमान मेरा ।
बिर्द खामोशीका रहता बदिलो जान मेरा ॥

हस्ती ओर नेस्ती दोनों हैं बराबर मुझको ।
करते पाबन्द नहीं अवें अनासर मुझको ॥

॥ प्रश्न ॥

यहभी कुछ विर्द है जो विर्द सिखाता तू है ।
यहभी कुछ ध्यान है जो ध्यान लगता तू है ॥
यहभी कुछ ज्ञान है जो ज्ञान सुनाता तू है ।
नहीं ईमान बेईमान बताता तू है ॥

न मुसलमान है हिन्दु है न ईसाई है ।
हदसे जियादह तेरी तबियतमें खुदी आई है ॥

॥ उत्तर ॥

विर्द कहते हैं किसे ध्यान किसे कहते हैं ।
कैसा आशिक हो मियां ज्ञान किसे कहते हैं ॥
आकबत है कहा ईमान किसे कहते हैं ।
दुनिया क्या चीज है इन्सान किसे कहते हैं ॥

ना समझ मैं हूँ अकर्ता मुझे माना क्या है ।
जाते बेचूनोच्चरा हूँ मुझे जाना क्या है ॥

कौनसी जा नहीं जागीर जहांमें मेरी ।
सूरते रूह है तस्बीर जहांमें मेरी ॥
हरजबां बोलती तफसीर जहांमें मेरी ।
इस्में आजम हुई तौकीर जहांमें मेरी ॥

निर्भय विज्ञान हूँ सब पर है तकद्दुम मुझको ।
सबका महबूब हूँ क्या जानते हो तुम मुझको ॥

॥ पद ॥

अबक्यामुखलेघरजाऊँ श्यामपनघटसों, गागरियामोरीफूटीरे ।
देख दयानिधि हृदय तुम्हारा, शीतल कोमल अगम अपारा ।
भूलगई भरना जलधारा, करसों रसरिया छूटी रे ॥

अब क्या मुखलेघरजाऊँश्यामपनघटसोंगागरियामोरीफूटीरे ।
निर्भय राम अनुभवसों सूझा, हरिको ध्यान हरिकी पूजा ।
हरि समान देव नहिं दूजा, आन डागरिया झूटी रे ॥
अब क्या मुख ले घर जाऊँ श्याम पनटघटसों, गागरिया मोरी फूटी रे ॥

॥ गजल ॥

मुझको कातिलका नहीं कुछ और अहसां चाहिये ।
तेग हो एक हाथमें एक में नमकदा चाहिये ॥
दीनो दुनियामें नहीं कुछ मुझको एजां चाहिये ।
तेरे दरकी खाली दरबानी मगर हां चाहिये ॥
दिलकी तसकींको तुम्हारा ध्यान पिनहां चाहिये ।
जाहिरी मुतलक नहीं सरकार सामा चाहिये ॥
सिदके दिलसे आपपर मजबूत ईमां चाहिये ।
वेद क्या होगा किसे इंजीलो कुरां चाहिये ॥
गो मददके वास्ते ईसांको ईसां चाहिये ।
अपनी मैं कहता हूँ मुझको तेरा दामां चाहिये ॥
छोडदो काकूलको रुखपर मुहआ हलहो तमाम ।
ऐसे कुआंपर लिखी तफसीर ताबां चाहिये ॥
नूर असली है मेरी आंखोंमें दिलमें जलवे अगर ।
ना मुझे महताबना महरे दुरखशां चाहिये ॥
मुद्दतोंके बाद आ पहुँचा यहां गाली न दो ।
कुछ तो साहिब आपको तोकिर महमां चाहिये ॥
तुम समा जाओ नजरमें एगुल हुस्नो जमाल ।
आंखों फूटें किसको फिर सैरे गुलिस्तां चाहिये ॥
दाग लगजाये न तो तमये मताये दहरका ।
कब्रमेंभी आशिकोंका जिस्म उरियां चाहिये ॥

जा रहूँ बेहद मुझे कफनायँगे किसचीजमें।
हां कफनको सायए दामाने जाना चाहिये॥
तेरी सूरतका हुँ आशिक देरे दरका हुँ गदा।
ना मुझे जिन्नत न मुझको हूरो गिलमां चाहिये॥
दीना दुनियासे तेरी आजाद निर्भय हो गया।
बुलहविसके वास्ते जंजीरो जिंदा चाहिये॥

॥ गजल ॥

करे साबित दहन क्योंकर तुम्हारा जानेजां कोई।
कसम है दे नहीं सक्ता निशाने लामकां कोई॥
इसे कहते हैं गमदीदाके साहिब्र उम्रभर हमने।
जनाजेके सिवा देखा नहीं तख्तेरवां कोई॥
बहारे गुल है दो दिन बगबाँ इतना न कर गुस्सा।
न आयेगा चमनमें आप हंगामें खिजां कोई॥
हुआ सीनेसे दिलको औरभी दूना खलिश साइब।
बस अय जर्राह देखो तो न हो नोकेसिनां कोई॥
तसद्दुक करतो देना दीनो ईमां यारपर जाहिद।
यही डर है न हो जाये मुसल्मां बदगुमां कोई॥
मैं खुद गुम हो गया हूँ जुस्तजूए यारमें वल्लाह।
वो उनका है अगर मेराही बतलादें निशां कोई॥
दुआ मांगे है खूबां हिन्दमें निर्भय हुए जबसे।
इलाही बहरे कुर्बानि मिले बांका जवां कोई॥

॥ पद ॥

गगनमें हो रही अनहद बानी, कोई सुनता गुरु मुखज्ञानी।
वोही अग्नि वोही मही रूप है, वोही पवन और पानी।
घट घट अन्तर वोही धुन बोले, जिन जानी तिन मानी॥

गगनमें हो रही अनहद बानी, कोई सुनता गुरु मुख ज्ञानी ।
ज्ञानी ध्यानसों वोही ध्वनि लावे, आगम निगम बखानी ।
वोही ध्वनि क्षर अक्षर निअक्षर, निर्विशेष निर्बानी ॥
गगनमें हो रही अनहद बानी, कोई सुनता गुरु मुखज्ञानी ।
शब्दही शब्द सृष्टि हो आई, शब्दहीमें ठहरानी ।
अन्त शब्दमें लय हो जावे, सतगुरु कही हम जानी ॥
गगनमें हो रही अनहद बानी, कोई सुनता गुरु मुख ज्ञानी ॥
पुरुष शब्दमें पुरुष भाव है, निर्भयराम हढानी ।
शक्तिरूप है शक्ति शब्दको, दोऊ पक्ष प्रमानी ॥
गगनमें हो रही अनहद बानी, कोई सुनता गुरुमुखज्ञानी ॥

॥ गजल ॥

अगर काबूमें दिल होता तो बिर दिलको न गम होता ।
न लेता सर जो सौदा सर न यूँ यकसर कलम होता ॥
रहा अर्मांहि हम यकही निगहसे हो गये ठंडे ।
तडप अपनी दिखाते पर हमारे दममें दम होता ॥
लबेजां बख्श जनाँने सराहा वक्तेमयनोशी ।
मेरा जामे गदाई क्यों न रश्के जामे जम होता ॥
सरासर मैं करमही जानता जौरेरकीबाँको ।
जरासा भी मेरे ऊपर अगर उनका करम होता॥
मैं जब खुद अपनी ईजाका हुँ बानी उनका क्या शिकवा ।
अगर होता न मैं किसपर भला जौरो सितम होता ॥
कोई मतलबकी होती बात तो लिखनेमें आजाती ।
मेरा मतलबसे खाली हाल था कैसे रकम होता ॥
मैं निर्भय हूँ मुझे दुनियांके चोरोंसे है क्या खटका ।
बिलाशक होभी जाता साहिबे दामो दिरम होता॥

॥ पद ॥

तोरे दर्शनकी प्यासी अखियाँ, तोरे दर्शनकी प्यासी हो।
कैसी ध्वनि लागी हरि जाने, सूझत ना अपने बेगाने।
समझाई बरजी नहिं माने, पुरुषोत्तम अविनाशी हो॥
तोरे दर्शनकी प्यासी अखियां, तोरे दर्शनकी प्यासीहो।
हेर हेर हो गई हिरानी, धीरज गयो लाज विसरानी॥
इत उत चितवन फिरें दिवानी, घट २ अंतरवासी हो॥
तोरे दर्शनकी प्यासी अखियाँ, तोरे दर्शनकी प्यासी हो।
ऐसी विरह अनल भडकानी, उमडउमड भर लाये पानी।
सावनकीसी झडी लगानी, निशिदिन बारहमासी हो॥
तोरे दर्शनकी प्यासी अखियां, तोरे दर्शनकी प्यासी हो।
ऋद्धि सिद्धिको माने नाहीं, सुख संपत हित जाने नाहीं।
निर्भय कहे सकुचाने नाहीं, हरिचरणनकी दासी हो॥
तोरे दर्शनकी प्यासी अखियाँ, तोरे दर्शनकी प्यासी हो।

॥ गजल ॥

तेरे रुखको चाँदसा देखकर, वो मचा है शौरके ईद है।
तेरी जातमें जो कमाल है, न तो दीदई न शुनीद है॥
दिलमें जोश जिनूं भरा, कोई लाओ उनका पसीना जा।
मुझे मरजे इश्ककी है परख, वोही अर्क देना मुफीद है॥
ये असर हुआ मेरी आहका, वो जो राजे पिनहाँथा खुलगया।
तेरे गंजे हुस्नके कुफफली, मेरी भावनाही कलीद है॥
मेरे दिलको लेकर हाथमें, कहा उनसे हजरते इश्कने।
जो संदेसा भेजा था आपने, सो ये लेना उसकी रसीद है॥
तस्लीम कर हरबुतको तू, मेरा अक्स हूबहू।
यही श्रुति कहती है दूबदू, यही तो कलामें मजीद है॥

न तो तनकी है उसे कुछ खबर,न हयाका पास कजाकाडर ।
जो फरेफ्ता तेरे बोलपर, जो निगाहका तेरे शहीद है ॥
कल हाथ मारके कहदिया, नहीं होंगे तुझसे कभी जुदा ।
फिरें करके कौलोकरारको, यह तो निर्भयउनसेबईदहै ॥

॥ गजल ॥

पूर्णानन्दसे है आपका अन्तर खाली ।
महा घनरूप तभी भासे है बाहर खाली ॥
आत्मज्ञानसे है जबतक अन्तर खाली ।
पूरा साधू वो नहीं फिरता है बाहर खाली ॥
चाहे करमेहर चफा चाहे सितमगर खाली ।
हमतो हरबातमें समझे हैं मुकद्दर खाली ॥
मय रकीबोंको पिला आया है दिलवर खाली ।
आँखें भर आयँ न क्यों देखके सागर खाली ॥
फिक्रे दुनियासे है खाली फकत आशिक तेरा ।
न तो नौकरही है खाली नहे अफसर खाली ॥
आपकी याद अगर गोशए दिलमें न रहैं ।
जैसा कङ्काल है वैसाही तवंबर खाली ॥
ऐसे चक्करमें मैं आयाहुँ के दिनरात युहीं ।
घुमता रहता हुँ जाता नहीं दमभर खाली ॥
गाँठमें लाल बँधा है नहीं खोले है बशर ।
हाथ फैलाये हुए फिरता है दरदर खाली ॥
जाने किस बातसे नफरत हुई उस साधूको ।
चलदिया आप पडा है यहां बिस्तर खाली ॥
सामना मौतका जब हो नसका आखिरकार ।
मुँह छिपा चलदिया दुनियासे सिकन्दर खाली ॥

सुर्खरू अब नहीं होनेका मैं कातिलके हुजूर।
सरतलक आके फिराजाता है खंजर खाली॥
मुझदा सुन वस्लका जलदी वो हुई जानेकी।
जानकर बोझ गया छोड ये पैकर ख़ाली॥
न तो हैं दोस्त न दुश्मन मेरे दुनियांमें बशर।
उनको मैं वो मुझे समझे हैं बिरादर खाली॥
अब बजुज इसकेके खामोश रहूँ क्या कहदूं।
वस्लमें होगया कुल शिकवोंका दफ्तर खाली॥
निर्भय है जीतना दुशवार यहां बाजीका।
पांसा हरदांवपे पडता है बराबर खाली॥

॥ गजल ॥

मांगकी आधी भरी तहरीर आधी रहगई।
खींचके कातिलकी गजब शमशीर आधी रहगई॥
रुखतक आते आते गेसू कानपर बल खागये।
आधी कुर्रांकी हुई तफसीर आधी रहगई॥
है बलाका सामना मौला बचावे इश्कसे।
चारही दिनमें तू गमसे हीर आधी रहगई॥
मिटगया दुनियाका खदशा आकबतका है अभी।
पूरी आधी हो गई तदबीर आधी रहगई॥
जप्त करतेभी मानीको गश आहीगया।
आधी खिंचपाई तेरी तस्वीर आधी रहगई॥
मुझको जिंदाँ दश्त पैमाई मिली है कैसको।
छिनगई आधी मेरी जागीर आधी रहगई॥
सामने बैठे रहो लिल्लाह मत जाओ कहीं।
साहिब आधी मिटगई है पीर आधी रहगई॥

है गजबका रौब नमकीनी बलाकी यारमें ।
कहते कहतेभी तेरी तकरीर आधी रहगई ॥
मुझको सबपर है तकद्दुम कुद्र तो अजमत शरफ ।
आके कालिबमें तेरी तौकीर आधी रहगई ॥
बाबले झूठे हैं निर्भय तुझसे जो कहते हैं यों ।
छुटगई है नौकरी तकदीर आधी रहगई ॥

॥ गजल ॥

तुही हक है ईमान लानके काबिल ।
ये दुनियां नहीं दिल लगानेके काबिल ॥
तू खालिक है सिजदा करानेके काबिल ।
मैं बन्दा नहीं सर उठानेके काबिल ॥
तेरा दिल तो है रहम आनेके काबिल ।
मेरा हाल है रहम खानेके काबिल ॥
नहीं तुझसे मुतलक छिपानेके काबिल ।
मगर मैं नहीं हूं बतानेके काबिल ॥
है सब श्रुतियाँ निश्चय लानेके काबिल ।
ये अनुभव नहीं आजमानेके काबिल ॥
कही दागे दिल फूँक देवे न जाँको ।
ये अतश है साहिब बुझानेके काबिल ॥
तेरी शक्ल दिलमें समाई नहीं है ।
हमारा है मुँह और दिखानेके काबिल ॥
जो तू है सो मैं हूं जो मैं हूँ सो तू है ।
ये कल्मा नहीं भूल जानेके काबिल ॥
जो जिंदा है उनको सता अय तमा तू ।
मैं मुर्दा नहीं हूँ सतानेके काबिल ॥

जो आशिक है मेरा आशिक हूँ उसका ।
ये है हुक्मे नातिक सुनानेके काबिल ॥
है वक्ते नजा रहम कर अय मसीहा ।
ये दरखास्त है मानजानेके काबिल ॥
मैं ऐसा थका मंजिले इश्क चलकर ।
किसी जा नहीं आने जानेके काबिल ॥
गुरु चलदिये कहके निर्भय हों निर्भय ।
नहीं कछु रहा अब सिखानेके काबिल ॥

॥ पद ॥

तुम तो द्वारकाको जाओ हो कन्हैया ।
सखियनका संदेह मिटाय जाइयों ॥
विनती करत तोरे पैयां परत हैं ।
फेर मिलोगे कब सांच बताये जाइयों ॥
तुम तो द्वारकाको जाओ हो कन्हैया ।
सखियनका यह संदेह मिटाये जाइयों ॥
मनमें दृगनमें बसो निशि वासर ।
श्याम सुन्दर ऐसा ध्यान सिखाये जाइयों ॥
तुम तो द्वारकाको जाओ हो कन्हैया ।
सखियनका संदेह मिटाये जाइयों ॥
दुबधा मिटे काम नहीं जागे ।
केशव आतमज्ञान सुनाये जाइयों ॥
तुम तो द्वारकाको जाओ हो कन्हैया ।
सखियनका संदेह मिटाये जाइयों ॥
निर्भय प्रीतिकी रीति निभाना ।
नहीं तो जहरथोडा घोरके पिलायेजाइयों ॥

तुम तो द्वारकाको जाओ हो कन्हैया ।
सखियनका सन्देह मिटाये जाइयों ।

॥ गजल ॥

दिखादे दिलवर जमाले अनवरमें जाँ बलब हूँ अताब क्या है ।
नकाब उठाओ गले लगाओ न मुँह छिपाओहिजाबक्या है ॥
वो दिल कबाब आतिशे दरूँसे तुम्हारे सदके कबाब क्या है ।
वो दाग रौशन जिगरका अपने तेरी कसब आफताब क्याहै॥
वो जान पहलूमें मुजतरब है इलाही तोबा सीसाब क्या है ।
वो खून आंखोंसे बह रहा है खुदाही हाफिज द्राब क्या है॥
मसीहा दम अब तो देख आकर वो हाल दमका हुबाबक्याहै ।
नकाब उठाओ गले लगावोनमुहँछिपाओहिजाबक्या है ॥१॥
वो सीना गम्से तपां है आतिश कद मुकाबिल होताबक्याहै ।
वह सर्में शोरे जुनूं तलातुमसे बहरमें शोरे आब क्या है ॥
वो शक्कमें इनकलाब लैछो नहारका इनकलाब क्या है ।
जवाब देती है नब्ज बिल्कूल और इससे हाले खराब क्याहै ॥
ले अब तो दमबाज दम फसूँकर निजकीवक्तइजतनाबक्या है ।
नकाब उठाओ गले लगाओ न मुहँछिपाओहिजाबक्या है॥२॥
सितमवोमुखडागजबवोचालऔरकहरवोचितवनजनाबक्या है।
नई हो बरपा कयामत हरदम बलाहै आलमे शबाब क्याहै ॥
तेरे वो जौरोसितम है जाना तू आप जाने हिसाब क्या है ।
हों लाखों दफ्तर करूँ जो तहरीर एकदो तो किताब क्याहै॥
हैगमसे आलमका दिलपरीशां खुला गमे दिलकाबाब क्याहै।
नकाबउठाओगलेलगाओ नमुहँछिपाओहिजाब क्या है ॥३॥
नतोडोदिलकोखुदाकाघरहै और इससेबढकर अजाबक्या है ।
रखोदिलआशिककादिलसेदिलबरयहीसबाब औरसबाबक्याहै

किधरखयालहै खमोशअयदिलकहांकाशिकवायेख्वाबक्याहै ।
वो चाहें जो कुछ करे हैं मुख्तार करने दो इजतराब क्या है ॥
हो कौन तुम और कहांसेआयेहोनिर्भयइसकाजवाबक्या है ।
नकाबउठाओगलेलगाओ न मुँहछिपाओहिजाबक्या है ॥ ४॥

॥ पद ॥

आग लगो ऐसी पचरंग सारी ।
झुंठोंको ओढो तो सच्चोंनिगोडी,तार २ हुई जात किनारी ॥
आग लगो ऐसी पचरंग सारी ।
खबरदार अबओढीसोओढी, लखलोनिर्भय ये सैनहमारी ॥
आग लगो ऐसी पचरंग सारी ।

॥ लावनी ॥

निरंजन निर्गुण रूप न नाम,स्वयंभू द्रष्टाआठों याम, है घट घटमेंपूरणघनश्याम, अचलअद्वैतआत्माराम,देहसोंरंचकलाभ न हानि जी॥ सनातन वोही सन्तनका ध्यान, और विधिहोत नहीं कल्याण,पुकारे आगम निगम, पुराण, साक्षीपुरुषोत्तमका ज्ञान, निज अनुभव हैप्रत्यक्ष प्रमाण जी॥यहचोलाहोजन्में और मरे,घटे बाढे सूखे और जरे,यही शस्त्रोंसेछिदे और सडे,अचल अद्वैत आत्माराम, देहसों रंचक लाभ न हानि जी ॥ सनातन वोही० । गमनादिक्रियाभोगबिहार, प्रणमनइन्द्रिनका व्यापार, तू काहे भूला फिरत गँवार, अचल अद्वैत आत्माराम, देहसों रंचक लाभ न हानि जी॥ सनातन०। अशुभ शुभ सुख दुख ज्ञान अज्ञान, अभय भय मान तथा अपमान सकलइंद्रिनको बुद्धी सो जान, अचल अद्वैत आत्माराम, देहसोरंचक लाभ न हानि जी ॥ सनातन० । स्वप्न जाग्रतसुषुप्ति काल,है निर्भयराम

बडोजंजाल, किसीबिरलेकोरहेसंभाल, अचलअद्वैतआत्माराम देहसों रंचक लाभ न हानि जी ॥ सनातनवोही संतोंकाध्यान, और विधिहोतनहींकल्याण, पुकारेआगमनिगमपुराणसाक्षी पुरुषोत्तमका ज्ञान, निज अनुभव है प्रत्यक्ष प्रमाण जी ॥

॥ गजल ॥

तुम समझ सक्के नहीं वेदोंकी गर तहरीरको ।
देखलो पढकर अनलहक अनुभवी तफसीरको ॥
करते करते मिटगया नामो निशां तदबीरको ।
वाह क्या तदबीर है देखा तेरी तकदीरको ॥
होगा क्या तदबीरसे मैं क्या करूं तकदीरको ।
होश गुम हैं जबसे देखा है तेरी तस्बीरको ॥
सिदके दिलसे देखताहै अपनी जब तस्बीरको ।
रांझा बिल्कुल भूलजाता है जमाले हीरको ॥
बोलता हरदम अनलहक दम मेरा बावर करो ।
पूजता हूँ मैं मुसल्मां बोलती तस्बीरको ॥
फिरके कहदो हम्मे तुम्मे फर्क हां जाता रहा ।
भूल जाऊँगा मैं दिलमें लिखलूं इस तकरीरको ॥
एक हो जाते हैं दोनों आप और मैं हरतरह ।
बेखुदीमें देखता हूँ अपनी जब तौकीरको ॥
है नहीं नामोनिशां उनका तो अपना मिटगया ।
अब मिलालो फर्क क्या है दोनोंकी तस्बीरको ॥
दर्दे सर जाता रहा किस दर्दसे काटा गला ।
छोड जल्दी चूमलूं कातिल तेरी शमशीरको ॥
माना अच्छा लेलिया है जानके बोसा मगर ।
माफ़ करदो हुस्नके सदके मेरी तक्सीरको ॥

सरसे पैरोंतक वदन रोजन है साहब देखलो ।
बस यहीं होगा कहीं क्या खागया मैं तीरको ॥
नेस्ती हस्तीके झगडेसे गया निर्भय निकल ।
अपने घर रक्खो मुझे करनी है क्या जागीरको ॥

॥ लावनी ॥

चिदानन्द घन रूप अनादि नाम आदि ॐ कारा है ।
बांके बिहारी कृष्णमुरारी तुझे प्रणाम हमारा है ॥
चारों वेदनने गाया अठारह पुराणोंने ललकारा है ।
जितना कुछ है कथन अर्थ नारायण पदका सारा है ॥
ब्रह्म विष्णु महेशने यही बारम्बार पुकारा है ।
त्रिगुणात्मक हम देवोंका महादेव तुम्ही आधारा है ॥
सब ज्योतिनकी ज्योति साक्षी स्वयं प्रकाश उजारा है ।
बांके बिहारी कृष्णमुरारी तुझे प्रणाम हमारा है ॥१॥
शेष गणेश सुरेश बतावें ज्ञान अमोघ तुम्हारा है ॥
वरुण कुबेर मरुत कथ हारे मिला न तोहू पारा है ।
सनकादिक नारद वसिष्ठ गौतमने यही विचारा है ॥
कहुँ अन्त नहीं पायो कपिल सुखदेव व्यास भृगुहारा है ॥
तेरी महिमा अचिन्त्य केशव तेरा भाव अपारा है ।
बांके विहारी कृष्णमुरारी तुझे प्रणाम हमारा है ॥२॥
तुही मूल कारण तुझसे महत्तत्त्व और अहंकारा है ।
अहंकारसे पुनः सूक्ष्म स्थूल सर्व संसारा है ॥
समष्टी व्यष्टी भेद लिये जितना कुछ रूप पसारा है ।
बहिअन्तर घनप्राज्ञ भाव सब आपहिका परिवाराहै ॥
उत्पत्ति स्थिति तुझसे गोविंद तुझसे संहारा है ।
बांके बिहारी कृष्णमुरारी तुझे प्रणाम हमारा है ॥३॥

धर्म सनातनको दुष्टोंने दीनानाथ बिगाडा है।
स्वयं इच्छाचारी विरुद्ध श्रुतिसे पंथ संभारा है॥
भार उतारो युग२ प्रति जैसे भार उतारा है।
तुमरी करुणासे करुणानिधि जीवोंका निस्तारा है॥
निर्भय ध्यान टेक तुही भक्तोंका तुही सहारा है।
बांके विहारी कृष्ण मुरारी तुझे प्रणाम हमारा है॥

॥ मुसद्दस ॥

जातही जात थी जब नामोनिशां कुछभी न था।
नूरही नूर था जब कौनोमकां कुछभी न था॥
शानही शानथी जब और अयां कुछभी न था।
हुस्न पर्देमें रहा बहमोगुमां कुछभी न था॥

आपही आप था ये वस्लो जुलाई कब थी।
आलमेपाक था ये कैदो रिहाई कब थी॥

अपनी कुद्रतसे हुआ आपही तू जल्बहनुमा।
तेरा कर्त्ता नहीं तू आप है सबका कर्त्ता॥
तेरे होनेकी ये बर्कत है कि संसार हुआ।
तू न होता तो ये संसार न होता पैदा॥

तेरी शक्ति है कि ब्रह्मांडको धारा तूने।
तुझको कुदरत है कि ये भार संहारा तूने॥

ॐ ये नामहिं तुझको नहीं बतलाता है।
साफ तत्सत्का इसारा तुझे जतलाता है॥
क्या कोई और है हरवक्त जो सिखाता है।
मैं हूँ यह सर्वसे तु आपही कहलाता है॥

जितनी श्रुति सभी देती हैं गवाही तेरी।
तेरे होनेमें शहादत है खुदाई तेरी॥

होगा ऐसाभी कोई जिसको है तुझसे इन्कार।
क्या तेरे नूरका हर दिलमें नहीं है इजहार॥
तेरी हस्तीसे है कुल आलममें हस्तीकी बहार।
तेरे होनेमें किसीको नहीं मुतलक तकरार॥

सबका पालन तू करे सबका माबूद है तू।
सर्वदा सर्व जगह सर्वमें मौजूद हैं तू॥

तेरेही नूरसे है सारा ये आलम पुरनूर।
नूरकातेरे हरएकजा है हरएक शयमें जहूर॥
तेरेही नूरका हर आंखमें रहता हैं सरूर।
तेरेही नूरसे है है अगर इंसांमें शऊर॥

बस हकीकतमें तेरे नूरका वो हाला है।
जिसका प्रकाशसे चारों तरफ उजियाला है॥

तत्त्व चेतन किये चेतन किये तन मन तूने।
बस्ती चेतन करी चेतन किये सब बन तूने॥
चरको क्या और अचरको किये चेतन तूने।
अपनी कुद्रतसे किया विश्वको चेतन तूने॥

सबका जीवन है तूही सर्वका है प्राण तुही।
अपने ईमानसे कहता हूँ है ईमान तुही॥

तेरे आनन्दसे आनन्द रहे है दिन रात।
तेरे आनन्दमें आनन्द है कुलमखलूकात॥
तेरे आनन्दका बाइस है कि है सबकी हयात।
पूर्णानन्द सिफत है ये तेरा जलवए जात॥

जितने दीन है हुरने जहां भारा तू है।
किसका महबूब नहीं सबहीको प्यारा तू है॥

तेरेहि बलसे है इन तत्त्वोंको कैसी अंजमत।
तेरेहि बलसे है क्या शम्सो करमको हरकत॥

तेरेहि बलसे है हर फर्दो बशरमें ताकत।
तेरे बलसे है गुलोबर्गो समरमें कुव्वत॥

कालका काल है औरोंकी हकीकत क्या है।
तेरा बल तोलले परमाणुमें कुद्रत क्या है॥

तेरा वो ज्ञान है जिस ज्ञानमें सब है मौजूद।
सूरते कोनो मकां हैयते इमकानो वजूद॥
सनअते जानो जहां हिकमते बूदो ना बूद।
मानिये रम्जेनिहां मसलहते बन्दो कशूद॥

जो किसीको नहिं आता वो तेरे ज्ञानमें है।
जो किसीपर नहिं रौशन वो तेरे ध्यानमें है॥

गुण है क्या दिव्य तेरे कैसा भरा उनमें कमाल।
दिलरुबाईमें सचाईमें नहीं जिनकी मिसाल॥
ऐसे पूरे हैं किसी वक्त नहीं जिनको जवाल।
कोई तारीफ या तौसीफ करे क्या है मजाल॥

सरस्वती सोचमें जब रहगई हकदक होकर।
वेदमें आपही प्रगट हुए अक्षर बनकर॥

तेरे इसरारका मुमकिन नहीं होना इजहार।
तेरी हिक्मतको समझनाहै निहायत दुशवार॥
तेरी मर्जीमें नहीं दख्ल किसीको जिनहार।
अघटित है तेरी माया तेरी कुद्रत है अपार॥

तेरी महिमा है अगम ध्यानमें आए कैसे।
वहमको मसहि नहीं अक्ल बताये कैसे॥

है न होगा न हुआ है कोई तेरा हमसर।
तू है निर्व्यय निराधार सनातन अक्षर॥
माहियोमोरो मलखहूरो मलख जिन्नो बशर।
सबकी रहतीहै हमेशा तेरी रहमतपे नजर॥

तेरी कुद्रतसे मुकरनाही गुनहगारी है।
तेरी तोहीदमें शिकतकी सजा भारी है॥

रूहकी रूह है और चितका है चित जानकी जान।
आंखकी आंख है और मनका है मन कानका कान॥
वाकका वाक है और रसका है रस घ्रानका घ्रान।
हाथका हाथ है और पगका है पग प्रानका प्रान॥

सत्ता सामानसे सर्वत्र बिचरता तू है।
रात दिन खेल करे फिरभी अकर्ता तू है॥

वेद बतलाते हैं जिस पदको वो है नाम तेरा।
तत्त्ववित् पाते हैं जिस पदको वो है नाम तेरा॥
ध्यानमें लाते हैं जिस पदको वो हैं नाम तेरा।
भक्तजन गाते हैं जिस पदको वो है नाम तेरा॥

कुछ तेरा नाम हकीकतमेंहि अनमोल नहीं।
जाहिरा भारीभी ऐसा है कि कुछ तोल नहीं॥

धनको दे बलको दे ये नाममें तेरे बरकत।
ऋद्धि सिद्धि करे ये नाममें तेरे कुद्रत॥
मान हो ज्ञान हो ये नाममें तेरे ताकत।
अंत निर्वाण हो ये नाममें तेरे अजमत॥

अपनी बर्कतसे गुनहगारोंका उद्धार करे।
डूबती नाव तेरा नामहि वस पार करे॥

नामसे अन्य नहीं कामका अक्षर कोई।
सर्वोपर है यही इससे नहीं बरकत कोई॥
है तो बस नाम है पूरा नहीं रहबर कोई।
नामसे सीधा व सच्चा नहीं यावर कोई॥

आलिमे यासमें देखा तो भरोसा है यही।
राहे मकसूदत करनेको तोशा है यही॥

कैसा सचमुच है बना नूरका पुतला तेरा ।
आलम अफरोज हैं क्या हुस्न दिलआरा तेरा ॥
कौन ? जिसको नहीं भाता है सरापा तेरा ।
महव हो जाते हैं सब देखके जलवा तेरा ॥

क्या अजब चहरए हस्तीपे खिचे नक्शेनिगार ।
एकही गुलकी है क्या गुलशनें कुद्रतमें बहार ॥

कूटकर नरेहकीकतको है सांचेमें भरा ।
आपही आप चमकता है ये मुखडा तेरा ॥
रूखे जेबाका किस अन्दाजसे पर्दा उलटा ।
एक प्रकाशका लाखों जगह प्रकाश हुआ ॥

अक्सको वहम है ये जलवा फिजाई मेरी ।
आइना खत्तसे कहता है खुदाई मेरी ॥

है ये आलमको गुमां खोले हैं काकुल रुखपर ।
तारे शीराजए कोनेन बँधे हैं कसकर ॥
कौन कहता है छिपा जुल्फसे हुस्ने अनवर ।
नूरका हुस्न निकल आया सियाही बनकर ॥

रुखे तावांपे ये गेसूनहिं विखरा अल्ला ।
सुफहए नूरपे है साफ मसावेद लिखा ॥

चश्मबद्दुर वो आंखें वो इशारा इनका ।
दिलोजांपर हो पलकहीमें इजारा इनका ॥
मर्दुचश्में दो आलम हैं नजारा इनका ।
खाका बैराटने है साफ उतारा इनका ॥

शानेरब्बी है वेदा वस इन्हीं आंखोंमें ।
सारी कुद्रतका तमाशा है इन्हीं आंखोंमें ॥

गोश हैं याके अदालतका तेरे बाब खुला ।
पर्दएगोश या रहमतका उठा है पर्दा ॥

सुनी जाती है बडे गौरसे हरएककी सदा।
सबकी फर्याद रसीका है जरीया पूरा॥

कुद्रती न भरा नूर सरासर इसमें।
प्रतिबिंबित हो हरएक बोल बराबर इसमें॥

वो दहन है कि नहीं खुलता है उक्दा जिसका।
किस तरह नूरको है हुस्नके कूजेमें भरा॥
इसकी तशबीह नहीं ध्यानमें आती अस्ला।
खात्माहुस्नका हुस्ने खुदाग इसका॥

आलमें गैब है जाहिरमें अयां कुछभी नहीं।
लामकां है ये मकां इसका निशां कुछभी नहीं॥

लब है या नूर नुमायां है मुजस्सिम होकर।
या फना औरेबका रहने हैं दोनों मिलकर॥
इनकी ज्योतीसे नमूदार है ये शामोसहर।
कहर और महरका इनहीके हैं हिलनेपे हसर॥

एस पूरेकी हसेमेंभी अगर चितपे धरें।
नेस्तको हस्त करे हस्तको मादूम करें॥

वाह क्या दस्ते करम कैसाहै प्रकाश इनका।
सर्वपर विश्वमें रहमतका है यकसां साया॥
इनका सदका है किये ख्वान है बख्शिशकाबिछा।
इनकी बर्कत है कि हो पार जहांका खेवा॥

सब्र है आलमें ईकांको इन्हीं हाथोंपर।
है तो बस फखर है ईसाको इन्हीं हाथोंपर॥

ये शिकम है कि चिदाकाशका प्रकाश हुआ।
चश्मएनूरसे या हुस्नका दर्या निकला॥
पर्दए गैबमें है नूरे हकीकतकी जिया।
तख्तए गुलशने हस्तीपे गजब हुस्न खिला॥

इल्म एक आलमे इंकांका भरा है इसमें ।
ये शिकम वो है कि ब्रह्माण्ड धरा है इसमें ॥

यही देखा है कि है खूब कमरको देखा ।
हाथ लगता नहीं अनका हुआ मजमूं इसका ॥
रिश्तएनूरमें है हुस्नका नकशा बांधा ।
क्या रँगे जानेदो आलमका कैसा है पटका ॥

पूरीये जिन्से हकीकत कोई तोले क्योंकर ।
राजे अजली है कोई अक्लसे खोले क्योंकर ॥

कैसे दुर्लभ वो चरण कैसे वो प्यारे कफेपा ।
मर्दुमे चश्मे तमन्नासे हो दर्शन इनका ॥
इनहि चरणोंने मिटाया है बखेडा सबका ।
निर्भय विश्वास करो पार हो बेडा तेरा ॥

हुस्नमें है हुस्न और नूरमें है नूर इनसे ।
ऐसे पूरण है कि ब्रह्मांड है भरपूर इनसे ॥

हारः ॐ शांतिः ।

॥ मुसद्दस ॥

बेचूनोचरा नामों निशांसे है मुवर्रा ।
क्या कहिये जो चिन्तनहीमें आती नहीं असला ॥
सदसत्वसे विलक्षण है अजब भाव कुछ उसका ।
चेतन नहीं जड भी नहीं ये और अचम्भा ॥

मकदूर नहीं तेरी हकीकतके बयांका ।
हां आपही शाहिद है तू उस राजे निहांका ॥

नैचिन्त्य अनिर्वाच्य निराकार जो तू है ।
निर्व्यय अनिर्देश्य निराधार जो तू है ॥
अग्राह्य अनिर्विघ्न परम पार जो तू है ।
इस सर्वही प्रपंचमें बस सार जो तू है ॥

जब गमहि नहीं विरंचि हरि हरके गुमांको ।
क्या जीवकी सामर्थ है जो खोले जबांको ॥

हां इससे जियादह नहीं कुछ वेदमें गाया ।
प्रकाशही तेरा तेरी सूरतका है खाका ॥
क्या अक्ककी है नाब खिरदको कहां यारा ।
नख शिखसे तेरा खैंचके दिखलाय सरापा ॥

लाखोंहीने इस फिक्रमें है जान गँवाई ।
हैरतसे हुई आगे किसीकी न रसाई ॥

दुर्घट वो तेरी माया वो कुद्रत तेरी अकबर ।
अनुमानमें घटती नहीं परमाणुसे बाहर ॥
वो गुण तेरे उत्कृष्ट वो महिमा तेरी बरतर ।
इसका नहीं सानी कोई उनका नहीं हमसर ॥

वो तेज निराली तेरी वो शाम अनोखी ।
इसकी नहिं तसमील तो उपमा नहिं उसकी ॥

जब नूरे हकीकतका उठा गैबसे परदा ।
प्रकाश हुआ तेरी तजल्लींका हुबाला ॥
हुस्ने अबदी फिर तो बडी धूमसे निकला ।
नज्जारेका अपनत हुआ आपही शैदा ॥

इश्के आजलीनें नये अन्दाज बनाये ।
आईनए कुद्रतनें नये रंग दिखाये ॥

जो तेरा रचा काश ये संसार न होता ।
और वेदमें वाचक तेरा ॐ कार न होता ॥
यूँ दिव्य गुणोंका तेरे इजहार न होता ।
इस तरह तेरा हुस्न नमूदार न होता ॥

जल्वा तेरी कुद्रतका हरएक शयमें अयां ।
हरश्वासमें हरबोलेमें तेराहि बयां है ॥

ये पञ्च महाभूत हैं क्या इनमें है कुद्रत ।
वो सोम रवी तारे हैं क्या उनमें अजमत ॥
ये औषधि ये अन्न हैं क्या इनमें है ताकत ।
वो पर्वतादि जीव हैं क्या उनमें है शौकत ॥

ये सर्व सृष्टी तेरी इच्छासे हुई है ।
एकत्वता तुझहिमें है तुझहीसे हुई है ॥

हरदिलमें तेरा अक्स जो सरकार न होता ।
और नूर तेरा नूरुलअनवार न होता ॥
यूँ इश्कमें तेरे कोई सरशार न होता ।
यूँ जांसे कोई तेरा खरीदार न होता ॥

कुछ जानसे प्यारा नहीं तू जानसे प्यारा ।
ईमानसे कहता हूँ तू ईमानसे प्यारा ॥

जीवोंकर है जीवन तेरी रफतारके सदके ।
जीवनसे है प्यारी तेरी गुफतारके सदके ॥
है सबसे प्यारा तेरे दीदारके सदके ।
तू ब्रह्मसनातन तेरे अधिकारके सदके ॥

तारक है करम धर्म तेरा नाम बडा है ।
अव्यक्त है अक्षर है तेरा नाम बडा है ॥

सुत नार तजी धनको तजा मानको छोडा ।
फलफूलही खाकर किया जंगलमें बसेरा ॥
वेदान्त पढा न्याय पढा योगको धारा ।
तिसपरभी किसीसे नहीं सौदा हुआ तेरा ॥

मिलता है तो मिलताहै तू बस जानके बदले ।
आताहै तेरा प्रेम सब ईमानके बदले ॥

प्रहलादने जब तुझसे थी लौ अपनी सगाई ।
वो कौनसी आफत थी जो आफत न उठाई ॥

मरनेसेभी अस्ला न डरा राम दुहाई।
वो चाह थी वो प्रेम वो निश्चय वो ढिठाई॥

वों इश्कका जजबा था वो ईमानकी बर्कत।
तत्काल हूआ खंभको तू चीरके परगट॥

जय हो तेरी जय हो तेरी ओ सर्वके कर्ता।
धन धन है तू धन धन है तू ओ विश्वके भर्ता॥
रखवार है तू बीज है तू बारो जहांका।
क्या तेरी ये फुलवारी है क्या तेरा तमाशा॥

ये तेरीहि शक्ती है कि ब्रह्माण्डको धारा।
वो तुझहिको कुद्रत है किये भार सहारा॥

आधार है कर्तार है भर्ता तथा हर्ता।
परमात्मा है आत्मा है ज्ञेय है ज्ञाता॥
सुहृद् है प्रभू है प्रेरक है नियन्ता।
उपद्रष्टा है उन्मंता है दाता है विधाता॥

जीवन है तुही रस है तुही प्राण तुही है।
है तेज तुही बल है तुही ज्ञान तुही है॥

बेचारोंका लाचारोंका गमख्वार तुही है।
दरमांदोंका गर है तो मददगार तुही है॥
नाशादोंका नाकामोंका दिलदार तुही है।
मेरा है बस आधार तो आधार तुही है॥

किसीको नहीं बतला तेरी करुणानें उभारा।
किसका नहीं महबूब तू सबहिको पियारा॥

माबूद है तू सिजदा करा लेनेके काबिल।
मैं बन्दा हूँ बस सिरको झुका देनेके काबिल॥
हां तेरा तो दिल है रहम आजानेके काबिल।
पर हालभी मेरा है रहम खानेके काबिल॥

कुछ कहनेकी ताकत नहीं सब तुझको खबर है ।
खोटा या खरा हूँ तेरी रहमतपे नजर है ॥

ना दीनकी ख्वाहिश है न दुनियाकी तमन्ना ।
जन्नत हो या दोजख हो कुछ इसको नहीं परवा ॥
ना कामनासिद्धिकी है ना मोक्षकी इच्छा ।
दे है तो यही दान दे बाकी है बखेडा ॥

तेरा रहे सद्भाव सदा हिर्दमें मेरे ।
मेरा रहे अनुराग सदा चरणोंमें तेरे ॥

तू जैसे रखे तैसेही आनन्द मनाऊं ।
शिकवा या शिकायत नजबांपर कभी लाऊँ ॥
ये बोलता जबतक रहे गुणही तेरे गाऊं ।
इसमेंकी बडाईमें तुझ भूल न जाऊँ ॥

ऐ जान अलावह अर्जी और इतना करम हो ।
मैं तेराहि दम भरता हूँ जब आखिरी दम हो ॥

आपसमें उधर जानो अजलकी हो लडाई ।
होतीहो इधर आपकी बस चश्मनुमाई ॥
होतीहो उधर प्राणकी चोलेसे जुदाई ।
होजाय इधर तुझसे मेरी जान सफाई ॥

मैं तुझमें मिलूँ खाक मेरी खाकमें मिलजाय ।
वाकी न रहे हसरत दीदार निकल जाय ॥

आशिक तेरी सूरतका तेरे दरका गदा हूँ ।
मुश्ताद तेरे बोलपे चितवनपे फिदा हूँ ॥
हूँ जांसे मिला देखलो गो तनसे जुदा हूँ ।
मैं तेराहि बस तालिबे दीदार सदा हूँ ॥

ना पेटका बावू न किसी भेदका चेरा ।
ना पन्थका पावन्द गिरफतार हूँ तेरा ॥

संसारमें अच्छी या बुरी है मेरी हालत।
उकबाकी मिलो या न मिलो दौलतोहश्मत ॥
हो बदमजगी हिज्रकी या वस्लकी लज्जत।
राजी बरजा हूँ नहीं बन्देको शिकायत ॥

दिलदादा हूँ मैं तर्जेफुगां याद नहीं है।
खुमगश्ता है दिल वाकिफे फर्याद नहीं है ॥

वो धर्महीं बनता नहीं जो पार लगावे।
वो कीरतन आता नहीं जो तुझको रिझावे ॥
वो ज्ञान वो अनुभव नहीं मायासे छुडावे।
वो योगका बलही नहीं बिछडोंको मिलावे ॥

किंचित्‌भी भरोसा नहीं निज करणीके फलपर।
निर्भय हूँ फकत तेरी अनुग्रहहीके बल पर ॥

तसलीमोरजा सब्रो तवक्कुल न हो जबतक।
ना ज्ञान हो ना योग हो ना प्रेम हो तबतक ॥
अभिमानमें कर्तृत्वके आयू गई अबतक।
क्या जाने अहंकार रहेगा अभी कबतक ॥

हां इसमें तो कुछ शक नहीं वो जिन्स बड़ी है।
पर साथही भारीभी है कीमतभी कडी है ॥

उसहीकी अनुग्रह हो तो मुमकिन है वो मिलजाय।
और बाब हकीकतका इसारेहिसे खुलजाय ॥
जो भार है संसारका वो सर्वहि टलजाय।
ये दिल जो है कुमलाका हुआ खूबही खिलजाय ॥

मुखतार है वो कौन उसे ठोकनेवाला।
कादिर है नहीं कोई उसे रोकनेवाला ॥

दरपर्दः बहुत हो दिले मुजतरको सँभाला।
क्या इश्कका गल्बा है कि टहलता नहीं टाला ॥

कहनाहि पडा देखलो वो ब्रजका लाला ।
वो छैल बो छलिया वो नई बांसुरी वाला ॥

वो कृष्ण वो गोविंद वो मोहन वो कन्हैया ।
वो सांवरा रणछोड वो बलदेवका भैया ॥

वो लाडला सखियोंका बडा नन्दका प्यारा ।
वो रासका रसिया वो यशोदाका दुलारा ॥
शिर मोरमुकुटवारा वो कटिकाछनी वारा ।
वारफ्तः वो राधा का वो गोकुलका उजारा ॥

यूँ इश्कका उसहीके असर छायाहै मुझपर ।
थे उसहीकी उल्फतने गजब ढाना है मुझपर ॥

उस श्यामकी उल्फतने वतनसे है निकाला ।
उस छैलकी फुर्कतने किया है तहोबाला ॥
उस जल्फेसियाफामने जुल्मातमें डाला ।
बिजली गिरादेता है वो कानका हाला ॥

सोनेमें तपां गमसे गजब जानों जिगर है ।
वो कसूते गम है कि नहीं गमकी खबर है ॥

क्या खूबिये दीदारने हसरत है बढाई ।
क्या शोखिये रफतारने महशर है उठाई ॥
क्या सूर्खिये लबने है गजब आग लगाई ।
क्या कशमकशे इश्कने है धूम मचाई ॥

यूँ चाहने उस चाहे ज़कनके है डुबोया ।
यूँ शौके शहादतने दिलो जानसे खोया ॥

गैरतने गजब तरहसे शरमाया है मुझको ।
हैरतने अजब वजअसे घबराया है मुझको ॥
क्या दामे मुहब्बतमें खुदा लाया है मुझको ।
क्या नशअमए शोकका बस आया है मुझको ॥

न घरका न बाहरका नया हाल है मेरा।
मैं हूँ कि नहीं हूँ नहीं इस बातका बेरा॥

उस रूपके बलिहारी मैं झांकी है अनोखी।
क्या हुस्नमें नमकीनी है क्या तर्ज अदाकी॥
क्या चालमें अन्दाज है चितवन बडी बांकी।
गुण उसमें बकाका है सिफत इसमें फनाकी॥

ये इसमें हुनर मैं कि नई आन हो पैदा।
वो उसमें करामात करे हश्रको वर्पा॥

क्या चांदसे मुखडेपे गजब सांवली रंगत।
प्रकाशकी स्याहीसे निकल आई है सूरत॥
क्या नूरेहककी जिया होरही परगट।
है साफ नमूदार दो आलमकी हकीकत॥

मुश्ताक है दर्शनकी दिलोजांसे खुदाई।
प्रत्यक्ष निराकारने क्या छबि है बनाई॥

वो आंख हैं प्यारी वो गजब उनका इशारा।
करतीहैं पलकहीमें दिलोजांपे इजारा॥
हैरान बना देता है बस उनका नजारा।
परब्रह्मको क्या छोटीसी पुतलीमें उतारा॥

क्या आंख हैं जो कल्बको आंखोंमें उलटदें।
ब्रह्माण्डको यक आनमें चाहे तो पलटदें॥

क्या मोहनी मतवाली है चितचोर रँगीली।
क्या सहर भरी मदभरी मखमूर रसीली॥
सदपार जिगरको करे कैसी है कटीली।
लेकरहि टलें जानको पूरी है हठीली॥

फिर सुर्मगी ऐसी है कि आंखोंमें भरी है।
और शर्मगी इतनी है कि दिलहीमें धरी है॥

क्या प्यारी वो मुसकान होठोंका दबाना ।
क्या खूब वो मुँह फेरना बातोंका बनाना ॥
क्या कहर है आफित है वो त्योरीका चढाना ॥
क्या मौत है क्या इश्र वो आबरूका हलाना ॥

काकुलके नये ढङ्ग हैं अन्दाज निराले ।
खुलजाये तो सम्बुल हैं जो बलखाये तो काले ॥

मतवाली घूँगरवाली गजब विषकी भरी हैं ।
गो कदकी हैं छोटीसी मगर गुणमें बडी हैं ॥
नागन हैं वो सूरनमें तो सीरनमें परी हैं ।
क्या कुण्डली मारे हुए कानोंपे धरी हैं ॥

पर्चायें परचती नहीं वो शिरपे चढ़ी है ।
सायेसी लगी फिरती हैं वो पीछे पड़ी है ॥

वो तंग दहन है कि नहीं खुलताहै उक्दा ।
यक नुकतेमें किस तरह है कुछ हुस्न समाया ॥
ये नक्श वही हैं जो हुआ गै बसे पैदा ।
इस नूरके कूजेमें हैं ब्रह्माण्डकी रचना ॥

मजमूनसे बस फिक्रे तवाकी है लडाई ।
हां साफ हो तशबीह तो होजाय सफाई ॥

क्या लब हैं वो शीरीं वह गजब उनमें है सुर्खी ॥
और उनकी वो दमसाज अजब मोहनीबन्सी ॥
गुण इनमें मसीहाई सिफन उसमें कजाकी ।
जां बख्श ये पूरेहैं वो जांदुज्द है पक्की ॥

नक्शा है नया दोनोंके अन्द जो अदाका ।
जां लेना तो बस खल है जां देना तमाशा ॥

वो दस्त तवाना है वो नाजुक है कलाई ।
हैं दोनों गजब एक नहीं राम दुहाई ॥

हाथोंहीमें जां घेरलें वो इनमें रसाई ।
चुटकीहीमें दिल फेरदें ये उनमें सफ़ाई ॥

वो काहेको चाहें तो कन उंगलीसे उठादें ।
पत्थर हो कलेजा तो ये दमभरमें हिलादें ॥

उन हाथोंने किनकिनको नहीं भवसे उभारा ।
उन हाथोंने दुष्कृतोंका गिनगिनके है मारा ॥
चर और अचर सबको उन हाथोंका सहारा ।
उन हाथोंका ये खेल बनाया हुआ सारा ॥

उन हाथोंसे महँदीने जिगर खून किये हैं ।
बनसीनेभी दिल छीनके उनहीको दिये हैं ॥

वो साफ़ शिकम और वो रंग उसकी जियाका ।
क्या नूरके तख्तेपै खिंचा हुश्नका नक्शा ॥
प्रकाशसा प्रकाश है जल्वासा है जल्वा ।
पर्देमें हकीकतके है कुद्रतका तमाशा ॥

सीनेमें बहुत आलामें इमकान भरे हैं ।
शतकोटि हरेक रूपमें ब्रह्माण्ड धरे हैं ॥

हां है तो सही पर नजर आती नहीं अस्ला ।
तुर्फा है ये मजमूनभी अनका हुआ उसका ॥
पटकेमें कमर है कि कमरमें है पटका ।
क्या बल है निकलता नहीं ये और अचम्भा ॥

वो जिनसे हकीकत कहो कैसे कोई तोले ।
वो राज अजली कहो कैसे कोई खोले ॥

आफित है कमर कहरहै पटका वो रँगीला ।
पेंच इसके बडे बाँके हैं खम उसमें बलाका ॥
क्या गोपियां तालाशमें इसके हुई रुसवा ।
क्या राधिका अन्दाजपे उसके हुई शैदा ॥

है वहमसे बारी सना क्या हो करमकी ।
नाजुक है नजव तवा नहीं वारे नजरकी ॥

दुर्लभ वो चरण कैसी वो प्यारी कफेपा है ।
क्या चक्र गदा शंख पदमकी वो जिया है ॥
ये उनहीका प्रकाश दो आलममें खिला है ।
ये उनहीके आनन्दसे ब्रह्माण्ड भरा है ॥

पावन है परम पूज्य हैं ऐजाज भरे हैं ।
हैं सर्वके आधार प्रकृतिसे परे हैं ॥

ताविंदः हैं मँहदी भरे तलवे वो बलाके ।
जरें महो खुर्शीद है दो जिनकी जियाके ॥
दिल छलनीहि करडाले हैं नखचीर बनाके ।
रेखा वो नहीं पैरकी हैं तीर कजाके ॥

उन चरणोंने पामाल कियाहै नहीं किसको ।
वो कौन नहीं हस्रते पावोस है जिसको ॥

ये वो हैं चरण जानसे जिसका हुँ मैं शदा ।
ये वो हैं चरण जिनकी मुझे दिलसे तमन्ना ॥
सब अपनेहि मतलबके हैं कोई नहीं अपना ।
उन चरणोंकी सौगन्द है उन चरणोंकी आशा ॥

उन चरणोंमें आसान नहीं दिलका लगाना ।
है जानकी बाजी बडा मुश्किल है निभाना ॥

ओ बांके बिहारी ओ मुरारी ओ कन्हैया ।
छिपता है छिपायेसे कहीं इश्क ये तेरा ॥
वो जजबएउल्फत है कि खुद उठ गया पर्दा ।
ये जोश मुहब्बत तुझे कर देवे न रुसबा ॥

दिलही नहीं मुजतर है पडे जानके लाले ।
अब जानको रोके कोई या दिलको सँभाले ॥

तुझहीसे खुली राजेनिहानीकी हकीकत ।
तुझहीसे आयां हुस्ने निहांकी हुई सूरत ॥
है जातमें बस तेरेही ये वहद कसरत ।
तुझहीसे नमूदार हुई अजम तो शौकत ॥

सर्वत्र है तू सर्वमें तू सर्वदा तू है ।
हां तुझहीसे ये सर्व हैं सर्वात्मा तू है ॥

मुँह फेरलिया शक्कको दिखलाके तो फिर क्या ।
ह अक्स मेरे दिलमें बना हूबहू तेरा ॥
नक्सा वो तेरे हुस्नका आंखोंमें समाया ।
हर जरेमें आता है नजर तेरा सरापा ॥

निर्भय हूँ न निर्गुणकी न सगुणकी खबर है ।
जित तित तेरी सूरतही फकत पेशे नजर है ॥

ऐसोजी राम नाम रसखान ।
मूरख याको मरम न जाने पीवें सन्तसुजान ॥
याहीमें राधेश्याम स्वतः सिद्ध रास करें ।
याहीमें हरि हर ब्रह्मा निवास करें ॥
याहीमें तीन लोक चौदह दीप वास करें ।
याहीको चार वेद छः पुराण भास करें ॥
याहीसों काल क्रूर यमदूत त्रास करें ।
याहीसों अग्नि सूर्य चन्द्रमा प्रकाश करें ॥
याहीकी ऋषिमुनि योगी जन उपास करें ।
गावत सभी पुराण ॥ १ ॥
ऐसोजी रामनाम रसखान ।
मूरख याको मरम न जाने पीवें सन्त सुजान ॥

शष और गणेशजीने याको पीयो गोल गोल ।
सनकादिक ऋषियनने पियो याको खोल खोल ॥
शारदने नारदने याको पियो बोल बोल ।
वाल्मीक व्यासजीने पियो याको तोल तोल ॥
वामदेव शुकदेवने याको पियो छोल छोल ।
पार्वती शंकरने पियो याको घोल घोल ॥
गोपीचन्द भर्तरीने याको पियो डोल डोल ।
रोल रोल पियो हनुमान ॥ २ ॥
ऐसोजी रामनाम रसखान ।
मूरख याको मरम न जाने पीवें सन्तसुजान ॥
याहीके प्राप्त भये प्राप्त होय धन धान ।
याहीके मान करे लोकनमें होय मान ॥
याहीके कण्ठ धरें थिर हों ये मन प्रान ।
याहीके ज्ञान हुए उदय होय ब्रह्मज्ञान ॥
याहीको सिद्ध करे सिद्धिन बस होय आन ।
याहीका ध्यान धरे होयहै स्वरूपमान ॥
याहीको पान किये अमृतका होवे पान ।
अन्त होय निर्बान ॥ ३ ॥
ऐसो जी रामनाम रसखान ।
मूरख याको मरम न जाने पीवें सन्त सुजान ॥
याहीको सीस धरो सन्तनकी सीख मान ।
याही विश्वास करो बुद्धीसों छान छान ॥
याहीको फूँक दियो गुरुदेव खोल कान ।
याहीको नियम करो प्राणनको तान तान ॥

याहीमें प्रेम बढो भक्तीको तत्त्व जान।
याही दृढ भूत भयो अनुभवसूँ ठान ठान॥
याहीमें मग्न रहूँ ऐसी पडगई बान।
निर्भयराम प्रमान॥ ४॥
ऐसोजी रामनाम रसखान।
मूरख याको मरम न जाने पीवें सन्तसुजान।

इति श्रीनिर्भयरामकृते निर्भयविलासे उपनाम गीतगोविन्दे
द्वितीयो भागः समाप्तः॥

॥ श्रीगणपतये नमः ॥

अथ
निर्भयविलास।
अर्थात्
तृतीय भाग.

हरिः ॐ तत्सत्।

ॐ नमो नारायणाय।

शिष्य—इस संसार विषय मनुष्यका बडा पुरुषार्थ क्या है?

गुरु—इच्छाविवेक तथा इच्छाशुद्धि।

शिष्य—उक्त पदोंका भावार्थ क्या है?

गुरु—सर्व प्रकार योग्यता अयोग्यताका भली भाँति विचार करके देश काल तथा धनादि साधनोंके अनुकूल जो इच्छा करना है, सो इच्छा विवेक कहिये है।

पुनः यह करनाही उचित है। ऐसे दृढ निश्चयके प्रभावसों जो नीतिपूर्वक निष्कामप्रवृत्ति है ताको नाम इच्छाशुद्धि है। हे तात! कर्म स्वयं फलका जनक नहीं वो कर्त्ता पुरुषकी भावनाही है जो कर्म फलके उत्पन्न करे है।

शिष्य—संसारमें अनेक मत हैं तिनके विषय श्रेष्ठ कौन है?

गुरु—सर्वत्र अपेक्षित पुनः श्रेष्ठताविषय मुख्य प्रमाण शौच, सत्य, तप, त्याग तथा न्यायरूप समान धर्मोंकी जिस मतमें अन्य मतोंसे जितनी विशेषता है उतनाही वो मत औरनते श्रेष्ठ कहा जावे है।

शिष्य—उक्त सामान्य धर्मोंका स्वरूप क्या है?

गुरु—बाह्यान्तर भेदतें शौच दो प्रकारका है। तहां जलमृत्तिकादि पदार्थोंकरके शरीरादिकनकी शुद्धि बाह्य शौच है और हृदयविषय समता कहिये रागद्वेषकी निवृत्ति अन्तर शौच है।

त्रिकालाबाध अथवा सर्वत्रव्यापक वस्तुको सत्य जानना चाहिये। सम्पूर्ण पापोंको दग्ध करके जो प्रकाश उत्पन्न करे ऐसी मन इंद्रियां तथा प्राणोंके दृढ धारणको तप कहे हैं।

दृश्यसंबन्धविषय अनुचितभावके छोडनेका नाम त्याग और जहां तहां यथायोग्य वरतनेका नाम न्याय है।

शिष्य—ऐसी कौन वस्तु है जिसके आश्रय मनुष्य निर्भय हुआ परमगतिको पावता है?

गुरु—हरिकृपा।

शिष्य—ऐसी हरिकृपाकी प्राप्तिका निश्चय कौन उपाय है?

गुरु—सर्वशास्त्रके भंडार पुनः सम्पूर्ण उपनिषदोंके सारभूत श्रीभगवद्गीताका यथायोग्य सेवन करना।

हे तात! नरनारायणके इस अद्भुत संवादकोही परमधामकी प्रसिद्ध निसेनी कहा है काहितें कृष्णदेव तो सद्गुरु और अर्जुन उत्तम अधिकारीकी पूर्ण प्रतिमा हैं।

शिष्य—ऐसे अपारशब्दात्मक वनवनमें पंथका सुगमही मिल जाना मेरेको तो कठिन प्रतीत होवे है।

गुरु—स्वयं कृष्णदेवकरके तहां प्रकाश हुआ जो सिद्धान्त है वो मैं तेरे प्रति कहूंगा तू निराश मत हो।

हे तात! जहां कहीं पूर्व वर्णन किया हुआ आशय पुनः दृढ प्रतिज्ञाकरके जिज्ञासुके कल्याणअर्थ तथा सत्कारपूर्वक ग्रन्थको समाप्त करनेके प्रयोजनतें कथन किया जावे है उसको तुम अवश्य सिद्धान्तही जानना।

शिष्य—भगवान् आपकी जय हो। जैसे पपीहा स्वातिकी बूंदोंका पान करनेका अभिलाषी होवे है। तैसेही मैं आपके अमृतरूप वचनोंको श्रवण करनेकी कांक्षा करूं हूँ।

गुरु—श्रीभगवानुवाच। सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः। इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ॥

श्रीभगवान्‌बोले—सर्वकहिये सर्व धर्मोंतें गुह्यतम हमारे परम वचनको फिर श्रवण कर, तू हमारेको बहुतही प्रिय है यातें तेरे कल्याणके अर्थ मैं कहूं हूँ। इति पदार्थः।

अनुवाद—हे तात! सामान्यविशेष पृथक्तथाकृत्स्नरूपकरके चार प्रकारके धर्म लोकवेदविषयप्रसिद्धहैंतहांसर्वत्रसर्वकेउपयोगीशौचादिधर्मसामान्यधर्महैं। गृहस्थादि न्यारेन्यारेआश्रमोंके न्यारे न्यारे धर्म विशेषधर्म हैं। एकही आश्रमविषय परस्परभेदतें भिन्न भिन्न धर्म पृथक् धर्म हैं। एकही भाववाले ज्ञान तथा योगरूप समष्टिधर्म कृत्स्नधर्म हैं। संवादको समाप्त कर तथा कुन्तीपुत्रअपनेपरमप्रियसखाकोसारभूतअर्थविषयदृढ करनेकी इच्छासेकृष्णदेव कहेहैं। अर्जुन तुमें याद हो वा न हो पूर्व सर्वधर्मोंको लेकर हमने कर्म तथा कर्मसंन्यासके विषय निष्काम कर्मकोगुह्य कहा था। तिस निष्कामकर्मतें ज्ञानको गुह्यतरकहा था। ज्ञानतें योग कहिये आत्मसंयमको गुह्यतम कहा था।

पुनः सर्वयोगियोंके मध्य अपने अनन्यभक्तोंके तत्त्वको सर्वगुह्यमत कहा था। वोही सर्वोत्कृष्ट हमारा परमवचन फेरश्रवण कर। पूर्वजिसतिसप्रसंगविषयमिलाकर कथन किया हुआ अपनासोवचन अबसिद्धान्तरूपतेंकहूं हूंदैवीसम्पदाकेसन्मुखउत्पन्नहुआविष्णुकलाकाप्रत्यक्षअंशअर्जुन! मेरेको आप जैसाप्रियहै।

पुनः जैसे तू मेरे विषय अत्यन्तकरके श्रद्धाविश्वासवालाहै तैसाही मैं भी अतिशय करके तेरे श्रेयकी कामानवालाहूं।
हे शिष्य ! बहुत पदार्थोंके मध्य जो पदार्थ रहस्यरूपतें स्थित होवे है ता पदार्थको गुह्य कहे हैं। ता गुह्यपदार्थतें जो अतिगुह्य होवे है ताको नाम गुह्यतर है। और ता गुह्यपदार्थतें भीजो गुह्यविशेष हैं सो पदार्थ गुह्यतम कहिये। पुनः जो गुह्यतम पदार्थोंके मध्यभी सर्वतें उत्कृष्ट होवे है ता पदार्थको सर्वगुह्यतम या विशेषण करके कथन करे हैं।

फिर धर्म, अर्थ, काम तिनतें पर कहिये ऊर्ध्व जो मोक्षपद है ता मोक्षपदकी जिस वचनके प्रभावकरके सिद्धि होवे है। अथवा जिस वचनके श्रवण तथा बोधतें कुछभी श्रवण करावे और जानवेको शेष न रहे ता वचनको परमवचन अर्थात् महावाक्य करके कथन करे हैं।

उक्त पदोंकरके तहां कृष्णदेवने यह अर्थ सूचन किया है कि अनन्यभक्तिका बोधक हमारा वक्ष्यमाण वचनही यथायोग्य सेवन किया हुआ पुरुषोंको अक्षरानामयपदकी प्राप्ति करनेवाला है।

सर्व धर्मोंके मध्य जो गोप्यतें गोप्य अन्य रहस्य है सोतो मुमुक्षुजनोंको ता पदको सिद्धिविषय सहकारी होवे है। अथवा हमारे सनातन अव्यय अनुत्तम परमभावको न जाननेहारे लोकोंके ताई सर्वत्र सोपाधिक सुखकेही दाता हैं।
हे तात ! पूर्व श्लोककरके तो श्रीभगवान्ने अपने सिद्धान्तका माहात्म्य वर्णन किया। अब अगले दो श्लोकोंकरके साक्षात् सिद्धान्तको वर्णन करें हैं। तहां पदपदका जो गूढ

अभिप्राय है सो मैं तेरे प्रति भिन्न भिन्न भली प्रकार खोल कर कहूँगा तू सावधान हो ।

श्रीभगवानुवाच—मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मांनमस्कुरु। मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥

श्रीभगवान् बोले मेरे विषयही मनवाला हो, मेराही भक्त हो, मेराही पूजन कर, मेरेको ही नमस्कार कर, तू मेरेकोही प्राप्त होवेगा; मैं तेरेतें सत्यप्रतिज्ञा करूं हुं तूं मेरा प्यारा है। इति पदार्थः ।

अनुवाद—मन्मना भव सर्वका अधिष्ठान, सर्वका आदि, सर्वका पितामह, देशकालवस्तुपरिछेदरहित और याहीतेंजानवेयोग्य जो मैं अनादि, अनन्त, विश्वेश्वर, विश्वआत्मा, स्वयम्भू भगवान् हूँ तूँ अर्जुन मेरे विषयही अपनी ज्ञानरूप शक्तिको प्रवेश कर । तहां मेराही श्रवण मनन कर—अर्थात् कथाप्रसंग हरिजनोंकी संगति, सत्पुरुषोंके उपदेश, सद्गृहस्थोंके विचार अथवा अनेक श्रुतिस्मृतिप्रमाण, भांतिभांतिके दृष्टान्त तथा युक्तियोंकरके तूँ अर्जुन मैं वासुदेव भगवान्हीके सद्भावको हृदय विषय दृढ कर ।

मेरीही निष्ठावाला हो—अर्थात् आदि अन्त तथा पुनरावृत्ति वाले होनेतें ऊर्ध्वतें ऊर्ध्व लोक पुनः विशालते विशाल भोग तथा ऐश्वर्य्यका तिरस्कार करके सर्वकी अवधि तथा अक्षरानामयरूप जो मैं सनातन परात्पर अकृत्रिम देव हूं तूँ अर्जुन मेरेकोही परम पद वा परमश्रेय निश्चय कर ।

मुझ परायणही हो—अर्थात् सर्वका प्रकाशक तथा प्रवर्तक, संपूर्ण हितोंका कर्ता, सर्व दुःख तथा विघ्नोंका हर्ता जो मैं परम दिव्य पुरुष हूं तूँ अर्जुन मेरेकोही सर्व ओरतें आश्रयकर ।

मेरीही भावनावाला हो-अथात् सर्वका साक्षी, त्रिगुणातीत जो मैं अच्युत निरंजन परमात्मा देव हूँ। तूं अर्जुन पंचकोश तथा त्रैदेहते भिन्न अपना आत्मा मेरेकोही जान। काहेतें मेरा यथार्थ बोध हुए विनाही महाबाहो! तेरी बुद्धि कदाचित निश्चयात्मक होवे नहीं।

मद्भक्तो भव-परमप्रेमका विषय, परमानन्दस्वरूप सर्वका सुहृद्, परमसुन्दर, परमपवित्र और याहीतें सेवन करनेयोग्य जो मैं सर्वोत्तम मंगल देव हूं, अर्जुन! मेरे विषयही इच्छारूप अपनी शक्तिको स्थापन कर। तहां-

चन्द्रमाविषय चकोरकी नाईं मुझहीमें अनुरागवाला हो, पतितें पतिव्रताकी नाईं मुझकरकेही तृप्त हो, जलविषय मीनकी नाईं मदन्तरही सन्तोषको पाओ।

दुःखकरके अन्वित संतुष्ट तथा तृप्त करनेको असमर्थ, काम अग्निको प्रचंड करनेवाले, अनर्थके हेतु, मोहके जनक, ज्ञानके शत्रु, चिन्ताके कारण अथवा आगमापाई अनित्य असार निन्दित तथा तुच्छ जो ये आपातरमणीय देहादि दृश्य सम्बंध हैंयहशब्दादिविषयहैंतिनकेमध्यतूं अर्जुनप्रमादी मतहो। काहेतें मेरे विषय सर्वदा तथा सर्वभावकरके रमणकिये विना हे कुरुनन्दन! प्रारब्धजन्य तेरे दुःखोंकी शान्ति सम्भव नहीं।

मद्याजी भव-अपनी सत्तास्फुरणतें सर्वको पूरणकरनेवाला सर्वका प्रेरक सर्वका नियंता सर्वके ज्ञान तथा बलका भंडार सर्वके पौरुष तथा चेतनाका निधि सर्वयज्ञोंकोभोक्ता सर्व फलप्रदाता और याहीते पूजनेयोग्य जो मैं मायाका पति सर्वशक्तिमान् चैतन्य देव हूँ तू अर्जुन क्रियारूप अपनी शक्तिको

मेरे विषयही युक्त कर। तहां मेराही स्मरण कर-अर्थात् शुभमें प्रवृत्त तथा अशुभमें निवृत्त होनेके अर्थ दिव्यमंत्रोंकरके अथवा अनुचित दुष्ट कर्मोंके पापतें छूटनेके अर्थ दिव्य नामोंकरके तू अर्जुन मुझ सविता देवको ही नित्यप्रति भज।

मेराही कीर्तन कर—अर्थात् प्रेमविषय विह्वल हुआ तू अर्जुन मुझ सब देवकेही गुणानुवादोंका गान कर मुझ गोविन्दकेही तत्त्व तथा माहात्म्यको बोध वा वाणीविनोदार्थ परस्पर कथन कर, विश्वके प्रवर्तक मुझ परमदेवकी अचलनीतिकाही जहां तहां मनुष्योंविषय प्रचार कर मिथ्या भाषण तथा जगत्की मान बडाई विषय उन्मत्त मत हो।

मेराही अर्चन कर, अर्थात् हृदयकुण्डविषयमें विष्णुभगवान्के अनुरागरूप प्रज्वलित अग्निमें तू अर्जुन अपने सम्पूर्ण कर्मोंको सर्वदा होम कर वामें प्रजापति भगवान्को सन्तुष्ट करनेके अर्थही तू अर्जुन स्वधर्म कहिये सम्पूर्ण कार्य कर्मोंका यथा उचित अनुष्ठान कर वा अन्तःकरणकी शुद्धि अर्थही तू अर्जुन नाना विशेषविधि तथा अनेक प्रतिष्ठित तू भावनाकरके मुझ हरिभगवान्का पूजन कर।

मेरीही सेवा कर—अर्थात् सर्वत्र देवनीतिका पालन कर सर्वदा गुरुदेवकी आज्ञामें व्रत देवता, ऋषि, पितृ तथा हरिभक्तोंका यथायोग्य सन्मान कर, तन मन धनकरके जीवमात्रका हितकारी हो।

मेरीही वन्दना कर—अर्थात् नित्य नये मंगलकी वृद्धि तथा अनिष्ट विघ्नोंकी हानि अर्थ त्रिकालसमय स्वाभाविक तू

अर्जुन दिव्य स्तोत्रों वा विनययुक्त वाणी करके मैं भक्तवत्सल नारायणकीही स्तुति कर पुनः महाभय वा महासंकटके समय भी अशक्यताको मत छोड श्रद्धा विश्वासरूप नेत्रोंकरके मुझे दीनबन्धु जनार्दन भगवान्की ओरही देख।

मेराही ध्यान कर—अर्थात् अनय कहिये प्रपंचकी भावना करके रहित चित्तसों तू अर्जुन मैं कल्याणमूर्ति परमात्माकाही निरन्तर चिन्तन कर मैं मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् की उपमाने ही सर्वत्र वर्तमान हो।

मेरेविषयही प्राणोंको गतकर—अर्थात्मैंशंकरभगवानकोही अपने परम पुरुषार्थकाविषयनिर्णय करके तू अर्जुनउग्रतपोंका साधन कर अथवा श्वासश्वासमेंप्राणअपानके आधारभूतमैंपरमहंसभगवान्काहीअन्वयव्यतिरेककीरीति तू अर्जुन निशिदिन अनुसंधान कर,काहेतें हे गुडाकेश! अपनालौकिकजीवनमेरेको अर्पण किये विना तू क्रियमाण कर्मोंके पाशते छूट सके नहीं।

मां नमस्कुरु—सर्वओरतें हाथपांववाला,सर्वओरतें आंखकानवाला, सर्व ओरतेंमुखशिरवाला,अनन्तबलवाला,अनन्तपराक्रमवाला, अनन्ततेजवाला, नानावर्ण आकार तथा नामवाले अनन्त रूपधारणकरनेवाला तथाईश्वरोंकाभी ईश्वर, देवोंकाभी देव, पतियोंकाभीपति और याहीतें सत्कारकरनेयोग्य जो मैं सर्वाध्याक्ष सर्व आत्मा हूं तू अर्जुन मेरेको प्रणाम कर।

वास्तव जो मेरा स्वरूप है सो तो हे महाबाहो! निर्गुणतथा अव्यक्त होनेसे अवाच्य है, अदृश्य है, अग्राह्य है,अचिन्त्य है हां चित्र विचित्र मेरे इस अद्भुत विश्वरूपका दर्शन कर आश्चर्यमय मेरी इस अपूर्व महिमाको विचार।

यह पृथिवी तथा आकाशका अन्तर्भाव यह सर्व दिशा मुझकरकेही व्याप्त हैं कार्यकारणभाव तथा जडचैतन्य रूपते मैं ही सर्वत्र प्रकाशमान हूं ।

करता हुआ मैं कर्ता और भोगता हुआ मैं भोक्ता हूं गुणइंद्रियोंकरके युक्त फिर गुणइंद्रियोंतें अतीत हूं ।

हे भारत ! हे कुरुनन्दन ! अद्वैतपूर्ण ब्रह्म जो मैं हूं तू मेरे विषय भेदभाव मत मान ।

समबुद्धि समदर्शी हो यह सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य, यह समग्र महत्त्व, समस्त प्रभाव तू मेराही जान ।

अनेक नामोंकरके अनेक रूपोंकरके अनेक गुणोंकरके सर्वत्र तू मेरेकोही देख ।

समताकोही योग कहे हैं । द्वैत भ्रमको मूल अहंममताका परित्याग किये विना तेरे संक्षिप्त कर्मोंका कदापि अन्त होवे नहीं । निश्चय कर निश्चय कर ।

हे भारतवंशविषयश्रेष्ठ ! जो मेरेको तू उक्त प्रकारसे आश्रय करेगातोआधिव्याधिकेहेतु जन्ममरणरूप संसारचक्रकोउल्लंघन करके अवश्यमेवमेरेकोहीप्राप्तहोवेगा,याकेविषय तुमकदाचित् संशय मत करना मैं परमेश्वरतुमारेसन्मुखसत्यप्रतिज्ञाकरूंहूं।

हे शिष्य ! ऐसे अपूर्व सिद्धान्तकाआद्योपांतश्रवणकरकेविदेहानन्दकी अभिलाषाविशेषसे आतुर हुआ सो कुन्तीपुत्र अर्जुन अपने मनमें कृष्णदेवप्रति या प्रकारतें प्रार्थना करने लगा ।

हे वेदवित्,हे वेदान्तकृत् हे कल्याणमूर्ति ! अहोभाग्य उद्धारकासुखसाधनकहियेदिव्य निष्कंटकमार्गआपनेप्रकाश किया है, परन्तु त्रिगुणात्मक दृश्य प्रपंचतें अत्यन्त वैराग्यवान् पुनः

पदनिर्वाण तथा अशेष करके नैष्कर्म्यताको प्राप्त होनेकी तीव्रइच्छावाला जो मैं हूं। हे देवेश! जैसे शीघ्रही मेरेको शांति होवे तैसेही आपकरके फिर कहो। तहां।

स्वजनके मनोवांछितको तत्कालही सिद्ध करनेवाले परम दयालुसर्वान्तर्यामी श्रीभगवान् बोले–सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज। अहंत्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

सर्व धर्मकहिये सर्व धर्मोंकीचिंताको छोडकर मुझएकशरण रूपको ध्याव मैं तेरेको सर्वपापोंते मुक्त करूंगा शोच मत कर। इति पदार्थः।

अनुवाद–एक कहिये सजातिविजातिस्वगतभेदरहित तथा अप्रतिम प्रभाववाला, शरण कहिये परिपूर्ण सुख तथा-स्थान जो मैं चिदानन्दघन परमात्म देव हूं तू अर्जुन मेरे विषय आत्मसमर्पण कर।

तहां विशेष और कुछभी नहीं। हे महाबाहो! अनेक संकल्पोंको उत्पन्न करनेहारे मन, पदार्थोंके गुणदोषोंकोनिर्णयकरनेहारी बुद्धि, नानाविधि नाना हेतु नानासंबन्धोंकोधारणकरनेहारे चित्ततथा कर्तृत्वअभिमानकेआश्रयभूतअहंकारकोलौकिक वैदिकअनेककामनाओंकरकेप्रवृत्त करनेवाला जोतूआप है सो तू आपही विज्ञानमय अपने स्वरूपरूपमें परमात्मदेव विषय युक्तहो, और तिन अपनी सम्पूर्ण कामनाओंको लोकवेदके कर्तामें परमेश्वरकी इच्छापर छोडदे।

हे भारतवंशविषय श्रेष्ठ! सर्व धर्मोंके अधिष्ठान, तथा फलप्रदाता, परमधर्मरूप, मैं परमेश्वर परमात्मा साथ एकही भूतहोनेपर कोई धर्म विद्यमान रहे तो क्या है तथा विद्यमान न रहे तो

क्या है तिनके विषय शोचकरना तो निष्फलहीहै। जैसे सागर-
को प्राप्त हुई नोनकी पुतली तत्कालही द्रवीभूत होतीहै तैसेही
मेरेको प्राप्त हुआ तू अर्जुन तिस कालविषयही निर्वाणहोवेगा।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

अर्जुन बोला—अब मेरे संशय गत हुए हैं अब मेरा मोह
निवृत्त हुआ है अब मैं कृतकृत्य भया हूँ ।

हे पूर्ण ब्रह्म अनन्त!जाननेयोग्य आपको मेरा नमोनमः हो ।
हे अच्युत!हे गोविन्द ! पावनेयोग्य आपको मेरा नमोनमः हो ।
हे केशव!हे वासुदेव!भजनेयोग्य आपको मेरा नमो नमः हो ।
हेविश्वेश्वर!हेविश्वात्मा!वन्दनायोग्यआपको मेरानमोनमःहो ।

पुनः हे ब्रजनाथ ! हे मुकुन्द ! हे घनश्याम ! हे कृष्णचंद्र !
अभय वर देनेवाले अक्षयसुख तथानिर्भयपदको प्राप्तकरनेवाले
आपको सर्व ओरसे अनन्तवार मेरा नमो नमः हो ।

गुरु—हे तात ! विद्याओंमें शिरोमणे ! गोप्य पदार्थोंमें
शिरोमणी ! यह परम पावन परम दिव्य सिद्धान्त मैंने
तेरेको कहा है । हे प्रियदर्शन ! तेरा कल्याण हो ।

विनयपत्र लावनी ।

हमारे चितकी हो दूर चिन्ता तुम्हारा कहना प्रमाण निकले ।
दोअपनादर्शनओश्यामसुन्दर नहींतोअबहीये प्राण निकले ॥
दहक २ कर हृदयके अन्तरे विरह अनल क्या भडक रहीहै ।
कसक२ कर जिगरमें आशाकी फांस कैसी खड़क रही है ॥
घुमँड२कर मिलनेके कारण यह छाती क्योंकर धडकरहीहै ।
उमँड२ कर दरशकी प्यासी वो आँख कबतें फडक रही है ॥
मैं कैसे समझाऊँ मनको मोहन न सब्र आवे न जान निकले ।

दो अपनादर्शनओश्यामसुन्दर नहींतोअबहीयेप्राणनिकले ॥
यह कैसाविखराहैजीतोथांबोओकृष्णइसका संभलना दुर्लभ ।
वो क्याहीमचलाहैदिलकोदेखोओअच्युतइसकाबहानादुर्लभ ॥
जो इसमें चितवन समारहीहैओ केशवइसकानिकलनादुर्लभ ।
और उसमेंजोप्रेमकीललकहैओदीनानाथउसकाटलनादुर्लभ ॥
इधर न अपनीयहहटकोछोडे उधरनउसकी वोहबान निकले ।
दो अपना दर्शनओश्यामसुन्दरनहींतो अबहीयेप्राणनिकले ॥
ये तार चितका बंधा है भगवान्के है वोही एक ध्यान मुझको।
वो रूपबुद्धिका हो रहा है न उससे अतिरिक्त ज्ञान मुझको ॥
समान अपने बिगाने दोनों न लाभ सूझे न हान मुझको ।
ये जैसा शत्रुवो मित्र तैसा है तुझ अपमान मान मुझको ॥
वो आन तेरी बसी है मनमें ये जान जांये न आन निकले
दो अपना दर्शन ओश्यामसुन्दरनहीं तो अबहीयेप्राण निकले॥
ये कैसे जन और वो वन कहांका ये घरवो आंगनकछू न भावे ।
यह सारे रसनाके लागे फीके वसन न भूषण कछू सुहावे ॥
न डोलते वे न बैठेको कल न जगते सुख और न नींद आवे ।
न चुपके बीते न कहते आवे वियोग छिन पल हमें सतावे ॥
न योगशक्ति न पूरि भक्ति न लाज छूटे न नाम निकले ।
दो अपनादर्शन ओश्यामसुन्दर नहींतोअबही ये प्राणनिकले॥
वोह बांकी झांकी हो नित्य सन्मुख हृदयकमल जब हराहोमेरा।
यह बुद्धि तबही पवित्र होवे ये जन्म तबही सुफलहो मेरा ॥
ये चित तभी अपना शान्त होवे ये मन तभीहां विमलहोमेरा
ये प्राण अपने तभी हों अस्थिर स्वभावतबहीअचलहोमेरा॥
यह ज्ञान विज्ञान होवे अपना वह मेरा तद्रूप ध्याननिकले ।

दो अपना दर्शन ओश्यामसुन्दर नहीं तो अबहीयेप्राणनिकले॥
जो भक्तवत्सल न होवे तुमसे हो पूरी भक्तोंकी आन कैसे ।
और आपसे जो न होवे बन्धु तो भक्तोंके रहवे प्राणकैसे ॥
न होगे दर्शन तो आपका वाक होगा भगवन् प्रमाण कैसे ।
और आये जबतक न मुझकेकरुणाहोनिश्चयकरुणानिधानकैसे॥
मैं निर्भय अक्षयगतिको पाऊं तुम्हारी भक्ति प्रधान निकले ।
दो अपना दर्शन ओश्यमसुन्दर नहींतोअबहीयेप्राणनिकले ॥

॥ मुसद्दस ॥

ओ ब्रह्म निराकार परम धाममें सुखतार ।
ओ विष्णुकी प्रत्यक्ष कला धर्मकी सरकार ॥
ओ मोक्षके दरबार अहो वेषके सरदार ।
है जीवोंके कल्याण निमित्त आपका अवतार॥
शिवरूप अनाथोंकी गति कल्पतरु हो ।
और मेरे तो सर्वसही हो काहेतें गुरु हो ॥
तत्त्वज्ञ हो जडमूलते संशयको मिटा दो ।
धर्मज्ञ हो मंगल करो पापोंको जला दो ॥
भवव्याधि हरो शिष्यको अमृत पिला दो ।
योगेश हो सामर्थ्य है भावीको हटा दो ॥
वो ज्ञान अपरमित वोह अचल ध्यान तुम्हारा ।
त्रैदेवभी करते हैं बहुमान तुम्हारा ॥
निर्धनके धनीही नहिं दुखियोंकी दवा हो ।
मुमकिन नहिं नाम आपका ले और न भला हो ॥
राजा जन्तु मारा हनुमा उकदा कुशा हो ।
पावन हो परम पूज्य निवृत्तिकी ध्वजा हो ॥

वैराग्यकी मूरत हो फिर अखलाकमें कामिल।
उपराम हो तिसपरभी परउपकारके आमिल ॥
सन्तोंसे ग्रन्थोंसे समझ बूझके हारा।
और आपभी वरसोंही लगातार विचारा ॥
ना तपका भरोसा है न कुछ ज्ञानकी सारा।
ईमान है और आसरा भगवान् तुम्हारा ॥
अनुभव हो उदय दूर हो अज्ञानकी ज़ुल्मत।
येह आपकी दृष्टीमें असर बाकमें कुदरत ॥
वोह भार गुरु है के उठाना नहीं आसान।
वो धर्म कठिन है के निभाना नहीं आसान ॥
वोह मोक्षकी चिन्ता है जताना नहीं आसान।
वोह प्रेमका गलबा है छिपाना नहीं आसान ॥
राजी बरजा होके कहाभी नहीं जाता।
फिर आपके सन्मुखही रहाभी नहीं जाता ॥
इस देहके फन्देमें गिरफ्तार हूँ भगवन्।
अदृष्टका पाबन्द हूँ लाचार हूँ भगवन् ॥
ना दीन न दुनियाका हूं बेकार हूं भगवन्।
हां जीता हूं इतना तो गुनहगार हूं भगवन् ॥
तदबीर वो हारी है के चलती नहीं अपनी।
तकदीर वो बिगडी के बदलनी नहीं अपनी ॥
है हाथ कलम पोट यह कर्मोंकी पडी है।
औरपै रथके राह वो चलनेकी बडी है ॥
वो भावना कल्याणकी अत्यंत कडी है।
मायाकी मगर कान कलेजमें अडी है ॥
अपना तो न बलका है न बुद्धिका सहारा।
हां आप बनाये तो बने काज हमारा ॥

शक्ति नहीं धीरज नहीं बल क्षीण हुआ है।
जी जौकसे कर्तव्य विषे हीन हुआ है॥
तन रोगसे मन शोकसे बस दीन हुआ है।
चित हारके प्रकृतिके आधीन हुआ है॥
हर तरहसे लाचार हूं शरमाया हुआ हूं।
अब वक्त वो आया है के घबराया हुआ हूं॥
रस्ता नहीं कछू महने चहूं ओरते घेरा।
संसारसा सागर है कठिनही है निबेरा॥
गुरुदेव भला तेरे सिवा कौन है।
क्या देर लगाई हरो कष्ट सबेरा॥
देखो वो वही जाये अजी हाथ बढा दो।
इस झांझरी नैयाको मेरी पार लगा दो॥
तनमनसे न धनसे हुई सरकारकी खिदमत।
इस हस्तीपे अपनी है मुझे आप खिजालत॥
येह आपका मदका वो तुम्हारी है बदौलत।
सद्धर्ममें निष्ठा है बुरे कामसे नफरत॥
गौनन्द हूँ चरणोंसे बहुत दूर हूं भगवन्।
है सच्च तो यूंही आपका मशहूर हूं भगवन्॥
ना बाह्यही संसारके ऐश्वर्यकी इच्छा।
ना दिलहीमें है स्वर्गके भोगोंकी न मन्सा॥
और है भी तो है एक वोही मोक्षकी चिन्ता।
निर्भय हूँ सो होवेही तो सरकारकी कृपा॥
येह सिर हो मेरा सिजदेको बस आपका दरहो।
आगे वोही मंजूर है जो सदे नजर हो॥

इति श्रीनिर्भयविलास तृतीय भाग समाप्त।

क्रय्यपुस्तकें (संगीत-राग गद्य-पद्य)।

नाम.	की. रु. आ.
आनन्दगान-इसमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजीकी नित्यलीला भजन, होली, दोहा, कबित्तादिमें वर्णित है	०-६
आनन्दसागर-भिखारीसिंहकृत सुंदर भजनोंका संग्रह	०-८
आनंदसरोवर-धर्मविषयक अनेक रागरागिनियों के भजन हैं.	०-८
उत्सङ्गपत्र-(श्रीगङ्गाविष्णुमण्डनका) अर्थात् सुदामाचरित चटकीली लावनी ख्यालोंमें ...	०-१
इश्कचमन-अर्थात् स्वांग बिसमिल परीवार-का-कविवर स्व. लाला शालिग्रामजी वैश्यकृत	०-८
कजरीरागसागर-भगत भगवानदासकृत ...	०-२॥
कार्ष्णिकीर्त्तन-भक्ति, ज्ञान, वैराग्यादि विषय नाना प्रकारके रागों द्वारा वर्णन किये हैं ...	०-२॥
कृष्णकलेवा-कलेवा हास्यविलासादि रहस्यलीला	०-२
गजलसंग्रह-(९४ कवियोंकी २२९ के करीब गानेलायक गजलोंका संग्रह) शौकीनोंको अवश्य लेना चाहिये.	०-८
गायनामृत-भक्तिरसप्रेमी श्रीबाबूनंदनसिंहजीविर-चित। इसमें नाना प्रकारके भगवद्भक्तिके प्रभा-वोत्पादक ९६७ भजन हैं ...	०-१२
गुलबहार-अर्थात् अमसी व लावनी ख्याल तुर्रा	०-४
गुलचमन बेनजीर-अर्थात् हिन्दीभाषा-रसिकोंके	